शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार

एन0आई0ओ0एस0 स्कूल प्रोजेक्ट

2020-21

सहायक सामग्री

कक्षा-दसवीं

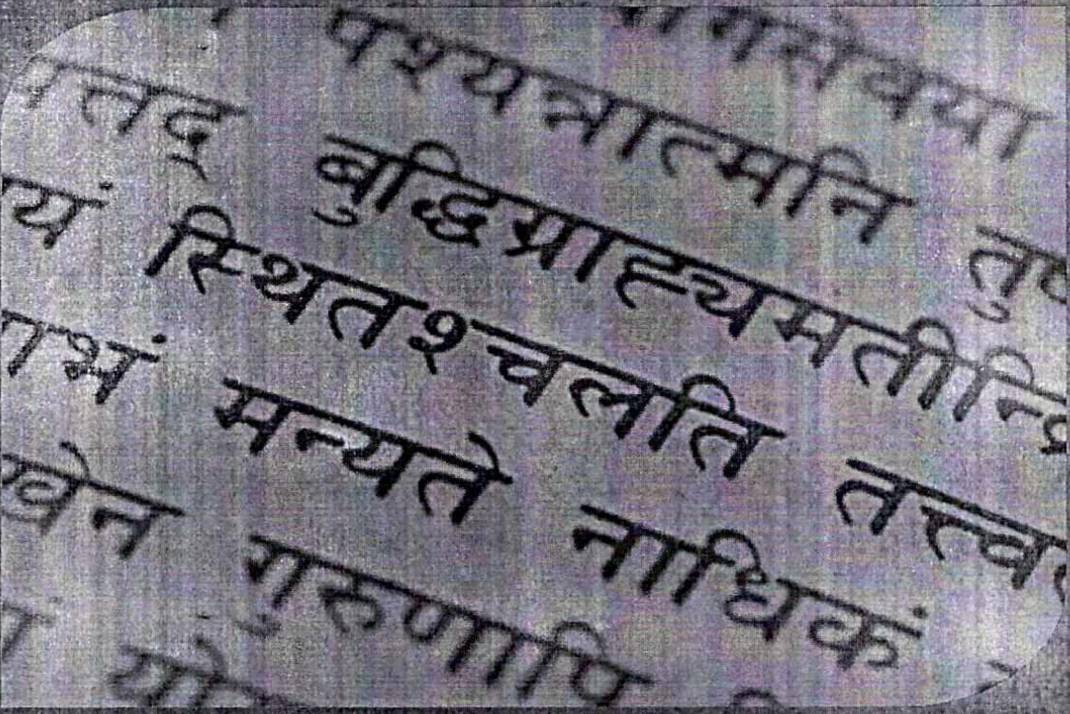

संस्कृत-209

एन0आई0ओ0एस0 बोर्ड के पाठ्यक्रम पर आधारित

NIOS SCHOOL PROJECT

Directorate of Education, GNCT of Delhi

SUPPORT MATERIAL
(2020-21)
Class : X

209- SANSKRIT

Under the Guidance of

Mr. H. Rajesh Prasad
Secretary (Education)

Mr. Udit Prakash Rai
Director (Education)

Ms. Afsan Yasmin
Addl. DE. (NIOS School Project)

Dr. Rajvir Singh
DDE (NIOS School Project)

Coordination

Mr. Angad Kumar Pandey
OSD
(NIOS School Project)

Academic Advisor

Mr. G.D. Kanaujia
OSD
(Patrachar Vidyalaya, DoE)

MANISH SISODIA
मनीष सिसोदिया

सत्यमेव जयते

DEPUTY CHIEF MINISTER
GOVT. OF NCT OF DELHI
उप मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार
DELHI SECTT, I.P. ESTATE,
दिल्ली सचिवालय, आई०पी०एस्टेट,
NEW DELHI-110002
नई दिल्ली–110002
Email. msisodia.delhi@gov.in

D.O. No.: Dy.CM/2021/140
Date: 17.03.2021

MESSAGE

In the recent years, a significant transformation has taken place in the infrastructure and quality of education in Government Schools of Delhi. A number of Historic steps have been taken by the Delhi Government to ensure that our students receive world class education. NIOS School Project has come up with Support Material for the students of Class X in various subjects. Availability of sufficient and good quality examination material, adequate practice and guidance are keys to doing well in the examinations. It is learnt that the Support Material developed by dedicated, committed and knowledgeable teachers and coordinators has summary of chapters in bullet points followed by important questions categorized marks-wise.

I am sure that the Support Material, prepared by the NIOS School Project will stand in good stead for all students and prove immensely helpful in their preparation for examinations.

My sincere compliments to all teachers and coordinators who have made valuable contributions to its development. I also convey my best wishes to all the students for success in the coming examination.

(MANISH SISODIA)

H. RAJESH PRASAD
IAS

सत्यमेव जयते

प्रधान सचिव (शिक्षा/प्रशिक्षण व तकनीकी शिक्षा/ उच्च शिक्षा)
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली सरकार
पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054
दूरभाष: 23890187 टेलीफैक्स : 23890119

Pr. Secretary (Education/TTE/ HE)
Government of National Capital Territory of Delhi
Old Secretariat, Delhi-110054
Phone : 23890187, Telefax : 23890119
E-mail : secyedu@nic.in

MESSAGE

I am happy to learn that the NIOS Team and Patrachar Vidyalaya of the Directorate of Education has prepared Support Material for students who are going to appear for Class X exam through the NIOS in the session 2020-21.

This year, more than in any other year, our students need extra support, guidance and easily comprehensible material which can be readily used for examinations.

This Support Material is the result of immense hard work, coordination and cooperation of teachers and coordinators of various schools. It is hoped that this material will be of immense help to students and teachers alike. The purpose of the Support Material is to impart ample practice to the students for preparation of exams.

This Support Material is based on the syllabus given by NIOS for the Academic Session 2020-21 and covers different level of difficulties.

I congratulate the entire team led by Sh. Rajvir Singh, DDE NIOS School Project for their sincere efforts to bring out the Support Material in such a short time.

I wish all the students for their success.

(H. Rajesh Prasad)

UDIT PRAKASH RAI, IAS
Director, Education & Sports

सत्यमेव जयते

Directorate of Education
Govt. of NCT of Delhi
Room No. 12, Civil Lines
Near Vidhan Sabha,
Delhi-110054
Ph.: 011-23890172
E-mail : diredu@nic.in

No. PS/DE/2021/56

Dated: 12/03/2021

संदेश

आधुनिक विश्व के इतिहास में शायद यह पहला अवसर है जब औपचारिक शिक्षा के केंद्र विद्यालय, महाविद्यालय इत्यादि कोरोना के चलते तनिक असहज दिखाई दे रहे हैं ; जबकि अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम जैसे NIOS या देश भर में फैले मुक्त विश्वविद्यालय गर्व के साथ अपनी जिम्मेवारी का निर्वाह निर्बाध रूप से कर रहे हैं।

मैं देख पा रहा हूँ कि आगे आने वाले समय में, शिक्षा प्राप्ति के अनौपचारिक माध्यम भी उतने ही महत्वपूर्ण होते चले जाएंगे जैसे कि अब तक स्कूल व कॉलेज रहे हैं।

अतीतमें NIOS की प्रमाणिकता को लेकर विद्यार्थियों में कुछ शंकाएं रहती थीं । गत दो वर्षों में शिक्षा निदेशालय ने भरसक प्रयास किया है कि NIOS को लेकर हमारे विद्यार्थियों के संदेह व संशय दूर हों और उससे भी बढ़कर यह प्रयास रहा है कि हमारे विद्यार्थी गली-बाज़ारों में NIOS के नाम पर चलाये जा रहे गोरख धंधों में न फँसें और वे सीधे शिक्षा निदेशालय के NIOS प्रकोष्ठ से संपर्क करें।

इसीक्रम में NIOS में नामांकित हुए अपने विद्यार्थियों की सुविधा के लिए शिक्षा निदेशालय ने एक नयी पहल की है । दसवीं कक्षा के पांच प्रमुख विषयों पर पहली बार Support Material तैयार किया गया है।

मैंने देखा है कि इसमें पहले तो पाठ को बड़ी ही सरल भाषा में संक्षेप में समझाया गया है और उसके बाद ठीक वैसे ही प्रश्नों का संग्रह तैयार कर Practice Papers तैयार किये गये हैं जैसे कि NIOS के प्रश्न पत्रों में होते हैं। मैंआशा करता हूँ कि हमारे छात्र-छात्राएं इस Support Material का भरपूर उपयोग करेंगे जिससे कि वे परीक्षाओं को और भी ज्यादा सहज भाव और आत्मविश्वास से Face कर सकें।

NIOS के उप शिक्षा निदेशक डॉ.राजवीर सिंह तथा उनकी टीम के सभी अध्यापकों की लगन व मेहनत की भी मैं भूरी भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ, जिसके फलस्वरूप यह सहायक सामग्री आज हमारे हाथों में है।

मेरी शुभकामनाएं।

उदित प्रकाश राय

OFFICE OF THE REGIONAL DIRECTOR (PV/NIOS)
DIRECTORATE OF EDUCATION
GNCT OF DELHI
FU-BLOCK, PITAMPURA, DELHI

MESSAGE

It gives me immense pleasure and sense of satisfaction to forward the support material prepared by a team of dedicated teachers and coordinators designated as Core Academic Unit Members for the benefit of the NIOS project students appearing in the Annual Exam 2021.

The purpose of providing support material is to make available ready-to-use study material, which can be relied on for success in examination - 2020-21.

The use of support material by the teachers and students will make their teaching and learning more effective and enjoyable. I hope it will be a comprehensive guide to students and teachers alike. I would like to congratulate all the Core Academic Unit Members for their tireless and valuable contribution. I wish success to all the students.

(Dr. AFSHAN YASMIN)
ADDL. DIRECTOR
(NIOS SCHOOL PROJECT)

उप–शिक्षा निदेशक
पत्राचार विद्यालय एवं
एन0आई0ओ0एस0 प्रोजेक्ट

संदेश

प्रिय विद्यार्थियो,

शैक्षणिक सत्र 2020–21 पूर्णता की ओर अग्रसर है, बोर्ड परीक्षाएं भी नज़दीक हैं। वैश्विक महामारी के चलते सत्र पर्यन्त कक्षाएं भी सुचारू रूप से नहीं चल सकीं। ऐसे कठिन समय में एन0आई0ओ0एस0 स्कूल प्रोजेक्ट के विद्यार्थियों के लिए एक ऐसी सहायक सामग्री की नितान्त आवश्यकता थी जोकि बिन्दुपरक व परीक्षोपयोगी हो। इसी को ध्यान में रखकर विषय–विशेषज्ञों के द्वारा एन0आई0ओ0एस0 के विद्यार्थियों के लिए सहायक सामग्री को तैयार किया गया है। कोर ग्रुप की सभी टीमें बधाई की पात्र हैं जिन्होनें इतने कम समय में यह सामग्री तैयार की है। शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत चलने वाले एन0आई0ओ0एस0 स्कूल प्रोजेक्ट में पहली बार यह कार्य प्रारम्भ किया गया है। इन प्रयासों को सफलता तभी मिलेगी जब आप सभी विद्यार्थी इस सत्र में अच्छे अंकों के साथ दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करेगें। आप सभी के लिए एन0आई0ओ0एस0 बोर्ड से दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद अपने विद्यालय में ही अथवा सम्बन्धित राजकीय विद्यालय में ग्यारहवीं कक्षा में प्रवेश की व्यवस्था सुनिश्चित है। इस कार्य की सफलता हेतु शिक्षा निदेशक श्री उदित प्रकाश राय, आई0ए0एस0 का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ जिनके उत्साहवर्धन एवं सक्रिय सहयोग से यह पावन कार्य सम्भव हो सका।

आप इस सहायक सामग्री को नियमित रूप से मन लगाकर पढ़ें, दिए गये प्रश्नों का अधिकाधिक अभ्यास करें, मुझे विश्वास है कि ऐसा करने से आप न सिर्फ उत्तीर्ण होंगें बल्कि अच्छे अंक भी प्राप्त कर सकेंगे।

आगामी बोर्ड परीक्षाओं के लिए शुभकामनाओं के साथ मैं आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

आपका शुभेच्छु

डा0 राजवीर सिंह
उप–शिक्षा निदेशक
(पत्राचार विद्यालय / एन0आई0ओ0एस0 प्रोजेक्ट)

Text of Article 51-A

PART IVA

FUNDAMENTAL DUTIES

51A. Fundamental duties.-It shall be the duty of every citizen of India—

(a) to abide by the Constitution and respect its ideals and institutions, the National Flag and the National Anthem;

(b) to cherish and follow the noble ideals which inspired our national struggle for freedom;

(c) to uphold and protect the sovereignty, unity and integrity of India;

(d) to defend the country and render national service when called upon to do so;

(e) to promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India transcending religious, linguistic and regional or sectional diversities; to renounce practices derogatory to the dignity of women;

(f) to value and preserve the rich heritage of our composite culture;

(g) to protect and improve the natural environment including forests, lakes, rivers and wild life, and to have compassion for living creatures;

(h) to develop the scientific temper, humanism and the spirit of inquiry and reform;

(I) to safeguard public property and to abjure violence;

(j) to strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity so that the nation constantly rises to higher levels of endeavour and achievement;

(k) who is a parent of guardian to provide opportunities for education to his child or, as the case may be, ward between the age of six and fourteen years.

मौलिक कर्तव्य की संख्या 11 है, जो इस प्रकार हैं :

1. प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्र गान का आदर करें।
2. स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखें और उनका पालन करें।
3. भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करें और उसे अक्षुण्ण रखें।
4. देश की रक्षा करें।
5. भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करें।
6. हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझें और उसका निर्माण करें।
7. प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा और उसका संवर्धन करें।
8. वैज्ञानिक दृष्टिकोण और ज्ञानार्जन की भावना का विकास करें।
9. सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखें।
10. व्यक्तिगत एवं सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करें।
11. माता–पिता या संरक्षक द्वारा 6 से 14 वर्ष के बच्चों हेतु प्राथमिक शिक्षा प्रदान करना (86वां संशोधन)।

THE CONSTITUTION OF INDIA

PREAMBLE

WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC and to secure to all its citizens:

JUSTICE, social, economic and political;

LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship;

EQUALITY of status and of opportunity; and to promote among them all

FRATERNITY assuring the dignity of the individual and the unity and integrity of the Nation;

WE DO HEREBY GIVE TO OURSELVES THIS CONSTITUTION.

भारत का संविधान

उद्देशिका।

हम, भारत के लोग, भारत को एक [सम्पूर्ण प्रभुत्व - सम्पन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की स्वतंत्रता

प्रतिष्ठा और अवसर की समता

प्राप्त करने के लिए,

तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और [राष्ट्र की एकता और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढाने के लिए

हम दृढ़संकल्प होकर इस संविधान को आत्मार्पित करते है।

DIRECTORATE OF EDUCATION
Govt. of NCT of Delhi

SUPPORT MATERIAL
(2020-21)
Class : X

209
SANSKRIT

NOT FOR SALE

Prepared By: NIOS SCHOOL PROJECT

अध्यापन–निर्देश

प्रस्तुत सहायक सामग्री को शिक्षक पाठ्यपुस्तक के विकल्प के रूप में न लें । इस सहायक सामग्री में लगभग 70–80: पाठ्यक्रम शामिल है: निर्धरित पाठ्य सामग्री के पूर्ण अध्यापन के बाद ही प्रस्तुत सहायक सामग्री का प्रयोग छात्रों को विषयबोध एवं पुनरावृत्ति कार्य कराने के लिए करें। इस सहायक सामग्री में सम्पूर्ण अध्यायों के साथ–साथ पाँच प्रश्न पत्रों का भी समावेश किया गया है।

- ❖ पाठ पढ़ाने के पश्चात् पाठ्यपुस्तक में दिए गए प्रश्नों के अतिरिक्त सहायक सामग्री के अंतर्गत दिए गए बोधात्मक प्रश्नों का अभ्यास अवश्य कराएँ।
- ❖ छात्रों को बताएँ कि एक प्रश्न के खण्डों – उपखण्डों को एक ही स्थान पर लिखें तथा यथासंभव प्रश्नों को प्रश्नपत्र के क्रमानुसार हल करने का प्रयास करें।
- ❖ इस सहायक पुस्तक मे सभी अध्याय, अध्यायो के अति लघु प्रश्न, अध्यायों मे आये प्रमुख पात्रो के चरित्र–चित्रण, सभी अध्यायो के सार, अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न एवम् व्याकरण के सभी बिन्दु पर विशेष ध्यान दिया गया है।
- ❖ रचना कौशल को भी बहुत ही आसान तरीके से समझाने का प्रयास किया गया है।
- ❖ कवि का जीवन परिचय तीन उपशीषर्कों के अंतगर्त लिखा जाए–
  1. जीवन परिचय
  2. रचनाएँ
  3. काव्यगत विशेषताएँ ।
- ❖ प्रश्नों के उत्तर अंकानुसार व शब्द–सीमा के अन्तगर्त लिखने का अभ्यास कराएँ ।
- ❖ चरित्र –चित्रण से संबधित प्रश्नों के अभ्यास कार्य में यह अवश्य बताएँ कि चरित्र–चित्रण को उपशीर्षकों में ही लिखना चाहिए ।
- ❖ छात्रों को बताया जाए कि पत्र–लेखन में कहीं पर भी वे अपने नाम, पते या विद्यालय के वास्तिवक नाम का उल्लेख न करें ।
- ❖ प्रश्न–पत्र में दी गई स्थिति एवं घटना के आधार पर दृश्य लेखन का प्रश्न होगा ।
- ❖ कुछ घटनाओं / स्थितियों के आधार पर दृश्य लेखन का अभ्यास कराएँ।
- ❖ सबसे महत्वपूर्ण कार्य शिक्षक के लिए यह है कि वह छात्र को प्रश्नपत्र हल करने का सही तरीका अवश्य समझाएँ।
- ❖ उन प्रश्नों को पहले हल करें, जो अच्छी तरह आते हों।
- ❖ प्रत्येक प्रश्न को अंकों के अनुसार समय दें।
- ❖ समय प्रबंधन और स्वच्छ लेखन पर ध्यान दें ।
- ❖ दो प्रश्नों के बीच उचित स्थान छोड़ें ।
- ❖ उत्तर लिखते समय पृष्ठ के दोनों तरफ हाशिया छोड़ें।

प्रिय: छात्राः

भवताम् हस्तेषु माध्यमिकवर्गस्य सहायकपुस्तकं प्रस्तुवन् हर्षम् अनुभवामि । पाठ्यक्रमोऽयं भवतां पृष्ठभूमिं विलोक्यैव निर्मितः। अत्र अस्माकं प्रयासः अस्ति यत् सहायकपुस्तकं भवतां कृते उपयोगि भवेत्। भवन्त: मनोयोगेन पुस्तक पठन्तु, शब्दार्थान्, (सारम्, चरित्रचित्रणम्, पत्रम् ,चित्रवर्णम्) व्याख्याः, व्याकरणबिन्दून, प्रश्नोत्तराणि, ज्ञानवर्धनाय अवश्यमेव पठन्तु। यदि काचित् कठिनता अनुभूयते चेत् संस्थानस्य व्यक्तिगतसंपर्ककार्यक्रमे भागं गृहीत्वा समस्यां दूरीकर्तु शक्नुवन्ति। अयं सहायकपुस्तकं भवतामेव भवतां कृते च वर्तते। वयम् आशास्मह, इदं सहायकपुस्तक पाठ्यक्रमो वा भवताम् रुचिं वर्धयिष्यिति तथापि वयं भवतां प्रतिक्रियां प्रतीक्षामहे।

भवतां जीवने सदैव सर्वे मनोरथाः परिपूर्णाः भवन्तु इति अभिलषन्तों वयं शैक्षिकवर्षाय शुभकामनाः दद्मः।

धन्यवादाः

भवदीयः
एन0आई0ओ0एस0 सहायक पुस्तक समूह

LIST OF GROUP LEADER, SUBJECT EXPERTS, DATA ENTRY OPERATOR & OTHER STAFF FOR PREPARATION OF SUPPORT MATERIAL

CLASS-X
SUBJECT: 209-SANSKRIT

GROUP LEADER			
S.No.	**Name**	**Designation**	**NIOS Study Centre/School**
1.	Bhoor Singh 2020012	Coordinator	GBSSS, Jhadoda Kalan, Najafgarh 1822065
2.	Dr. Atul Kuamr 20020044	Vice Principal/HOS	SV, Kakrola 1618009

SUBJECT EXPERTS			
S.No.	**Name**	**Designation**	**NIOS Study Centre/School**
1.	Sailander Kumar 2017046253	TGT Sanskrit (Guest Teacher)	GBSSS, Prashant Vihar 1413016
2.	Nivedita Divedi 2014256567	TGT Sanskrit (Guest Teacher)	VSKV, Seemapuri 1106021
3.	Usha Gupta 2017142793	TGT Sanskrit (Guest Teacher)	GGSSS, MB Road, Pushp Vihar 1923055
4.	Akshma 2017027319	TGT Sanskrit (Guest Teacher)	GSKV, Vikaspuri 1618062
5.	Surya Kant Mahiwal 2017001671	TGT Sanskrit (Guest Teacher)	GGSSS, Janta Flats, Nand Nagari 1106115

DATA ENTRY OPERATOR			
S.No.	**Name**	**Designation**	**School/Branch**
1.	Sumit 20140498	Data Entry Operator	GBSSS, No-2, Adarsh Nagar 1309125

LOGISTICS & TECHNICAL SUPPORT			
S.No.	**Name**	**Designation**	**School/Branch**
1.	Bhanu Pratap Awasthi 20112093	TGT English	DTE- Patrachar Vidyalaya 5000005

संस्कृतपाठ्यक्रम :

1. औचित्यम्

संस्कृत भाषा विश्वस्य प्राचीनतमा भाषा अतएव इयम् अति विशिष्टा अस्ति । ज्ञानविज्ञानस्य क्षेत्रेषु अस्याः भाषायाम् अनेको ग्रंथाः संति ये कस्यापि भाषायां न लभ्यन्ते । अस्याः भाषायां भारतवर्षस्य आधुनिकासु भाषासु साहित्येषु च प्रत्यक्ष अथवा तु अप्रत्यक्षेण विशिष्टः प्रभावनेऽस्ति । अतएव इमां ज्ञात्वा वयम् अन्याः भाषाः अपि ज्ञातु शक्नुमः। एवं च अस्याः अध्ययनेन वयम् अस्माकं देशस्य प्राचीनतमां संस्कृतिम् अपि ज्ञातुम् शक्नुमः। एष पाठ्यक्रमः संप्रेषण उपागम आधारित पाठ्यक्रमः यथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्याम् कथ्यते यत् राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयने अयम् पाठ्यक्रमः प्रभाविनी भवितुम् शक्नोति। एंव च छात्रेषु वसुधैव कुटुम्बकं भावनायाः विकासो भविष्यति अनेन पाठ्यक्रमेण ।

अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययने छात्राः -

1. वर्णानाम् उच्चारण स्थानं ज्ञातुं शक्नुवन्तिं ।
2. संज्ञायाः क्रियापदानां सामञ्जस्यम् अवगच्छेयुः।
3. शब्दनिर्माणे स्वर व्यंजनानां क्रमं जानीयुः।
4. साधारणतः पंचशत शब्दानाम् अर्थ ज्ञानम् ।
5. वर्णव्यत्ययेन अक्षराणां स्थानपरिवर्तने जायमानग् अर्थभेदं ज्ञातुं शक्नुवन्तिं ।
6. स्मृतेः आधारे दशमथवा द्वादश श्लोकानां उच्चारणम् जानाति।
7. संस्कृतभाषायां लघुत्वाक्यानां पठनम् ।
8. संस्कृतभाषया प्रदत्तं सामान्यनिर्देशं ज्ञात्वा तम अनुसरणम्।

उद्देश्यानि

अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनेन विद्यार्थिनः अधोलिखित कौशलेषु निपुण : भवन्ति ।

श्रवणम्

क) आदेशात्मकवाक्यानि श्रुत्वा तदनुसारं व्यवहरिष्यति ।
ख) ह्रस्वदीर्धस्वरान् श्रुत्वा तेषां अर्थभेदं करिष्यति। (यथा कविः= एकः कविः,कवी = द्वैकवी)
ग) हलन्तस्वरांत पदानि श्रुत्वा अर्थभेदकरणे समर्थ भविष्यति। (यथा उपन्यास, तरूच्छाया)
ध) संस्कृत भाषायाः प्रश्नोत्तराणि (यथा तव नाम किंम ? उत्तर = मम नाम रमेशः)
ड) विसर्गयुक्तानां विसर्गरहितानां च पदानि सम्यक् उच्चारणम् । (यथा नदी नदीः लता लताः)
च) गेयपदानि सस्वरवाचनम् ।

लेखनम्

क) पठितपदानां वाक्यानां च श्रुत्वा शुद्धवर्तन्यां लेखितुं शक्नुवन्तिं।
ख) वाक्येषु प्रातिपदिकानां सविभक्तिक प्रयोगः ।
ग) अल्पविराम पूर्ण विराम प्रभृति चिह्नाः प्रयोगे कौशलम् ।
घ) सरल संस्कृते कथायाः सारलेखनम् ।
ड) कमपि परिचित अथवा पठित विषये लघुतरं निबंध लेखनम् ।

च) प्रदत्तगद्यस्य पद्यस्य च भावानुसारं शीर्षक प्रदानम् ।
छ) कृत-तद्धितप्रव्ययानां सहायय्येन् वाक्यस्य निर्माणम् ।
ज) शब्दसमूहस्य, चित्रस्य वा प्रदत्त संकेतम् आश्रित्य कथाविस्तारम् ।
झ) श्रवण कृत्वा गद्य - पद्य लेखनम् ।
भ) अभिनंदन - निमंत्रण-वर्धापनपत्राणां निर्माण, प्राचार्य प्रति च पत्र लेखनम् ।

वाचनम् (भाषणम्)

क) स्वराणां मात्राणां व्यंजनानां संयुक्ताक्षराणां च सम्यक् उच्चारणम् ।
ख) पठित सामग्रयां सरल प्रश्नानां च संस्कृतभाषायामुत्तराणि ।
ग) स्वमतानाम् प्रकटीकरणे उचित शब्दानाम् बलाधात् प्रयोगम् ।
घ) गद्य -पद्य - नाट्यादिपाठ्यवस्तु पठित्वा सम्यक् वाचनम् ।
ङ) पद्यानाम् सस्वर मौखिक पाठम् ।
च) भावानुरूपमुच्चारण करणे आरोहस्य अवरोहस्य ज्ञानम् ।
छ) कस्यापि घटनायाः, स्थानस्य, वस्तोः वा संस्कृतभाषायाम् अष्टेषु वा दशेषु लघुवाक्येषु वर्णनम् ।

पठनम्

क) गद्यांशानाम पद्यांशानाम च स्पष्ट पठनम् ।
ख) संस्कृत वाक्यानाम् प्रवाहेण पठनम् ।
ग) पाठ्यसामग्रयाम् प्रयुक्तछंदासां लयेन् सस्वर पाठनम् ।
घ) संकलित पाठ्यविषये विविधानि प्रसंगानि संदर्भानि च अभिज्ञानम्सामर्थ्यम् ।
ङ) पाठानां प्रयुक्तव्याकरणविन्दवः ज्ञ ानम् ।
च) पाठे गद्यपद्ययोः प्रयुक्त भावानाम् सप्रसंग व्याख्या ज्ञानम् ।
छ) अपठितं गद्यांशं/पद्यांशं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि दातुं सामर्थ्यम् ।

अध्ययन योजनाम्

भाषाया पाठ्यक्रमम् अधोलिखिता सन्ति ।

1 श्रवणं वाचनं च दक्षतायै विद्यार्थीभ्यः द्वौ कैसट इति आख्यातः श्रव्य यन्त्रयोः सृजतवन्तौ । अपि च एका अभ्यास पुस्तिका अपि प्रदत्तवती।
2 अन्या भाषासु कौशलं विकसितुं पाठ्यसामग्रयां काचित् अभ्यास कार्यं प्रदत्तवती ।
3 पाठ्यसामग्रयां व्याकरणं पाठैः सह सम्मिलित्वा पाठित्वान् ।
4 अध्ययन केन्द्रानाम् अस्य विषयस्य त्रिंशी कक्षानाम् आयोजनं भविष्यति तत्र विद्याथी' आत्मानं विषय सम्बद्धा समस्यानां हलाः आत्मानं शिक्षकं पृच्छतुं शक्नोति, अपि च प्रत्येकं विद्यार्थी त्रीणिमूल्यांकनपत्राणि दत्तवान् येः अनिवार्याः सन्ति। प्रति-मूल्यांकन पत्रस्य अंकाः न निर्धारिताः।

परीक्षा योजनाः

परीक्षायाः पूर्व शिक्षार्थिनः एकं वर्ष पर्यन्तम् अध्ययनम् अनिवार्य अस्ति। शिक्षार्थी पंचसु वर्षासु नवसंख्या पर्यन्तं परीक्षां दातुं शक्नोति, इदं पाठ्यक्रमं च पूर्णं कर्तुं शक्नोति ।

1 वाचनं श्रवणं च कौशलयोः मूल्यांकनं न भविष्यति ।

2 विषयस्य परीक्षाया: अधिकतमम् शतानि अंकानि भविष्यति । परीक्षाया: अवधि: त्रिधष्टापर्यन्त निर्धारित: ।

अंकम् वितरणम्

एककानि		अन्तिम परीक्षा अड् का:
गद्यम्		
ज्ञानम्		8
अवबोध:		10
अनुप्रयोग:		10
पद्यम्		
ज्ञानम्		8
अवबोध:		10
अनुप्रयोग:		10
व्याकरणम्		
अनुप्रयोग:	शब्द/धातु रूपाणि	5
	सन्धि/समासा:	5
	कारकाणि	5
	स्त्रो प्रत्यया:	5
	कृत/वद्धित प्रत्यया:	5
	योग :	**24**
	संवाद	5
रचना	निबन्ध:	5
	पत्रम.	5
	सार:	5
	योग:	**20**
	महायोग:	**100**

व्याकरणम्

संधिः

(क) स्वर - यण, गुण, वृद्धिः दीर्धादि ।

(ख) व्यंजन - जश्त्व, चर्त्व , श्चुत्व, ष्टुत्व अनुस्वारः ।

(ग) विसर्ग - सत्व, उत्व, रत्व, लोप (विसर्ग/ रेफ)

शब्द रूप रचना

स्वरांत - बालक, फल, लता, मुनि, पति, मति, नदी, साधु, मधु, पितृ, मातृ, अक्षि, गो ।

व्यंजनांत - राजन्, विद्वस्, चंद्रमस्, गच्छत्, मनस्, गुणिन्, पयस्, आत्मन्, धनवत् (मतुप् प्रत्ययांत)

सर्वनामानि - सर्व, यत्, तत्, किम्, इदम्, (सर्वेषु लिङ्गेषु) अस्मद्, युष्मद्, अदस् ।

पूरणार्थक - प्रथम, द्वितीयम् ।

संख्यावाची शब्दाः = 1-10 (एकतः दशंपर्यन्तम्)

धातुरूप (क्रियापदम्) रचना

भ्वादि - भू, पठ्, पिब्, गम्, (गच्छ), दृश् (पश्य), दा, नी, भज्, लभ ।

अदादि - अस्, ब्रू, हन् ।

जुहोत्यादि - दा, धा ।

दिवादि - नृत्, नश्, त्रस्, विद् ।

स्वादि - शक्, आप्

तुदादि - इष्, मुंच, प्रच्छ, विश्

तनादि - कृ

क्रयादि - क्री, ग्रह्

चुरादि - चुर्, भक्ष्, कथ्, गण् ।

प्रत्ययः

स्त्री प्रत्यय - आ, ई, उ, ति

कृत् - क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, शतृ, शानच्, क्तः, क्तवतु, तव्यव, अनीचर, तृच् ।

तद्धित् - मतुप्, तरप्, तमप्, ठक् (इक) इन्, ईयस्, इष्ठ, त्व, तल् ।

कारकाणि उपपद विभक्तयः च

कारक - समस्तकारकाणि ।

उपपद विभक्तयः

1 द्वितीया विभक्ति संपूर्ण ।

2 तृतीया - सह, साकं, सार्धम्, अलम्

3 चतुर्थी - नम स्वस्ति, स्वाहा, कुप्, रूच्, ईर्ष्य ।

4 पंचमी - बहिः, ऋते ।

5 षष्ठी - तुलनात्मकम् ।

समासाः - अव्ययीभावः, तत्पुरूषः, कर्मधारयः, द्विगुः, द्वन्द्वः, बहुव्रीहिः ।

विषय-सूची

1-	सुभाषितानि	पद्यम्	1
2-	प्रेरणा	कथा	6
3-	त्याज्यं न धैर्यम्	कथा	12
4-	कस्मात् किं शिक्षेत	पद्यम्	17
5-	प्राणस्य श्रेष्ठत्वम्	कथा	21
6-	यद्भविष्यो विनश्यति	कथा	25
7-	अयोध्यां प्रत्यागमनम्	पद्यम्	28
8-	विरहकातरं तपोवनम्	नाटकम्	32
9-	भारतीयविज्ञानम्	गद्यम्	35
10-	प्रहेलिका	पद्यम्	38
11-	रचनाकौशलम्	रचना	42
12-	यक्ष-युधिष्ठिर-संवाद	पद्यम्	45
13-	करुणापरा हि साधवः	कथा	50
14-	शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्	पद्यम्	54
15-	ईश:क्व अस्ति	पद्यम्	59
16-	गीतामृतम्	पद्यम्	63
17-	स्वस्तिपन्थामनुचरेम	पद्यम्	68
18-	कर्तव्यनिष्ठा	कथा	73
19-	पुत्रोहं पृथिव्याः	पद्यम्	77
20-	सत्याग्रहाश्रमः	पद्यम्	81
21-	तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते	नाटकम्	85
22-	पत्रलेखनम्	रचना	89

अनुप्रयुक्त - व्याकरणम्

1-	उच्चारण स्थानानि	93
2-	संख्यावाची	97
3-	संधि :	98
4-	समासः	106
5-	उपसर्गाः	110
6-	प्रत्ययाः	113
7-	अव्ययाः	119
8-	उपपद - विभक्ति	121
9-	शब्दरूप प्रकरणम्	124
10-	धातुरूप प्रकरणम्	132

रचनात्मक - कार्यम्

1-	अपठित - अवबोधनम्	140
2-	पत्र .लेखनम्	151
3-	चित्र वर्णनम्	157
4-	अनुच्छेद - लेखनम	161
	आदर्श प्रश्नपत्रम् -1	i
	आदर्श प्रश्नपत्रम् -2	x
	आदर्श प्रश्नपत्रम् -3	xix
	आदर्श प्रश्नपत्रम् -4	xxviii
	आदर्श प्रश्नपत्रम् -5	xxxvii

पाठ-1

सुभाषितानि

' सुभाषित ' शब्द का अर्थ है ' सुन्दर वचन ' । श्रेष्ठ रचनाकारों के द्वारा कहे गये ये सुन्दर वचन समाज के लिए कल्याणकारी होते हैं । प्रस्तुत पाठ में महाभारत , मनुस्मृति जैसे ग्रन्थों से ऐसे ही सुभाषित रत्नों का सङ्कलन किया गया है । इन पद्यों में विशेष रूप से अपने से बड़ों के प्रति सम्मान की भावना , गुरु के प्रति श्रद्धाभाव , चरित्र की रक्षा , धर्म के लक्षण , शुचिता व सत्य के महत्त्व का निदर्शन कराया गया है । वस्तुतः ये सुभाषित पद्य मानवीय जीवन मूल्यों की अभिवृद्धि के लिए प्रेरणा - स्रोत हैं । हम सभी इन पद्यों में वर्णित नैतिक गुणों को जीवन में धारण कर अधिक व्यवहार कुशल व चरित्रवान् बन सकते हैं एवं अपने वर्तमान जीवन को सार्थक बना सकते हैं ।

उद्देश्यानि

इमं पाठं पठित्वा भवान् / भवती

श्लोकान् सस्वरं पठिष्यति |

धर्मस्य लक्षणं ज्ञात्वा लेखिष्यति |

सुभाषितानि विज्ञाय स्मरिष्यति |

सन्धियुक्तपदानां सन्धिच्छेदं करिष्यति |

हलन्तपुंल्लिङ्गपदानां वाक्ये प्रयोगं करिष्यति |

तत्पुरुषद्वन्द्वसमासयोः प्रयोगं करिष्यति ।

पद्यानाम् अन्वयं भावार्थम् च लेखिष्यति ।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. उपयुक्तम् उत्तरं चिनुत|

(i) गुरुगतां विद्यां कः अधिगच्छति?

(क) ब्रह्मचारी

(ख) शुश्रूषुः

(ग) परिश्रमी

(घ) मेधावी

उत्तर: ख

(ii) कुलं केन रक्ष्यते?

(क) सत्येन

(ख) मृजया

(ग) योगेन

(घ) वृत्तेन

उत्तर: घ

(iii) वृत्ततः हतः कीदृशः भवति?

(क) अमृतः

(ख) हतः

(ग) क्षीणः

(घ) अक्षीणः

उत्तर: ख

(iv)एतत् धर्मस्य लक्षणं नास्ति

(क) धृतिः

(ख) मनः

(ग) धीः

(घ) शौचम्

उत्तर: ख

(v) "चत्वारि तस्य ...."|

(क) क्षीयन्ते

(ख) दीयन्ते

(ग) प्राप्यन्ते

(घ) वर्धन्ते

उत्तर: घ

(vi)एतत् शौचम् पञ्चशौचेषु न परिगण्यते?

(क) मनःशौचम्

(ख) वस्त्रशौच

(ग) कुलशौचम्

(घ) वाक्शौचम्

उतर: ख

2.प्रश्नानां संस्कृतेन उत्तराणि लिखत।

(क) धर्मस्य दश लक्षणानि लिखत|

उतर: धृतिः, क्षमा, दमः, अस्तेयम्, शौचम्, इन्द्रियनिग्रहः, धीः, विद्या, सत्यम्, अक्रोध: च इति दशकं धर्मलक्षणम्।।

(ख) अभिवादनशीलस्य कानि चत्वारि वर्धन्ते?

उत्तर: आयुः, विद्या, यशः, बलं च

(ग) नरः कथं वार्यधिगच्छति?

उत्तर: खनित्रेण खनन्

(घ) गुरुगतां विद्यां क: अधिगच्छति

उत्तर: शुश्रूषुः

(ङ) कस्मात् क्षीणः अक्षीण: भवति ?

उत्तर: वित्तात्

(च) विद्या केन रक्ष्यते?

उत्तर: योगे

3.संस्कृतेन उत्तरत ॥

(क) रूपं कथं रक्ष्यते?

उत्तर: रूपं मृजया रक्ष्यते|

(ख) सत्ये सदा क: आश्रितः भवति?

उत्तर: सत्ये सदा धर्म: आश्रितः भवति |

(ग) शौचं कतिविधं स्मृतम्?

उत्तर: शौचं पंचविधं स्मृतम् |

(घ) कस्मात् परं पदं किमपि नास्ति?

उत्तर: सत्यात् परं पदं किमपि नास्ति |

4.अधोलिखितपदानां विपरीतार्थकपदानि लिखत

(i) अक्रोध: - क्रोध:

(ii) अस्तेयम् - स्तेयम्

(iii) शौचम् - अशौचम्

(iv) विद्या - अविद्या

(v) सत्यम् - असत्यम्

5.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रशनान् उत्तरत -

यथा खनन् खनित्रेण नरो वार्यधिगच्छति।

तथा गुरुगतां विद्यां शुश्रुषुरधिगच्छति | इत्यत्र

(i) नरः खनित्रेण खनन् किमधिगच्छति?

(ii) 'विद्याम्' इति विशेष्यस्य विशेषणं किम् ?

उत्तर: (i) नरः खनित्रेण खनन् वार्यधिगच्छति।

(ii) गुरुगतां

6.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रशनान् उत्तरत -

मृजया रक्ष्यते रूपं, कुल वृत्तेन रक्ष्यते ।

इत्यनुसारं रूपस्य कुलस्य च रक्षा कथं भविता?

उत्तर: मृजया रूपं रक्ष्यते , कुल वृत्तेन रक्ष्यते ।

7.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रशनान् उत्तरत -

सत्यमेवेश्वरो लोके सत्ये धर्मः सदाश्रितः ।

सत्यमूलानि सर्वाणि सत्यान्नास्ति परं पदम् ||

(i) धर्म: सदा कुत्र आश्रित: ?

(ii) सत्यात् परं किं नास्ति?

उत्तर: (i) धर्म: सदा सत्ये आश्रित: |

(ii) सत्यात् परं पदम् नास्ति |

8.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रशनान् उत्तरत –

वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमेति च याति च ।

अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः ॥

(i) यत्नेन किं संरक्षेत् ?

(ii) कस्मात् क्षीणः अक्षीणः भवति ?

उत्तर: (i) यत्नेन वृत्तं संरक्षेत् |

(ii) वितात् क्षीणः अक्षीणः भवति |

9.निम्नलिखित पद्यस्य अन्वये रिक्तस्थानपुर्तिं कुरुत-

अन्यदीये तृणे रत्ने काञ्चने मौक्तिकेऽपि च।

मनसा विनिवृत्तिर्था तदस्तेयं विदुर्बुधाः॥

अन्वय:

अन्यदीये तृणे रत्ने, _1__, मौक्तिके चापि या _2__ विनिवृत्तिः बुधाः तत् _3_ विदुः।

उत्तर: 1) काञ्चने 2) मनसा 3) अस्तेयम्

10.निम्नलिखित पद्यस्य अन्वये रिक्तस्थानपुर्तिं कुरुत-

सत्यमेवेश्वरो लोके सत्ये धर्मः सदाश्रितः।

सत्यमूलानि सर्वाणि सत्यान्नास्ति परं पदम् ॥

अन्वय:

लोके सत्यमेव ईश्वरः, __1__ सदा सत्ये आश्रितः, __2___ सत्यमूलानि, सत्यात् __3__ पदम्. नास्ति।

उत्तर: 1) धर्मः 2) सर्वाणि 3) परं

11.निम्नलिखित पद्यस्य अन्वये रिक्तस्थानपुर्तिं कुरुत-

मन:शौचं कर्मशौचं कुलशौचं च भारत ।

शरीरशाचं, वाक्छौचं शौचं पञ्चविधं स्मृतम्।।

अन्वय:

भारत! मन:शौचम्, __1__, कुलशौचम् शरीरशौचम्, __2__ च (इति) __3__ शौचम् स्मृतम्।

उत्तर: 1) कुलशौचं 2) वाक्शौचं 3) पञ्चविधं

12.निम्नलिखित पद्यस्य अन्वये रिक्तस्थानपुर्तिं कुरुत-

सत्येन रक्ष्यते धर्मो विद्या योगेन रक्ष्यते।

मृजया रक्ष्यते रूपं कुलं वृतेन रक्ष्यते।

अन्वय:

धर्मः सत्येन __1__, विद्या योगेन रक्ष्यते, _2__ मृजया रक्ष्यते, कुलम् __3__ रक्ष्यते।

उत्तर: 1) रक्ष्यते 2) रूपं 3) वृतेन

13. 'क' स्तम्भस्य धर्मलक्षणानि 'ख' स्तम्भे वत्तैः अर्थैः मैलयत-

क	ख
(i) धी:	(क) चौर्यस्य अभावः
(ii) अक्रोध:	(ख) मनसः वशीकरणम्
(iii)अस्तेयम्	(ग) सहिष्णुता
(iv) दमः	(घ) बुद्धिः
(v) क्षमा	(ङ) क्रोधस्य

उत्तर: (i) घ (ii) इ (iii) क (iv) ख (v) ग

14.उपयुक्तैः कोष्ठगतपदैः रिक्तस्थानं पूरयत ।

(क) चत्वारि ______वर्धन्ते। (कस्य/तस्य)

उत्तर: तस्य

(ख) गुरुगतां______ शुश्रुषुरधिगच्छति। (विद्यां/अविद्यां)

उत्तर: विद्यां

(ग) खनित्रेण खनन्_______ अधिगच्छति। (वारि/अग्निम्)

उत्तर: वारि

(घ) वृतं______ संरक्षेत्। (वित्तेन/यत्नेन)

उत्तर: यत्नेन

15.शब्दार्था:

(i) शौचम् – पवित्रता

(ii) अस्तेयम् – चोरी ना करना

(iii) धृतिः – धैर्य

(iv) नित्यं – सदा

(v) शुश्रूषु: - सेवा करने की इच्छा वाला

16.सत्ये धर्म: सदाश्रित: रेखांकितपदे क: विशेष्यं?

उत्तर: सदाश्रित:

योग्यताविस्तारः

(क) ग्रंथपरिचयः इस पाठ के श्लोक ' मनुस्मृति ' व ' महाभारत ' से लिए गये हैं ।

(i) मनुस्मृतिः- इसके रचयिता मनु हैं । इसमें राजा के लोककल्याणकारी कर्त्तव्यों तथा तत्कालीन सामाजिक नियमों की स्पष्ट व्याख्या की गई है । मनुस्मृति में कुल बारह अध्याय हैं और 2685 श्लोक हैं । प्रस्तुत पाठ में कुछ श्लोक मनुस्मृति से लिये गये हैं।

(ii) महाभारत : - महाभारत महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यास की रचना है । अनुष्टुप् छंद में लिखे गए एक लाख श्लोकों का यह महाकाव्य है । यह एक विशाल विश्वकोष है , जिसमें प्राचीन भारत के ऐतिहासिक , धार्मिक , नैतिक और दार्शनिक आदर्शों की अमूल्य निधि संचित है । इसके 18 पर्व (भाग) हैं , जिनमें उपदेश की दृष्टि से वनपर्व , शान्तिपर्व और अनुशासन पर्व प्रमुख हैं । महाभारत केवल कौरवों और पाण्डवों के जीवन और युद्ध की कहानी मात्र नहीं हैं । इसकी मूलकथा के चारों ओर अनेक आख्यानों का संग्रह है । स्वर्गारोहण पर्व में महर्षि व्यास की यह उक्ति है कि धर्म , अर्थ , काम और मोक्ष के विषय में जो कुछ महाभारत में कहा गया है , अन्यत्र भी है , पर जो इसमें नहीं है , वह कहीं भी नहीं है ।

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ । यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित् ।।

पाठ-2

प्रेरणा

एक छोटी सी घटना किस प्रकार मानव को प्रेरणा प्रदान करती है , इसका सजीव उदाहरण है प्रस्तुत कथा ' प्रेरणा ' । इस कथा में बंगप्रदेश के एक श्रेष्ठ विद्वान् बोपदेव के बाल्यकाल की एक घटना का वर्णन है । श्री बोपदेव अपने शिक्षाकाल में मन्दबुद्धि छात्र थे । एक दिन कुए के पास की चट्टान पर प्रतिदिन घड़ा रखने के कारण बने गड्ढे को देखकर उनके मन में विचार आया कि यदि कठोर पत्थर पर गड्ढा बन सकता है , तो मैं क्यों परिश्रम एवं अभ्यास के द्वारा अपने मस्तिष्क को सबल नहीं बना सकता । इसके अनन्तर उन्होंने इस विचार को कार्यरूप में परिणत कर दिखाया और श्रेष्ठ विद्वान् के रूप में ख्याति अर्जित की

उद्देश्यानि

पाठं पठित्वा भवान् / भवती

कथागतघटनाः क्रमेण लेखिष्यति |

पाठगतानां पदानां समानार्थकानि पदानि लेखिष्यति |

पाठसम्बद्धप्रश्नानां संस्कृतेन उत्तरं प्रदास्यति |

पाठस्य सारं स्वशब्देषु व्यक्तीकरिष्यति |

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. उपयुक्तम् उत्तरं चिनुत|

(i) प्रेरणा इति पाठानुसारम्______ अनेके लघुगर्ता: आसन् ।

(क) शिलाखंडे

(ख) मुख्यद्वारे

(ग) राजमार्गे

(घ) कूपसमीपे

उत्तर: क

(ii) बोपदेवः विद्यालयात् बहिः निरगच्छत् यतः

(क) स: अन्यत्र पठितुमिच्छति स्म ।

(ख) स: कूपं द्रष्टुमिच्छति स्म ।

(ग) स: परीक्षायामसफल: जात. ।

(घ) स: शिलाखण्डे गर्तान् गणयितुमिच्छति स्म

उत्तर: ग

(iii) मस्तिष्क केन सबलं भवति ?

(क) दुग्धपानेन

(ख)मनोयोगेन

(ग) भाग्येन

(घ) परिश्रमेण

उत्तर: ख

(iv) मुग्धबोध व्याकरणम्' इत्यस्य ग्रन्थस्य रचयिता क: ?

(क) पाणिनिः (ख) पातञ्जलि: (ग) बोपदेवः (घ) कात्यायन:

उत्तर: ग

(vii) बोपदेवः किं ग्रन्थम् अरचयत् ?

(क) व्याकरणम्

(ख) मुग्धबोधव्याकरणम्

(ग) बोधव्याकरणम्

(घ) बालबोधव्याकरणम्

उत्तर: ख

2.संस्कृतेन उत्तराणि लिखत।

(क) महिला: निजघटान् कुत्र स्थापयन्ति स्म?

उत्तर:) महिला: निजघटान् विशाल शिलाखंडे स्थापयन्ति स्म|

(ख) छात्र: कुशाग्रबुद्धि: कथं भवति?

उत्तर: ख) छात्र: कुशाग्रबुद्धि: अभ्यासेन भवति|

(ग) बोपदेवः केषां सुखबोधाय व्याकरणम् अरचयत् ?

उत्तर: बोपदेवः बालकानां सुखबोधाय व्याकरणम् अरचयत् |

(घ) पाषाणशिलाया गर्ताः कथं जाता:?

उत्तर: पाषाणशिलाया गर्ताः पुनः पुनः घटानाम् स्थापनेन जाता:|

(ङ) 'अहं मनोयोगेन पठिष्यामि' इति क: कथयति ?

उत्तर: 'अहं मनोयोगेन पठिष्यामि' इति बोपदेव: कथयति |

(च) बोपदेवः कस्मिन् प्रदेशे वसति स्म?

उत्तर: बोपदेवः बंग प्रदेशे वसति स्म|

(छ) बोपदेवेन शिलाखण्डे किं दृष्ट्वा पठनाय प्रेरणा प्राप्ता?

उत्तर: बोपदेवेन शिलाखण्डे गर्तान दृष्ट्वा पठनाय प्रेरणा प्राप्ता|

(ज) मस्तिष्कं केन सबलं भवति?

उत्तर: मस्तिष्कं अभ्यासेन सबलं भवति|

(झ) मानवः किं कृत्वा बुद्धिविकासं प्राप्नोति?

उत्तर: मानवः परिश्रमम् कृत्वा बुद्धिविकासं प्राप्नोति

3.महत्वपूर्ण प्रश्नाः

(i) मार्गे एक: क: असीत्?

उत्तर: कूप:

(ii) कूपस्यसमीपे कीदृश: शिलाखण्ड: आसीत्?

उत्तर: विशाल:

(iii) बोपदेवः केषाम् अवबोधने असमर्थः आसीत्?

उत्तर: विषयाणाम्

(iv) के सर्वान् विषयान् शीघ्रम् अवगच्छन्ति स्म?

उत्तर: अन्ये छात्रा:

(v) महिला: केन घटान् पूरयन्ति स्म?

उत्तर: कूपजलेंन

(vi) मम भाग्ये विद्या नास्ति' एषा उक्तिः कस्य अस्ति?

उत्तर: बोपदेवस्य

4. अधोलिखित गद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत -

यदि कठोरायां शिलायां कोमलैः घटैः गर्ताः भवन्ति तर्हि पुनः पुनः अभ्यासेन कथम् अहं विषयान् न अवगमिष्यामि | अहमपि मनोयोगेन पठिष्यामि, लेखिष्यामि, स्मरिष्यामि कुशाग्रबुद्धिः
च भविष्यामि।

(i) 'यदि कठोरायां शिलायाम्' इति कस्य उक्तिः ?

(ii) शिलायां गर्ताः कथम् अभवत् ?

(iii) मनोयोगेन पठित्वा मानवः किं भवति ?

उत्तर: (i) यदि कठोरायां शिलायाम्' इति बोपदेवस्य उक्तिः |

(ii) कोमलैः घटैः गर्ताः भवन्ति|

(iii) मनोयोगेन पठित्वा मानवः कुशाग्रबुद्धिः भवति |

5. अधोलिखित गद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत –

आसीद् बंगदेशे बोपदेवः नाम कश्चिद् बालक:। स: विद्यालये पाठ्यविषयाणाम् अवबोधने स्मरणे च नितांन्तम् आसीत्। असौ प्रायः चिन्तयति स्म यत् अन्ये छात्रा: सर्वान् विषयान् शीघ्रं अवगच्छन्ति, लिखन्ति स्मरन्ति च किन्तु मन्दबुद्धिः अहं तान् न अवगच्छामि। किमर्थम् अहम् अत्र समयं वृथा नाशयामि।

(i) बोपदेव: कस्मिन् देशे आसीत्?

(ii) के सर्वान् विषयान् शीघ्रं अवगच्छन्ति स्म?

(iii) मन्दबुद्धिः क: आसीत्?

उत्तर: (i)) बोपदेव: बंग देशे आसीत्|

(ii) अन्ये छात्रा: सर्वान् विषयान् शीघ्रं अवगच्छन्ति स्म|

(iii) बोपदेव: मन्दबुद्धिः आसीत्|

6.अधोलिखित गद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत –

ततः बालक: बोपदेवः प्रसन्नेन मनसा विद्यालयम् आगच्छति अवहितेन मनसा पाठं पठति, लिखति स्मरति च। छात्रैः सह चर्चामपि करोति। क्रमश तस्य बृद्धिः विकासं प्राप्नोति | अध्यापकाः तस्मिन् स्नेहम् अकुर्वन् छात्राः च तस्य सम्मानम् अकुर्वन्। कालान्तरे सः महान् विद्वान् अभवत् बालानां सुखबोधाय च मुग्ध-बोधव्याकरणम् अरचयत् ।

(i) क: प्रसन्नेन मनसा विद्यालयम् आगच्छति?

(ii) कस्य बृद्धिः विकासं प्राप्नोति?

(iii) मुग्ध-बोधव्याकरणम् क: अरचयत्?

उत्तर: (i) बोपदेवः प्रसन्नेन मनसा विद्यालयम् आगच्छति|

(ii) बोपदेवस्य बृद्धिः विकासं प्राप्नोति|

(iii) मुग्ध-बोधव्याकरणम् बोपदेवः अरचयत्|

7. अधोलिखित गद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत –

एकदा सः परीक्षायां सफलः न अभवत् विद्यालयात् च बहिः निरगच्छन्। मार्गे एकः कूपः आसीत्। कूपसमीपे एकः विशालः शिलाखण्डः आसीत्। शिलाखण्डे अनेके लघुगर्ताः आसन् । अनेकाः महिलाः कूपजलेन घटान् पूरयन्ति स्म। बोपदेवः तत्र अतिष्ठत् एका महिला च अपृच्छत्, मातः! एतान् सुन्दरान् गर्तान् कः अरचयत्? सा उच्चैः हसति वदति च, भो बालक! वयमत्र प्रतिदिनं घटान् स्थापयामः। घटानां स्थापनेन एते गर्ताः जाताः। कश्चित् कर्मकरः एतेषां निर्माता नास्ति।

(i) मार्गे एकः कः आसीत्?

(ii) गर्ताः कथं जाताः?

(iii) विशालः शिलाखण्डः <u>आसीत्</u> इत्यत्र रेखांकित पदे कः धातुः कश्चः लकारः?

उत्तरः (i) मार्गे एकः कूपः आसीत्।

(ii) घटानां स्थापनेन गर्ताः जाताः।

(iii) धातुः - अस् , लकारः - लङ्

8.पूर्णवाक्येन उतरत-

'प्रेरणा' इति पाठे बोपदेवः किमर्थं पाठशालां त्यजति ? सः पुनः पाठशालामागत्य किं करोति?

उत्तरः सः परीक्षायां असफलं जाता । सः पुनः पाठशालमात्य मनोयोगेन पठती ।

9.मञ्जूषातः उचितं कर्तृपदं चित्वा वाक्यानि पूरयत।

(क)_____ ध्यानेन पठिष्यामि ।

(ख) कश्चित्______ गर्तानां निर्माता नास्ति।

(ग) मम भाग्ये______नास्ति

(घ) तत्र________ जलेन घटान् पूरयन्ति स्म।

(ङ) कठिनाः_______ सुबोधाः अभवन्।

मञ्जूषा - कर्मकरः, महिलाः, अहम्, विद्या, विषयाः

उत्तरः क) अहम् ख) कर्मकरः ग) विद्या घ) महिलाः ङ) ,

10.रिक्तस्थानेषु कर्तृपदानि लिखत।

(i)___________ पाठ्यविषयाणाम् अवयोधने असमर्थः आसीत्।

(ii) अन्ये_______ सर्वान् विषयान् शीघ्रम अवगच्छन्ति, लिखन्ति स्मरन्ति च|

(iii) नूनं मम भाग्ये______ नास्ति|

(iv) मार्गे एकः________ आसीत्।

(v) अनेकाः________ कूपजलेन घटान् पूरयन्ति स्म।

उत्तरः (i) बोपदेवः, (ii) छात्राः , (iii) विद्या , (iv) कूपः , (v) महिलाः

11.'क' स्तम्भस्य विशेषणानि 'ख' स्तम्भस्य विशेष्यैः सह योजयत

'क' (विशेषणानि)	'ख' (विशेष्याणि)
क. महान्	1. घटैः
ख. कठोरायाम्	2. मनसा
ग. कोमल:	3. विषया:
घ. प्रसन्नेन	4. शिलायाम्
ङ. कठिना:	5. विद्वान

उत्तर: क-5, ख- 4, ग-1, घ- 2, ङ -3

12.अ' स्तम्भस्य वाक्यानि 'क' स्तम्भस्य वाक्यैः सह योजयत।

अ	ब
क. एकदा स परीक्षायां	1. विकासं प्राप्नोति।
ख. अनेकाः महिला:	2.तस्य सुबोधाः अभवन्।
ग. वयम् अत्र	3.सफलः न अभवत्।
घ. तस्य बुद्धिः	4. कूपजलेन घटान् पूरयन्ति स्म।
ङ. कठिनविषया अपि	5. प्रतिदिनं घटान् स्थापयामः।

उत्तर: क – 3, ख – 4, ग – 5, घ – 1, ङ – 2

13. रेखांकितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(i) महिला: निजघटान् <u>शिलाखंडे</u> स्थापयन्ति स्म|

(ii) मस्तिष्कं <u>अभ्यासेन</u> सबलं भवति|

(iii) 'मम भाग्ये विद्या नास्ति' एषा उक्ति <u>बोपदेवस्य</u> अस्ति|

(iv) मानव: <u>परिश्रमं</u> कृत्वा बुद्धिविकासं प्राप्नोति|

(v) ' अहम् मनोयोगेन पठिष्यामि इति <u>बोपदेव</u>: कथयति|

उत्तर: (i) महिला: निजघटान् **कुत्र** स्थापयन्ति स्म?

(ii) मस्तिष्कं **केन** सबलं भवति?

(iii) 'मम भाग्ये विद्या नास्ति' एषा उक्ति **कस्य** अस्ति?

(iv) मानव: **किं** कृत्वा बुद्धिविकासं प्राप्नोति?

(v) ' अहम् मनोयोगेन पठिष्यामि इति **क:** कथयति

14.पाठ सार लेखनं |

1. बोपदेवः बंग प्रदेशे वसति स्म ।
2 सः परीक्षायां असफलं भवत ।
3 सः अचिन्त्यति यत् एष: मम भाग्ये विद्या नास्ति । "
4. सः शिलाखण्डे अनेकाः लघुः गर्तान् दृष्ट्वा प्रेरणा च प्राप्तवान् ।
5. अन्ततः सः परिश्रमेण कुशाग्रबुद्धि : भवति।

15.शब्दार्था:

अवबोधने – समझने मे

मन्दबुद्धि – कम अक्ल वाला
कुशाग्रबुद्धि – तेज अक्ल वाला
प्रसन्नेन मनसा – प्रसन्न मन से
लघु गर्ता: - छोटे गड्ढे

योग्यताविस्तारः

(i) लेखकपरिचयः

प्रस्तुत पाठ के लेखक कविरत्न श्री ओमप्रकाश ठाकुर हैं। ये दिल्ली सरकार के शिक्षा विभाग में शिक्षक के रूप में बहुत दिनों तक कार्यरत थे। वर्तमान में उप - आचार्य पद से सेवानिवृत्त होकर दिल्ली में ही सरस्वती की साधना में लगे रहते हैं। इनकी अन्य रचनाएँ हैं- गीतिमञ्जरी , इन्द्रधनुः , नीतिकथामकरन्दः , कथामन्दाकिनी , प्रेरणापारिजातम् , तेनालीरामकथाः , गुलिस्तां इत्यादि।

पाठ-3

त्याज्यं न धैर्यम्

जीवन में प्रायः संकट आते रहते हैं। चाहे मनुष्य हो, अथवा पशु, पक्षी, सभी को हर तरह की मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं। विकट परिस्थिति में शिक्षा, अभ्यास और अनुभव बड़े काम आते हैं। ऐसी अवस्था में विशेष रूप से धैर्य, सही समय का चुनाव, प्रत्युत्पन्नमतित्व, विवेक आदि गुण बड़े उपयोगी सिद्ध होते हैं। प्रस्तुत पाठ के अनुसार जब बन्दर के प्राण संकट में पड़ जाते हैं तो आइए देखें, वह किस प्रकार धैर्य एवं चतुराई से अपने प्राणों की रक्षा करने में सफल हो जाता है |

उद्देश्यानि

प्रस्तुतपाठं पठित्वा भवान् / भवती

जीवने धैर्यस्य महत्त्वं वर्णयिष्यति।

कथाक्रमेण वाक्यानि लेखिष्यति।

विशेष्यविशेषणपदानां वाक्येषु प्रयोगं करिष्यति।

वृद्धिसन्धियुक्तपदानां सन्धिच्छेदं करिष्यति।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. उपयुक्तम् उत्तरं चिनुत|

(i) 'त्याज्यं न धैर्यम्" इति पाठे मकरी किं खादितुमिच्छति ?

(क) वानरम्

(ख) वानरहदयम्

(ग) जम्बुफलानि

(घ) न किमपि

उतर: ख

(ii) त्याज्यं न धैर्यम्' इति पाठे "मित्रस्य मरणं न चिन्तयामि" इति कः क प्रति कथयति ?

(क) मकरः वानरं प्रति

(ख) मकरः मकरी प्रति

(ग) वानरः मकरं प्रति

(घ) मकरी मकरं प्रति

उतर: ख

(iii) रक्तमुखः वानरः___वसति स्म।

(क) कूपसमीपे

(ख) स्थले

(ग) जम्बुवृक्षे

(घ) तडागे

उतर: ग

(iv) त्याज्यं न धैर्यमिति पाठे कुत्र प्राप्य मकरः रहस्यं वदति ?

(क) नदीतीरे (ख) मकरस्य गृहं

(ग) जलमध्ये (घ) वृक्षं

उतर: ग

(v) कः धैर्येण दुर्ग तरति?

(क) मकरी

(ख) वानरः

(ग) सर्पः

(घ) मकरः

उतर: ख

(vi) एतत् प्रीतिलक्षणं नास्ति?

(क) ददाति

(ख) उपदिशति

(ग)प्रतिगृह्णाति

(घ)भुंक्ते

उतर: ख

2.प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत।

(i) रक्तमुखः वानरः कुत्र वसति स्म?

उत्तर: जम्बुवृक्षे

(ii) जम्बुवृक्षस्य द्वे विशेषणे लिखत।

उत्तर: विशाल: , फलै: पूरित:

(iii) 'करालमुखः तम् अपश्यत्' इत्यत्र 'तम्' पदेन कस्य बोधः भवति?

उत्तर: वानरस्य

(iv) वानरस्य चत्वारि विशेषणपदानि लिखत।

उत्तर: चंचल:, निर्भीक: , स्वस्थ: , बलिष्ठ:

(v) भवान् मम अतिथि:' इत्यत्र 'मम' पदेन कस्य बोधः भवति?

उत्तर: वानरस्य

(vi) समुद्रतीरे फलैः पूरितः क: वृक्षः आसीत्?

उत्तर: जम्बुवृक्ष:

(vii) रक्तमुखः वानरः वृक्षे कि खादति स्म?

उत्तर: जम्बुफलानि

(viii) अयं मम सहचरः भवतु इति क: चिन्तयति ?

उत्तर: करालमुख:

(ix) नानाविधकथाप्रसंगेन कयोर्मध्ये मैत्री अभवत्?

उत्तर: मकरवानरयो:

(x) मकरी किम् खादितुम इच्छति स्म?

उत्तर: वानरस्य हृदयम्

3 .अधोलिखित गद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत –

आसीत् समुद्रसमीपे विशाल: फलैः पूरितः जम्बुवृक्षः। तस्मिन् वृक्षे बलिष्ठो रक्तमुखनामक: वानरः वसति स्म। एकदा करालमुखः नामको मकर: वानरम् अपश्यत् अचिन्तयत् च यत् अयं वृक्षवासी स्वस्थ: चञ्चल: निर्भीक : इव

प्रतिभाति। अयं मम सहचरो भवतु इति मत्वा प्रतिदिनं सस्नेहं वार्ता करोति। वानरः अपि कथयति यत् भवान् मम अतिथि:। भक्षयतु मधुराणि जम्बुफलानि।

प्रश्नाः

(क) समुद्रतीरे फलैः पूरितः कः वृक्षः आसीत्?

(ख) भवान् मम अतिथि: इति कः कथयति?

(ग) रक्तमुखनामकः वानरः <u>वसति</u> स्म इत्यत्र रेखांकितपदे कः लकारः?

उत्तरः (क) समुद्रतीरे फलैः पूरितः **जम्बुवृक्षः** वृक्षः आसीत्|

(ख) भवान् मम अतिथि: इति वानरः कथयति|

(ग) लट् लकार

4.अधोलिखित गद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत –

करालमुखः मकरः प्रतिदिनं भक्षितशेषाणि जम्बुफलानि गृहं गत्वा भार्यायै यच्छति! मकरी तानि फलानि खादित्वा मकरं कथयति अहो! तव मित्र प्रतिदिनम् एतादृशानि मधुराणि फलानि खादति तस्य हृदयं कीदृशं मधुरं भवेत्। तम् आनय। मकरः प्रत्युत्तरति- कथम् इदं शक्यम् ? मित्रस्य मरणं न चिन्तयामि। मकरी वदति अहं न जानामि।

प्रश्नाः

(क) मकरी तानि फलानि खादित्वा मकरं किम् कथयति?

(ख) मकरः किम् उतरं ददाति?

उत्तरः (क) मकरी तानि फलानि खादित्वा मकरं कथयति अहो! तव मित्र प्रतिदिनम् एतादृशानि मधुराणि फलानि खादति

(ख) मकरः प्रत्युत्तरति- कथम् इदं शक्यम् ? मित्रस्य मरणं न चिन्तयामि।

5 अधोलिखित गद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत –

जलमध्ये गत्वा मकरः पृच्छति- जानासि किम्? किमर्थं त्वां नयामि इति? त्वदीयं मधुरं हृदयं खादितुम् इच्छति तव भ्रातृजाया। वानरः धैर्येण प्रतिवदति- 'पूर्वं कथं न कथितं त्वया? मम हृदयं तु कोटरे तिष्ठति। यदि मम हृदयेन एव कार्यं, तदा नास्ति मम आपत्तिः। परन्तु तदर्थं मां तं वृक्षं प्रति नय। ' मूर्खः मकरः तीरं प्रति आगच्छति।

प्रश्नाः

(क) मकरी किम् खादितुम इच्छति?

(ख) वानरः धैर्येण किम् वदति?

(ग) वानरस्य हृदयं कुत्र तिष्ठति?

उत्तरः (क) वानरस्य मधुरं

(ख) वानरः धैर्येण प्रतिवदति- 'पूर्वं कथं न कथितं त्वया?

(ग) वानरस्य हृदयं तु कोटरे तिष्ठति।

5.अधोलिखित गद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत –

मो मूर्ख! न कोऽपि जीवः हृदयं विना जीवति। न वातत् पृथक् कर्तुं शक्यते। अतः त्वं गच्छ, पत्नी च प्रीणय। समाप्ता आवयोः मैत्री।

प्रश्नाः

(क) कस्यचिदपि जीवनं केन विना न संभवति?

(ख) हृदयं कुतः पृथक् कर्तुं न शक्यते?

(ग) कयोः मैत्री समाप्ता?

उत्तर: (क) हृदयं विना

(ख) हृदयं वातत् पृथक् कर्तुं न शक्यते।

(ग) मकरवानरयोः

6.अधोलिखितकथनानि क: कम् प्रति कथयति इति लिखित |

	क:	कम्
(i) अहो तव मित्रं प्रतिदिन मधुरं फलं खादति तस्य हृदयं कीदृशं मधुरं भवेत्?	मकरी	मकरम्
(ii) अद्य मम गृहे तव भोजनम् अस्ति।	मकर:	वानरम्
(iii) अहं तु तरणे असमर्थः।	वानर:	मकरम्
(iv) पृष्ठे आरूढं त्वां नयामि।	मकर:	वानरम्
(v) अहं न जानामि। तम् अवश्यम् आनय।	मकरी	मकरम्

7.अधोलिखितशब्देषु विशेष्यविशेषणपदानां संयोजनं कुरुत।

'क' विशेष्यपदानि	'ख' विशेषणपदानि
क) वानरः	1. समुत्पन्नेषु
ख) वृक्षः	2. मधुरम्
ग) जम्बुफलानि	3. बलिष्ठः
घ) हृदयम्	4. फलैः पूरितः
ङ) कार्येषु	5. मधुराणि

उत्तर: क – 3, ख – 4, ग- 5, घ – 2, ङ – 1

8.विलोमशब्दैः सह योजयत

'क' स्तम्भः	ख' स्तम्भः
(i) पूर्वम्	(क) प्रारब्धा
ii) समाप्ता	(ख) विद्वान
(iii) मधुरं	(ग) प्रतिवदति
(iv) नयामि	(घ) कटु
(v) पृच्छति	(ङ) पश्चात्
(vi) मूर्ख	(च) आनयामि

उत्तर: (i) – ङ, (ii) – क, (iii) – घ, (iv) – च, (v) – ग, (vi) – ख

9. शब्दार्था:

जम्बुवृक्ष: - जामुन का पेड़

करालमुख: - भयंकर मुख वाला

खादित्वा - खाकर

भार्या - पत्नी

रक्तमुख: - लाल मुख वाला

10.पाठ सार लेखनं |

1 जम्बुवृक्षे रक्तमुखः वानरः नामकःवसति स्म ।

2 मकर : वानरम् प्रतिदिनं सस्नेहम् वार्ताम् करोति ।

3. वानरः मकरं अतिथिम् मत्वा जम्बुफलानि यच्छति ।

4. मकरी वानरस्य हृदयं खादितुम् इच्छति ।

5. वानरः वदति मया हृदयम् तु वृक्षस्य कोटरे अधितिष्ठति , अत: विपत्ते त्याज्यं न धैर्यम् ।

योग्यताविस्तारः

कवि परिचय यह कथा पञ्चतन्त्र के चतुर्थ तन्त्र लब्धप्रणाश की प्रथम कथा है । इसे सरल भाषा में फिर से लिखा गया है । पञ्चतन्त्र के लेखक विष्णुशर्मा हैं । नीतिपरक कथाओं के लिए पञ्चतन्त्र प्रसिद्ध है । पशु - पक्षी आदि के स्वभाव का मानवीकरण करके कथाओं को एक - दूसरे में पिरोया गया है । एक कथा के अंत में दूसरी कथा जुड़ती है । प्राणघातक संकट उपस्थित करके विपरीत परिस्थिति को भी सुलझाने में कवि की असाधारण प्रतिभा देखने को मिलती है । इन कथाओं की उपयोगिता आज भी उतनी ही है जितनी आज से दो हजार वर्ष पूर्व थी

पाठ-4

कस्मात् किं किं शिक्षेत ?

मनुष्य की सबसे बड़ी विशेषता है उसकी मननशीलता। अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य अपने चारों ओर फैले परिवेश को , वहाँ के जड़ एवं चेतन पदार्थों को तथा अपने से भिन्न प्राणियों को अधिक सूक्ष्मता से देखता है। उन सब का निरीक्षण कर उन से कुछ न कुछ शिक्षा प्राप्त करने की चेष्टा करता है। इस सृष्टि में मानव अपने आविर्भाव के समय से ही अनेक प्रकार के पशु - पक्षियों से घिरा रहा है। एक लम्बी अवधि तक हिंसक एवम् अहिंसक - दोनों प्रकार के जन्तुओं को निकटता से हमारे पूर्वज देखते आ रहे हैं। उनकी चेष्टाओं , प्रवृत्तियों तथा मनोभावों का दैनिक निरीक्षण कर उन्हें लगा कि इन पशुओं से भी कुछ न कुछ शिक्षा ली जा सकती है। पशुओं में अनेक गुण होते हैं , उन गुणों को व्यवहार में अपनाने से मनुष्य का जीवन सफल हो सकता है। अतः संस्कृत - साहित्य में ऐसे अनेक श्लोक लिखे गये हैं , जो जड़ एवं चेतन जगत् के अनुकरणीय गुणों का वर्णन करते हैं। वे मनुष्य को इस बात के लिए प्रेरित करते हैं कि वह इनसे भी शिक्षा प्राप्त करे। आइये , देखें कि इन श्लोकों में क्या कहा गया है ?

उद्देश्यानि

इमं पाठं पठित्वा भवान् / भवती .

विविधपशूनां गुणानाम् उल्लेख करिष्यति ;

विभिन्नपशुपक्षिभ्यः प्राप्तां शिक्षा स्वशब्देषु वर्णयिष्यति ; प्राकृतिकतत्त्वेभ्यः प्रदत्तां शिक्षा लेखिष्यति ;

पद्यांशानाम् सम्बद्धवाक्यांशैः सह मेलनं करिष्यति ; .

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1 .उपयुक्तम् उत्तरं चिनुत|

(i) चन्दनवृक्षः केन अन्येषां सन्तापमपहरति ?

(क)पुष्पैः

(ख)छायया

(ग)फलैः

(घ)वपुषा

उतर: घ

(ii) कुक्कुटे एषः गुणः नास्ति

(क) आपद्गतां स्त्रियं त्यजेत्

(ख) प्रातः उत्थानम्

(ग) बन्धुभिः सह भोजनम्

(घ)युद्धम्

उतर: क

(iii)गर्दभे एषः गुणः नास्ति

(क) सन्तोष:

(ख) भारवहनम्

(ग) इन्द्रियसंयमः

(घ) शीतोष्णसहनम्

उतर: ग

(iv) नरः__कार्य कुर्यात् ।

(क) अल्पप्रयासेन

(ख) अल्पबलेन

(ग) सर्वारंभेण

(घ) अल्पधनेन

उतर ग

(v) एष: शुन: गुण: नास्ति

(क) अल्पभोजी (ख) स्वल्पसन्तुष्ट

(ग) सुनिद्रः (घ) स्वामिभक्तः

उतर: क

2 .संस्कृतेन उत्तराणि लिखत।

(क) चन्दनवृक्षः केन परसन्तापम् अपहरति?

उत्तर: स्ववपुषा

(ख) षट्पदः पुष्पेभ्यः किं गृह्णाति?

उत्तर: रसम्

(ग) नरः क्षिते: कां शिक्षां गृह्णीयात्?

उत्तर: मार्गात् न प्रविचलेत|

(घ) किं जडपदार्था: अपि अस्मभ्यं शिक्षा ददति?

उत्तर: आम्

(ङ) कुशलो नरः सर्वतः किम् आदद्यात्?

उत्तर: सारं

(च) विद्वान कस्मात् न प्रविचलेत्?

उत्तर: मार्गात्

(छ) भोजन केन सह कुर्यात्?

उत्तर: बन्धुभि:

(ज) क्षिते: किम् अन्वशिक्षम्?

उत्तर: व्रतम्

(झ) शुन: षट् गुणानि लिखत|

उत्तर: शूर: , प्रभुभक्त: , स्वल्पसन्तुष्ट: , सुनिद्रः , शीघ्रचेतन: ,बह्वाशी:

(ञ) गर्दभ त्रीणि गुणानि लिखत|

उत्तर: अविश्रमम् , ससंतोष , शीतोष्णं सहनम्

(ट) सिंहस्य एकः कः गुणः प्रकीर्तितः?

उत्तर: सर्वारंभेण तत्कुर्यात्

(ठ) बक: केन कार्याणि साधयति?
उत्तर: समयानुसारं

3.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत -

प्रभूतमल्पकार्यं वा योनरः कर्तुमिच्छति ।
सर्वारंभेण तत्कुर्यात् सिंहादेकं प्रकीर्तितम् ॥

(i) 'सर्वारंभेण' इत्यस्य कः अर्थः ?
(ii) सर्वारंभेण कीदृशं कार्यं भवितुं शक्यते ?
(iii) सिंहस्य एकः कः गुणः प्रकीर्तितः ?

उत्तर: (i) पूर्ण उत्साहेन
(ii) प्रभूतमल्पकार्यं
(iii) सर्वारंभेण तत्कुर्यात्

4 .अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत –

अविश्रमं वहेद् भारं शीतोष्णं च न विन्दति।
ससन्तोषस्तथा नित्यं त्रीणि शिक्षेत् गर्दभात् ।।

(i) अस्मिन् पद्ये गर्दभस्य कति गुणा: कथिता: ?
उत्तर: त्रीणि
(ii) गर्दभ: विश्रामं विना किं करोति ?
उत्तर: भारं वहति

5.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत –

भूतैराक्रम्यमाणोऽपि धीरो दैववशानुगैः।
तद् विद्वान्न चलेन्मार्गाद् अन्वशिक्षम् क्षितेर्वतम् ।।

(i) क: विद्वान: मार्गात न चलेत ?
उत्तर: भूतैराक्रम्यमाणोऽपि धीरो मार्गात न चलेत|
(ii) क: व्रतम् अन्वशिक्षम् ?
उत्तर: क्षितेर्व्रतम् ।

6. अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत –

अणुभ्यश्च महद्भ्यश्च शास्त्रेभ्यः कुशलो नर:।
सर्वतः सारमाददयात् पुष्पेभ्य इव षट्पदः ।।

(i) क: कुशलो नर: ?
(ii) सर्वतः सारम् क: आददयात्?
(iii) पुष्पेभ्य: इति शब्दे क: विभक्ति:?

उत्तर: (i) अणुभ्यश्च महद्भ्यश्च शास्त्रेभ्यः कुशलो नर:।
(ii) षट्पदः
(iii) षष्ठी : विभक्ति:

7. निम्नलिखित पद्यस्य अन्वये रिक्तस्थानपुर्तिं कुरुत-

सर्वेन्द्रियाणि संयम्य बकवत् पतितो जन:
कालदेशोपपन्नानि सर्वकार्याणि साधयेत् ॥

अन्वयः

बकवत् (i) .... संयम्य (ii)............. जनः कालदेशो पपन्नानि सर्वकार्याणि (iii) ....

उत्तर: (i) सर्वेन्द्रियाणि

(ii) पतितो

(iii) साधयेत्

8. निम्नलिखित पद्यस्य अन्वये रिक्तस्थानपुर्तिं कुरुत-

अणुभ्यश्च महद्भ्यश्च शास्त्रेभ्य: कुशलो नर: ।
सर्वतः सारमाददयात् पुष्पेभ्य इव षट्पद: ।।

अन्वय:

कुशल:, महद्भ्यः अणुभ्य: च, _1__, पुष्पेभ्यः षट्पद __2__, सर्वतः _3__ आददयात्।

उत्तर: 1) शास्त्रेभ्य:

2) इव

3) सारम्

9.निम्नलिखित पद्यस्य अन्वये रिक्तस्थानपुर्तिं कुरुत-

युद्धं च प्रातरुत्थानं भोजनं सह बन्धुभिः
स्त्रियमापद्गतां रक्षेच्चतुः शिक्षेत कुक्कुटात् ।।

अन्वय:

प्रातः उत्थानम्, _1__, बन्धुभिः सह __2__, आपद्गता स्त्रियं रक्षेत् (इति) कुक्कुटात् चतु: __3___।

उत्तर: 1) युद्धं

2) भोजनं

3) शिक्षेत

10.निम्नलिखित पद्यस्य अन्वये रिक्तस्थानपुर्तिं कुरुत-

यद्यपि चन्दनविटपो विधिना फलकुसुमविवर्जितो विहितः।
निजवपुषैव परेषां तथापि सन्तापमपहरति ।।

अन्वयः-

यद्यपि विधिना __1__ फलकुसुमविवर्जित: _2___ तथापि निजवपुषा एव _3___ सन्तापम् अपहरति।।

उत्तर: 1) चन्दनविटप:

2) विहितः।

3) परेषां

योग्यताविस्तारः

ग्रन्थपरिचयः

प्रस्तुत पाठ में पहले पाँच श्लोक चाणक्यनीति से, अगले दो श्रीमद्भागवतपुराण से तथा अन्तिम दो सुभाषितरत्नभण्डागार से लिये गये हैं। चाणक्यनीति चाणक्य द्वारा लिखित नीतिग्रन्थ है जिसमें 17 अध्यायों में 333 श्लोक नीतिशिक्षाओं से ओतप्रोत हैं। श्रीमद्भागवतपुराण में 12 स्कन्ध हैं जिनमें 18,000 श्लोकों में भगवान् कृष्ण के जीवन की झांकियाँ प्रस्तुत की गई हैं। यह पुराण ज्ञान विज्ञान का भण्डार है। सुभाषितरत्नभण्डागार सुभाषितों का महत्त्वपूर्ण संग्रह है। पञ्चतन्त्र , हितोपदेश , जातकमाला इत्यादि ग्रन्थों से भी हम इसी प्रकार की शिक्षाएँ प्राप्त कर सकते हैं।

पाठ-5

प्राणस्य श्रेष्ठत्वम्

भारतीय वाङ्मय में उपनिषद् ग्रंथों का महत्त्वपूर्ण स्थान है । इनमें हमारे जीवन के संबंध | में अनेक प्रश्नों पर गंभीरता से विचार किया गया है और अनेक विषयों को बड़े सरल और रुचिपूर्ण ढंग से समझाया गया है । इस पाठ में आप पढ़ेंगे कि हमारे शरीर में अनेक इन्द्रियाँ हैं जिनके द्वारा हमारा शरीर ठीक ढंग से कार्य करता है । इन इन्द्रियों में कौन सब से | अधिक महत्त्वपूर्ण है ? कौन सबमें श्रेष्ठ है ? इस प्रश्न का उत्तर प्रस्तुत पाठ में वैज्ञानिक ढंग से दिया गया है । आइए देखें कि हमारे शरीर में कौन श्रेष्ठ है और क्यों ?

उद्देश्यानि

इमं पाठं पठित्वा भवान् / भवती

इन्द्रियाणां नामानि लेखिष्यति तेषां कार्याणि च वर्णयिष्यति ; . क्त्वा - ल्यप् प्रत्ययप्रयोगं करिष्यति : . परसवर्णसंधियुक्तानां पदानां सन्धिच्छेदं करिष्यति ;

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. उपयुक्तम् उत्तरं चिनुत|

(i) प्राणादिषु क: श्रेष्ठ: सिद्धः ?

(क) चक्षुः

(ख)प्राणा:

(ग) मनः

(घ) श्रोत्रम्

उतर: **ख**

(ii) जनाः मनसा किं कुर्वन्ति ?

(क) पश्यन्ति (ख) श्रृण्वन्ति

(ग) ध्यायन्ति (घ) जिघ्रन्ति

उतर: **ग**

(iii) केन किं न भवति ?

(क) वाचा भाषणम्

(ख) मनसा ध्यानम्

(ग) श्रोत्राभ्यां श्रवणम्

(घ) नेत्राभ्यां श्वसनम्

उतर: **घ**

(iv) यस्मिन् निर्गते शरीरं नश्येत् सः युष्मासु |

(क) वन्दनीयः

(ख) कनिष्ठः

(ग) पूजनीय:

(घ) श्रेष्ठः

उतर: **घ**

(v) सर्वप्रथमं का शरीरात् बहि: गता?

(क) चक्षु: (ख) वाक्

(ग) श्रोत्रं (घ) मन:

उत्तर:(क)

2.संस्कृते उत्तराणि लिखत-

(क) केषां मध्ये कलह: सप्रवृत्तः?

उत्तर-इन्द्रियाण मध्ये कलह: संप्रवृत्तः।

(ख) प्रजापति: इन्द्रियाणि किम् अवदत्?

उत्तर- प्रजापतिः इन्द्रियाणि अवदत् यस्मिन् निर्गते शरीरं नश्येत् स वः श्रेष्ठः इति!

(ग) वाक् किमर्थ शरीरात् निर्गता?

उत्तर- आत्मनः श्रेष्ठत्वं प्रमाणीकर्तुं वाक् शरीरात् निर्गत।।

(घ) मनसा जनाः किं कुर्वन्ति?

उत्तर- मनसा जना: ध्यायन्ति।

(ङ) प्राणानां गमनकाले इन्द्रियाणि कादृशानि अभवन्?

उत्तर- प्राणानां गमनकाले इन्द्रियाणि पीडितानि अभवन्।

(च) चक्षुषः अनन्तरं किम् इन्द्रियं निरगच्छत्?

उत्तर - चक्षुषः अनन्तरं श्रोत्रं निरगच्छत्।

(छ) श्रोत्रं प्रत्यागत्य इन्द्रियाणि किम् अपृच्छत् ?

उत्तर- मयि गते यूयं कथम् अजीवत।

(ज) इन्द्रियाणि मनः प्रति किम् अवदन्?

उत्तर- यथा बाला: मनसा विना जीवन्ति तथा वयम् अजीवाम।

(झ) मनसि आगते प्राणा: किम् अकुर्वन्?

उत्तर- प्राणा: निर्गन्तुं प्रारभन्त।

(ञ) इन्द्रियाणि प्राणान् किम् अवदन् ?

उत्तर- भगवन्! न गच्छ! त्वम् एव अस्मासु श्रेष्ठ:।

(ट) प्राणादयः कं गता:?

उत्तर: प्राणादयः प्रजापतिं पितरं गता:।

(ठ) प्राणादयः प्रजापति किम् अवदन्?

उत्तर: को हि नः श्रेष्ठ:?

(ड) प्रजापति: किम् उत्तरम् अयच्छत्?

उत्तर: यस्मिन् गते शरीरं नश्येत् स वः श्रेष्ठः इति।

(ढ) सर्वप्रथमं का शरीरात् बहिः गता?

उत्तर: सर्वप्रथमं वाक् शरीरात् बहिः गता।

(ण) इन्द्रियाणि चक्षु: प्रति किम अवदन?

उतर: यथा चक्षुषा अपश्यन्तः नराः जीवन्ति तथा वयम् अपि अजीवाम।

3. इन्द्रियैः सह तेषां कार्यसम्बन्धीनि पदानि लिखत।

(i) प्राणेन	(क) पश्यन्ति
(ii) वाचा	(ख) श्रृण्वन्ति
(iii) श्रोत्रेण	(ग) वदन्ति
(iv) मनसा	(घ) श्वसन्ति

(v) चक्षुषा (ङ) ध्यायन्ति

उत्तर: (i) – घ, (ii) – ग, (iii) – ख, (iv) – ङ, (v) – क

4.अधोलिखित गद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत -

ततः प्राणाः निर्गन्तुं प्रारभन्त। तस्मिन्नेव क्षणे सर्वाणि वाक् प्रभृती इन्द्रियाणि पीडितानि अभवन्। कष्टेन च प्राणम् अवदन् - भगवन्! मा गच्छ। त्वमेव अस्मासु श्रेष्ठः। त्वम् एव अस्माकं नियन्ता।

प्रश्नाः- 1) प्राणानां निर्गमनस्य प्रारम्भे कानि पीडितानि अभवन् ?

उत्तरः प्राणानां निर्गमनस्य प्रारम्भे इन्द्रियाणि पीडितानि अभवन्|

(2)' त्वमेव अस्मासु श्रेष्ठः' इति कानि कं वदन्ति ?

उत्तरः इन्द्रियाणि प्राणम् वदन्ति |

(3) 'प्रारभन्त' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम् ?

उत्तरः प्राणाः

5.अधोलिखित गद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत –

एतत् श्रुत्वा प्रथमं वाक् शरीरात् निर्गता। सा वर्ष यावत् प्रोष्य प्रत्यागता अपृच्छत् - कथं भवखि: मया विना जीवितम्?' प्राणादयः अवदन् यथा मूकाः वाचा अवदतः अपि, प्राणेन श्वसन्तः, चक्षुषा पश्यन्तः, श्रोत्रेण श्रृण्वन्तः, मनसा ध्यायन्तः जीवन्ति, एवं वयम् अपि अजीवाम। ' प्राविशत् ह वाक्।

प्रश्ना:- 1) सर्वप्रथमं का शरीरात् बहि: गता?

2) प्राणादयः किम् अवदन्?

उत्तर: 1) सर्वप्रथमं वाक् शरीरात् बहि: गता|

2) ' प्राणादयः अवदन् यथा मूकाः वाचा अवदतः अपि, प्राणेन श्वसन्तः, चक्षुषा पश्यन्तः, श्रोत्रेण श्रृण्वन्तः, मनसा ध्यायन्तः जीवन्ति, एवं वयम् अपि अजीवाम। '

6.अधोलिखित गद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत –

पुरा प्राणा:, वाक्, चक्षु:, श्रोत्रं, मन: इत्येतेषां मध्ये अहं श्रेष्ठाऽहं श्रेष्ठ इति विवादः संप्रवृत्तः। परस्पर विवदमाना: प्राणादयः पितरं प्रजापतिम् एत्य अपृच्छन् - भगवन्, को हि नः श्रेष्ठ:?' प्रजापतिः अवदत् -'यस्मिन् शरीरात् निर्गते तत् शरीरं नश्येत् स वः श्रेष्ठः। '

प्रश्ना: 1) केषां मध्ये कलह: संप्रवृत्तः?

2) प्रजापतिः किम् अवदत्?

उत्तर: 1) इन्द्रियाणा: मध्ये कलह: संप्रवृत्तः|

2) प्रजापतिः अवदत् -'यस्मिन् शरीरात् निर्गते तत् शरीरं नश्येत्

स वः श्रेष्ठः।

7.इन्द्रियाणां कार्यसंबन्धे पञ्चवाक्यानि लिखत|

(i) नरा: वाचा वदन्ति|

(ii) नरा: चक्षुषा पश्यन्ति|

(iii) नरा:श्रोत्रेण श्रृण्वन्ति|

(iv) नरा:मनसा ध्यायन्ति|

(v) नरा: प्राणै: श्वसन्ति|

8.शब्दार्था:

संप्रवृत: - प्रारम्भ हो गया

नः श्रेष्ठः - हम मे श्रेष्ठ है
वः श्रेष्ठः - तुम मे श्रेष्ठ है
मनसा – मन से
पीडितानि – दुःखी हुई

9.रेखांकितपदे आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) नराः श्रोत्रेण श्रृण्वन्ति|
(ख) सर्वप्रथमं वाक् शरीरात् बहिः गता|
उत्तरः (क) नराः केन श्रृण्वन्ति?
(ख) सर्वप्रथमं का शरीरात् बहिः गता?

10.पाठ सार लेखनं |

1. पुरा इन्द्रियाणां मध्ये विवादः संप्रवृत्तः ।
2 प्रजापति अवदत् - यस्मिन् शरीरात् निर्गते तत शरीरम् नश्यते सः वः श्रेष्ठः ।
3. एतत् श्रुत्वा सर्वेषाम् इन्द्रियाणां वारं वारं शरीरात् बहिः निर्गच्छत् ।
4. अन्ततः प्राण : निर्गन्तुं सर्वाणि इन्द्रियाणि पीडितानि अभवन्।
5. अतः प्राणः सर्वेषु इन्द्रियेषु श्रेष्ठः अस्ति।

योग्यताविस्तारः

ग्रन्थ - परिचयः प्रस्तुत पाठ छान्दोग्य उपनिषद् से लिया गया है । उपनिषद् ग्रंथों की संख्या 108 मानी जाती है । परंतु इनमें ईश , केन , कठ , प्रश्न , मुण्डक , माण्डूक्य , श्वेताश्वतर , ऐतरेय , तैत्तिरीय बृहदारण्यक तथा छान्दोग्य इन ग्यारह उपनिषदों का महत्त्व अधिक बताया जाता है । उपनिषदों में वेदान्त दर्शन की चर्चा की गयी है । आज कल वेदान्त दर्शन में लोगों की रुचि बढ़ रही है । वेदान्त लोगों को चिन्तामुक्त जीवन व्यतीत करने के रास्ते बताता है ।

पाठ-6

यद्भविष्यो विनश्यति

प्रस्तुत पाठ विष्णुशर्मा द्वारा रचित ' पञ्चतन्त्रम् ' नामक प्रसिद्ध कथाग्रन्थ से संकलित है। इसमें संकट के समय अनागतविधाता , प्रत्युत्पन्नमति तथा यद्भविष्य नामक (एक जलाशय में रहने वाली) तीन मछलियों के परस्पर वार्तालाप का अत्यन्त रोचक एवं लोकोपयोगी वर्णन है। इसे पढ़ने के बाद विद्यार्थी स्वयमेव निश्चय कर सकेंगे कि सिर पर आई विपत्ति से आत्मरक्षा का उपाय किस प्रकार करना चाहिए। केवल भाग्य के भरोसे पर बैठे रहने वाला मनुष्य नष्ट हो जाता है। इसलिये सर्वदा दूरदृष्टि से कार्य करना चाहिए।

उद्देश्यानि .

इमां कथां पठित्वा भवान् / भवती
प्रदत्तानि वाक्यानि पुनः कथाक्रमेण लेखिष्यति ;
प्रदत्तकथनमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं करिष्यति
यथासमयं कृतस्य निर्णयस्य महत्त्वं लेखिष्यति .

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. संस्कृतभाषया उत्तरं लिखत|

(i) मत्स्यजीविनां वचः कीदृशम् आसीत्?
उत्तर: कुलिशपातोपमम्
(ii) त्रयाणां मत्स्यानां नामानि लिखत।
उत्तर: अनागतविधाता, प्रत्युत्पन्नमतिः, यद्भाविष्यः च
(iii) अशक्तै: बलिन: शत्रो: समक्षम् किं कर्तव्यम्?
उत्तर: प्रपलायनम्.
(iv) कौ मत्स्यौ सुखम् एधेते?
उत्तर: अनागतविधाता, प्रत्युत्पन्नमति: च
(vi) क: मत्स्यः पश्यति ?
उत्तर: यद्भविष्यः।
(vii) कै: सरः निर्मत्स्यतां नीतम्?
उत्तर: मत्स्यजीविभिः
(viii) वने विसर्जित: अपि क: जीवति?
उत्तर: अनाथ:
(ix) कस्य नाश: भवति ?
उत्तर: यद्भविष्यस्य
(x)मत्स्यौ किं त्यक्त्वा अन्यत्र निष्क्रान्तौ?
उत्तर: सरोवरम्
(xi) क: मत्स्यजीविनां वाङ्मात्रेणैव सरः त्यक्तुं न इच्छति?
उत्तर: यद्भविष्यः

2.रेखांकितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत |

(क) **<u>बहुमत्स्यः</u>** अयं ह्रदः।

उत्तर: कीदृशः अयं ह्रद

(ख) ते श्वः प्रभाते **<u>मत्स्यसंक्षयं</u>** करिष्यन्ति।

उत्तर: ते श्वः प्रभाते किं करिष्यन्ति?

(ग) **<u>मत्स्यजीविभिः</u>** उक्तं सर्वैः श्रुतम्।

उत्तर: कैः उक्तं सर्वैः श्रुतम्?

(घ) एतत् **<u>मम</u>** मनसि वर्तते।

उत्तर:) एतत् कस्य मनसि वर्तते?

(घ) **<u>भवता</u>** सत्यम् अभिहितम्।

उत्तर : केन सत्यम् अभिहितम्?

3.अधोलिखितानि कथनानि क: कं प्रति कथयति-

(क) अहा बहुमत्स्योऽयं ह्रदः कदाचिदपिन अस्माभिरन्वेषितः।

उत्तर: मत्स्यजीविनः- परस्परम्

ख) अहो, श्रुत भवद्भिः यत् मत्स्यजीविभिःअभिहितम्।

उत्तर: अनागतविधाता-मत्स्यान्

(ग) सत्यमभहिते भवता तदन्यत्र गम्यताम्।

उत्तर: प्रत्युत्पन्नमतिः- अनागतविधातारम्

(घ) न भवद्भ्या मन्त्रित सम्यक् एतत्।

उत्तर: यद्भविष्य:- अनागतविधातारम्, प्रत्युत्पन्नमतिं च

4.अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्त प्रश्नान् उत्तरत|

तन्नूनं प्रभातसमये मत्स्यजीविनोऽत्र समागत्य मत्स्यसंक्षयं करिष्यन्ति, एतन्मय मनसि वर्तते। तन्न युक्तं साम्प्रतं क्षणमपि अत्र स्थातुम्। तदाकरण्र्य प्रत्युत्पम्ममतिः प्राह - "अहो सत्यममिहितं भवता। तदन्यत्र गभ्यताम् ।

प्रश्ना :

(i) मत्स्यजीविनः प्रभाते आगत्य किं करिष्यन्ति?

उत्तर: मत्स्यजीविनः प्रभाते आगत्य मत्स्यसंक्षयं करिष्यन्ति |

(ii) प्रत्युत्पन्नमतिः कस्य वचनस्य अनुमोदनं करोति?

उत्तर: प्रत्युत्पन्नमतिः अनागतविधातास्य वचनस्य अनुमोदनं करोति

(i) 'करिष्यन्ति' इति क्रियापदस्य किं कर्तृपदम् ?

उत्तर: मत्स्यजीवि:

5.अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्त प्रश्नान् उत्तरत|

कस्मिश्चित् जलाशये अनागतविधाता, प्रत्युत्पन्नमतिः: यद्भविष्यश्चेति त्रयो मत्स्याः प्रतिवसन्ति स्म। अथ कदाचित् जलाशयं दृष्ट्वा गच्छद्भिः मत्स्यजीविभिः उक्तं यद् अहो बहुमत्स्योऽयं ह्रदः कदाचिदपि न अस्माभिः अन्वेषितः। तदद्य तावदाहारवृत्तिः सञ्जाता सन्ध्यासमयः चापि संवृत्तः। अतः श्वः प्रभाते अत्रागत्य मत्स्यसंक्षयं करिष्याम इति।

प्रश्ना :

(1) त्रयाणां मत्स्यानां नामानि लिखत|

उत्तरः : अनागतविधाता, प्रत्युत्पन्नमतिः, यद्भाविष्यः च

(2) मत्स्यजीविनां वचः कीदृशः आसीत्?

उत्तरः मत्स्यजीविनां वचः कुलिशपातोपमं आसीत्|

(3) इदं अव्ययपदं नास्ति?

(क) साम्प्रतं (ख) गम्यताम् (ग) नूनम् (घ) श्वः

6.अर्थान् मेलयत

(क) सरोवरं	(1) श्रुत्
(ख) इमौ	(2) लभेते
(ग) आकर्ण्य	(3) सरः
(घ) मरणम्	(4) उक्तम्
(ङ) प्रातःकाले	(5) एतौ
(च) विचारितम्	(6) मृत्युः
(छ) कथितम्	(7) मन्त्रितम्
(ज) प्राप्नुतः	(8) प्रभात

उत्तरः क-3, ख-5, ग-1, घ-6, ङ-8, च-7, छ-4, ज-2

7.पाठ सार लेखनं|

(i) एकस्मिन् जलाशये अनागतविधाता , प्रत्युत्पन्नमति :, यद्भविष्यः च वसन्ति स्मः ।

(ii) एकदा मत्स्यजीविभिः तत्रागत्य चिन्तितम् , श्वः मत्स्य संक्षयम् करिष्यामः ।

(iii) तेषाम् वचनैः भयभीतौ अनागतविधाता प्रत्युत्पन्नमतिः च रात्रौ एव सपरिवारम् अन्यत्र सरोवरं गतवन्तौ ।

(iv) यद्भविष्यः ततः नागच्छत् , इत्थं यद्भविष्यः विनाशम् आप्नोत्

(v) अनागतविधाता प्रत्युत्पन मतिः च सुखम् एधेते स्म ।

योग्यताविस्तारः

ग्रन्थपरिचयः पञ्चतन्त्र के लेखक पं . विष्णुशर्मा हैं । ऐसा माना जाता है कि दक्षिण भारत के (किसी राज्य में) महिलारोप्य नामक नगर के राजा के मूर्ख पुत्रों को शिक्षित करने के लिए विष्णुशर्मा ने नीतिगत उपदेशों को संगृहीत करके पाँच भागों में विभक्त किया जिनके नाम हैं- मित्रभेदः , मित्रसंप्राप्तिः , काकोलूकीयम् , लब्धप्रणाशः , अपरीक्षितकारकम् । यह अत्यन्त उपयोगी ग्रंथ है । विश्व की लगभग समस्त भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है । इसमें पशु - पक्षियों की कथाओं के माध्यम से गूढ़ नीतियों तथा व्यवहारों की शिक्षा दी गयी है । इस कथाग्रन्थ में अनेक ऐसी कहानियाँ हैं जो व्यक्ति को दूरदर्शी बनने की प्रेरणा देती हैं । संस्कृत के कथासाहित्य के अंतर्गत पञ्चतन्त्र के अतिरिक्त गुणाढ्य का बृहत्कथासरित्सागर , बल्लालसेनरचित भोजप्रबन्धः , वेतालपंचविंशतिः , सिंहासनद्वात्रिंशत्पुत्तलिका तथा हितोपदेश आदि ग्रन्थ प्रमुख हैं ।

पाठ-7

अयोध्यां प्रत्यागमनम्

वाल्मीकि रामायण संस्कृत साहित्य का आदिकाव्य कहा जाता है। धार्मिक एवं नैतिक | मर्यादाओं का आदर इसमें भली प्रकार प्रतिपादित हुआ है। साहित्य समाज का दर्पण है। अतः उस समय के प्राचीन गौरवमय उन्नत विज्ञान के उदाहरण भी इसमें पर्याप्त मात्रा में विद्यमान हैं | रावण को पराजित कर लौटते समय सीता ने विमान को किष्किन्धा नगरी में उतारने की प्रार्थना की ताकि वे सुग्रीव की पत्नी एवम् अन्य प्रमुख जनों को अपने साथ | अयोध्या ले जा सकें। राम ने सीता के इस अनुरोध को सहर्ष स्वीकार किया और उन सबके साथ अयोध्या की ओर प्रस्थान करते हुए मार्ग में उन सभी स्थानों, आश्रमों और नदियों से परिचित करवाया जहाँ पर वे जाते समय रुके थे और जिन उल्लेखनीय घटनाओं की स्मृतियाँ अभी भी उनके मस्तिष्क में विद्यमान थीं। आइये, हम भी आदि कवि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण के युद्धकांड के 123 वें सर्ग में वर्णित इस विमान यात्रा के वर्णन के माध्यम से उन सभी पवित्र स्थलों और नदियों ज्ञान करें।

उद्देश्यानि

इमं पाठं पठित्वा भवान् / भवती
यात्रायां वर्णितानां प्रमुखस्थलानां वर्णनं करिष्यति ;
मानचित्रे सम्बद्धपर्वतानां नदीनां च अङ्कनं करिष्यति ;
यात्रायाः वृत्तं स्वशब्दैः वर्णयिष्यति ;

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1 उपयुक्तम् उत्तरं चिनुत|

(i) त्रिपथगा नदी का वर्तते ?
(क) यमुना
(ख) गंगा
(ग) गोदावरी
(घ) सरयू

उत्तर: **ख**

(ii) आकाशात् रामः सीतां किम् अदर्शयत्?
(क) कबन्धम्
(ख) ऋष्यमूकपर्वतम्
(ग) जटायुम्
(घ) रावणम्

उत्तर: **ख**

(iii) प्रसन्नसलिला का असीत्?
(क) गंगा
(ख) यमुना
(ग) गोदावरी
(घ) पम्पा

उत्तर: **ग**

(iv) कस्या: तीरे शबरी दृष्टा?

(क) गंगातीरे

(ख) यमुनातीरे

(ग) सरयूतीरे

(घ) पम्पातीरे

उत्तर: **घ**

(v) जनस्थाने जटायु: केन हत:?

(क) रावणेन

(ख) रामेण

(ग) लक्ष्मेण

(घ) पम्पातीरे

उत्तर: **क**

2 एकपदेन संस्कृतभाषया उत्तरत|

(i) **अगस्त्यस्य आश्रमः कीदृशैः वृक्षैः वृतः आसीत्?**

उत्तर: कदली वृक्षैः

(ii) **प्रसन्नसलिला का आसीत्?**

उत्तर: गोदावरी

(iii) **सूर्यवैश्वानरसमः कुलपति: क: आसीत्?**

उत्तर: अत्रि:

(iv) **चित्रकूटे कैकयीपुत्रः भरत: कम् प्रसादयितुम् आगतः?**

उत्तर: रामम्

(v) **भरद्वाजस्य आश्रमः कस्याः तीरे आसीत्?**

उत्तर: यमुनाया:

(vi) **दशरथस्य राजधानी का आसीत्?**

उत्तर: अयोध्या

(vii) **ऋष्यमूकः पर्वत: कीदृशैः धातुभिः वृतः आसीत्?**

उत्तर: काञ्चनै:

(viii) **पम्पातीरे राम: काम् अपश्यत् ?**

उत्तर: शबरीम्

(ix) **रावणेन सीता बलात् कुत: हृता?**

उत्तर:पञ्चवट्या:

(x) **कस्मिन् पर्वते रामः सुग्रीवेण सह अमिलत्?**

उत्तर: ऋष्यमूके

(xii) **अयोध्यानगरी कस्याः तीरे विद्यते?**

उत्तर: सरयूतीरे

3 पूर्णवाक्येन उतरत |

(i) इयंस दृश्यते गंगा पूज्या त्रिपथगा नदी, इयं कस्य उक्तिः ? त्रिपथगाया: अपरं नाम किं ?

उत्तर: इयंस दृश्यते गंगा पूज्या त्रिपथगा नदी, इयं रामस्य उक्तिः | त्रिपथगाया: अपरं नाम गंगा|

(ii) रामेणबालिनः वधाय समय: कुत्र कृत: ?

उत्तर: किष्किन्धानगरे

(iii) चित्रकूटे क: कं प्रसादचितुमागतः ?

उत्तर: चित्रकूटे भरत: रामं प्रसादचितुमागतः|

(iv) 'रामायणम्' इति ग्रन्थ: केन लिखित अयोध्यां प्रति आगमनम् इति पाठः कस्मात् काण्डात् संगृहीत: अत्र रामः कस्मात् स्थानात् पुनः विमानेन अयोध्यां प्रति प्रस्थानं करोति ?

उत्तर: 'रामायणम्' इति ग्रन्थ: वाल्मीकेन लिखित अयोध्यां प्रति आगमनम् इति पाठः किष्किन्धाकाण्डात् संगृहीत: अत्र रामः किष्किन्धात स्थानात् पुनः विमानेन अयोध्यां प्रति प्रस्थानं करोति |

4 अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत-

ताभिः सहोत्थितं शीघ्रं, विमानं प्रेक्ष्य राघव:।
ऋष्यमूकसमीपे तु वैदेहीं पुनरब्रवीत्।।

अन्वयः

राघवः __1__ सह शीघ्रम् उत्थितम् __2__ प्रेक्ष्य ऋष्यमूकसमीपे तु __3__ अब्रवीत्|

उत्तर: 1) ताभिः 2) विमानं 3) वैदेहीं

5 अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत-

दृश्यतेऽसौ महान् सीते! सविद्युदिव तोयद:।
ऋष्यमूको गिरिवरः, काञ्चनैर्धातुभिर्वृतः ।।

अन्वयः

सीते! असौ _1__ ऋष्यमूक काञ्चनैः __2__वृतः गिरिवरः विद्युत् __3__ इव दृश्यते।

उत्तर: 1) महान्
2) धातुभि:
3) तोयद:

6 .अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत-

अस्यास्तीरे मया दृष्टा, शबरी धर्मशालिनी|
अत्र योजनबाहुश्च, कबंधो निहतो मया ।।

अन्वयः

अस्याः __ 1 __ मया __ 2__ शबरी दृष्टा। अत्र च __3__ कबन्धः मया निहत। ।

उत्तर: 1) तीरे
2) धर्मशालिनी
3) योजनबाहु

7 .अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत -

एषा सा दृश्यते पम्पा , नलिनी चित्रकानना।
त्वया विहीनो यत्राहं , विललाप सुदुःखितः ।।

अन्वयः

एषा सा च__1__ नलिनी पम्पा __2__ यत्र त्वया विहीन __3__ अहम् विललाप।

उत्तर: 1) चित्रकानना
2) दृश्यते
3) सुदुःखितः

8 .अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रशनान् उत्तरत –

एषा गोदावरी रम्या , प्रसन्नसलिला शुभा।
अगस्त्यस्याश्रमश्चैव, दृश्यते कदलीवृतः ।।

(i) प्रसन्नसलिला का आसीत्?

(ii) **अगस्त्यस्य आश्रमः कीदृशैः वृक्षैः वृतः आसीत्?**

उत्तर: (i) गोदावरी

(ii) क दलीवृक्षै:

9.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रशनान् उत्तरत-

असौ सुतनु! शैलेन्द्रः चित्रकूट: प्रकाशते।
अत्र मां कैकयीपुत्रः प्रसादयितुमागतः

(i) कैकयीपुत्रः कम् प्रसादयितुमागत?

(ii) 'शैलेन्द्रः चित्रकूट:' इत्यत्र किम् विशेषणपदम्?

उत्तर: (i) कैकयीपुत्रः रामम् प्रसादयितुमागत|

(ii) शैलेन्द्रः

10.अधोलिखितानां नदीनां कानिचित् विशेषणानि अस्मिन् पाठे प्रयुक्तानि। नदीभिः सह तानि विशेषणानि मैलयत-

'क' **विशेषणानि**	**'ख'** **नद्य:**
(i) **यूपमालिनी**	**(क) गोदावरी**
(ii) **पूज्या त्रिपथगा नदी**	**(ख) यमुना**
(iii) चित्रकानना	(ग) गंगा
(iv) प्रसन्नसलिला	(घ) सरयू:

उत्तर: (i) - घ , (ii) - ग , (iii) - ख , (iv) - क

योग्यताविस्तारः

काव्यपरिचयः

वाल्मीकि रामायण भारत का राष्ट्रीय आदिकाव्य है । धार्मिक एवं नैतिक मर्यादाओं का यह भण्डार है । आज से सहस्रों शताब्दियों पूर्व भारत के पुरातन युग की जीवित परम्पराओं , धारणाओं , आकांक्षाओं , आदर्शों और भावनाओं का इसमें सजीव चित्रण है । सम्पूर्ण भारत में रामकथा का प्रसार तो था ही , प्राचीन काल में विश्व के अन्य जावा सुमात्रा , बाली आदि द्वीपों में भी रामकथा का बड़ी मात्रा में प्रसार हुआ इसके अतिरिक्त भारत की अनेक आधुनिक भाषाओं के साहित्य भी इससे अनुप्राणित होते रहते हैं , इसीलिए इसे उपजीव्य काव्य भी कहा जाता है ।

पाठ-8

विरहकातरं तपोवनम्

जीवन में वियोग की अवस्था दु : खदायी होती है पर वह और भी अधिक असहनीय हो जाती है जब वह वियोग स्वपालित कन्या से हो । महर्षि कण्व के तपोवन में पली शकुन्तला के पतिगृह जाने पर न केवल उसकी सहेलियाँ , तापसी गौतमी एवं ऋषि कण्व ही दुःखी होते हैं बल्कि आश्रम के पशु , पक्षी , वृक्ष और लताएँ भी शोक से व्याकुल हो उठती हैं । इसका बहुत ही सुन्दर चित्रण महाकवि कालिदास ने अपने प्रसिद्ध नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम् में किया है जिसका एक संक्षिप्त एवं सरलीकृत रूप इस पाठ में संकलित किया गया है । प्राचीन काल में पशु , पक्षी और वनस्पति जगत् भी परिवार के अंग ही होते थे और वे भी अपना हर्ष और शोक परिवार के एक सदस्य की भाँति व्यक्त करते थे इसका सजीव उदाहरण आप प्रस्तुत पाठ में प्राप्त कर सकेंगे ।

उद्देश्यानि

इदं पाठं पठित्वा भवान् / भवती

पाठे प्रयुक्तपात्राणां चरित्रचित्रणं करिष्यति ;

तपोवनस्य वर्णनं स्ववाक्येषु करिष्यति ;

विशेष्यैः सह विशेषणानां संयोजनं करिष्यति ;

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्त

1.संस्कृतभाषया उत्तरत |

(i) के शकुन्तलाया: सख्यौ?

उत्तर: अनसूया प्रियवंदा च |

(ii) शकुन्तला कं प्रणमति?

उत्तर: शकुन्तला कण्वं प्रणमति |

(iii)'सम्राजं सुतम् अवाप्नुहि' इति क: काम् कथयति?

उत्तर: 'सम्राजं सुतम् अवाप्नुहि' इति कण्वं शकुन्तलां प्रति कथयति |

(iv) "दत्तवती' इति शब्दस्य विलोमपदं किम् ?

उत्तर: आदत्तवती

(v)'इमे स्म:' इति के कथयन्ति?

उत्तर: शान्गर्वादय:

2.कः कम् प्रति कथयति?

यथा	क:	कम्
(i) सम्राजं सुतम् आप्नुहि।	कण्वं	शकुन्तलाम्
(ii) भगवन! इमे स्मः |	शिष्या:	कण्वम्
(iii) तात! लताभगिनीं वनज्योत्स्नाम् आमन्त्रयिष्ये |	शकुन्तला	कण्वम्
(iv) को नु खल्वेष में वस्त्रे सज्जते?	शकुन्तला	आत्मगतम्

(v) निवर्तस्व तावत् । शकुन्तला मृगशावकम्

3. विशेष्यैः सह विशेषणानि योजयत-

विशेषणानि	**विशेष्यपदानि**
क. अवसितमण्डना	1 सुतम्
ख. सम्राजं	2 गुरुः
ग. दुरितम् अपघ्नन्तः	3 दृष्टया
घ. वीक्षमाणः	4 शकुन्तला
ङ. आनन्दपरिवाहिन्या	5 वह्नयः

उत्तरः क – 4, ख – 1, ग – 5, घ – 2, ङ – 3

4.अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत –

कण्वः - वत्से! अलं रुदितेन । स्थिरा भव। इतः पन्थानम् आलोकय । अस्मिन् नतोन्न्ते मार्गे ते पदानि विषमीभवन्ति।

शाङ्गरवः- भगवन्! ओदकात्रं स्निग्धो जनोनुगन्तव्यः इति श्रूयते। तदिदं सरस्तीरम् अत्र सन्दिश्य प्रतिगन्तुमर्हति भवान्।

कण्वः - शकुन्तले ! त्वं गुरुन् शुश्रूषस्व, परिजनेषु उदारा भव। समृद्धिषु अगर्विता भव ।।

प्रश्नाः

(क) कण्वः कुत्र स्थित्वा शकुन्तलाम् उपदिशति ?

उत्तरः) कण्वः आश्रमे स्थित्वा शकुन्तलाम् उपदिशति |

(ख) कण्वः शकुन्तलां किमुपदिशति ?

उत्तरः त्वं गुरुन् शुश्रूषस्व, परिजनेषु उदारा भव। समृद्धिषु अगर्विता भव ।।

(ग) 'मार्गे' इति विशेष्यस्य किं विशेषणम् अत्र प्रयुक्तम्?

उत्तरः नतोन्न्ते

5.अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत-

सख्यौ : हला शकुन्तले! अवसितमण्डना असि ।

परिधत्स्व क्षौमयुगलम् (शकुन्तला उत्थाय परिधत्ते) (ततः प्रविशति कण्वः)

गौतमी : जाते! एष आनन्द परिवाहिन्या दृष्ट्या वीक्षमाणः गुरुः उपस्थितः । आचारं तावत् प्रतिपद्यस्व।

शकुन्तला : (सलज्जम्) तात ! वन्दे।

प्रश्ना :

(क) कण्वः कीदृश्या दृष्ट्या शकुन्तलां प्रेक्षते?

उत्तरः कण्वः आनन्द परिवाहिन्या दृष्ट्या शकुन्तलां प्रेक्षते

(ख) गौतमी किं कर्तुम् कथयति ?

उत्तरः आचारं कर्तुम् कथयति

(ग)'परिधत्ते' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम् ?

उत्तरः शकुन्तला

6.अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

सख्यौ :- हला शकुन्तले ! अवसितमण्डना असि। परिधत्स्व क्षौमयुगलम्। (शकुन्तला उत्थाय परिधत्ते) (ततः प्रविशति कश्यपः)

गौतमी:- : जाते ! एष आनन्द परिवाहिन्या दृष्ट्या वीक्षमाणः गुरुः उपस्थितः। आचारं तावत् प्रतिपद्यस्व ।

शकुन्तला:- (सलज्जम्) तात ! वन्दे।

कण्वः : वत्से ! भर्तुः बहुमता भव। सम्राजं सुतम् आप्नुहि।

गौतमी:- भगवन् ! वरः खलु एषः, न आशीः।

कण्वः वत्से ! इतः अग्निं प्रदक्षिणीकुरुष्व। एते वह्नयः दुरितम् अपघ्नन्तः त्वां पावयन्तु। प्रतिष्ठस्व इदानीम्।

प्रश्नाः

(क) का अवसितमण्डना अस्ति?

उत्तर: शकुन्तला अवसितमण्डना अस्ति|

(ख) शकुन्तला किं परिधत्ते?

उत्तर: शकुन्तला उत्थाय परिधत्ते|

(ग) गौतमी कं प्रति आचारं पालयितुं शकुन्तलां कथयति?

उत्तर: गौतमी कण्वं प्रति आचारं पालयितुं शकुन्तलां कथयति |

7.**अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-**

कण्व: कोकिलास्वरेण वृक्षैः अनुमतिः प्रदत्ता |

शकुन्तला : आश्रमपदं परित्यजन्त्याः मे चरणौ दुःखेन पुरतः प्रवर्तते।

प्रियवंदा : न केवलं तपोवनविरहकातरा सखी एव। त्वया उपस्थितवियोगस्य तपोवनस्य अपि तावत् समवस्था दृश्यते।

प्रश्नाः

(क) कोकिल स्वरेण कैः अनुमतिः प्रदत्ता ?

उत्तर: वृक्षैः

(ख) शकुन्तला प्रस्थान समये तपोवन वनस्पतयः कीदृशाः अभवन्?

उत्तर: विरहकातराः तपोवन

8.कण्वंस्य चरित्र चित्रणं लिखत |

1 सः एकः ऋषिः अस्ति।

2 सः शकुन्तला : पालिता ।

3 कण्व : मुनिः शकुन्तलायाः उपदेशं ददाति

4 सः श्रेष्ठ : अस्ति।

5 सः पुत्री वियोगेन दुःखी भवति

योग्यताविस्तारः

लेखकपरिचय

प्रस्तुत पाठ के लेखक महाकवि कालिदास लौकिक संस्कृत साहित्य में ही नहीं पूरे विश्व में अद्वितीय कवि हैं । उनके रघुवंशम् तथा कुमारसम्भवम् ये दोनों अत्यन्त | प्रसिद्ध महाकाव्य हैं । इनकी मेघदूतम् , मालविकाग्निमित्रम् , विक्रमोर्वशीयम् आदि रचनाएँ तो | प्रसिद्ध हैं ही उन सबमें अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक सर्वाधिक प्रसिद्ध है । प्रस्तुत पाठ सुप्रसिद्ध नाटक ' अभिज्ञानशाकुन्तलम् ' के चतुर्थ अंक का संक्षिप्त और सरल रूपान्तर है ।

पाठ—9

भारतीय विज्ञानम्

संस्कृत वाङ्मय ज्ञान - विज्ञान का भण्डार है। भारतीय मनीषियों ने आयुर्वेद , ज्योतिष , खगोल , भूगोल , धातुविज्ञान , गणित , सङ्गीत कृषि विज्ञान , पर्यावरण विज्ञान , रसायन विज्ञान आदि क्षेत्रों में जो वैज्ञानिक आविष्कार किये हैं , वे आज भी आधुनिक वैज्ञानिकों के लिए ऊर्जा के स्रोत हैं। उनमें से वराहमिहिर , ब्रह्मगुप्त , आर्यभट , भारद्वाज , कल्याण वर्मा , मुंजाल , भास्कराचार्य आदि प्रमुख हैं। प्रस्तुत पाठ में हम आर्यभट और भास्कराचार्य की उपलब्धियों को संक्षेपतः जानने का प्रयास करेंगे जिन्होंने आकाशीय पिण्डों , ग्रहों , नक्षत्रों आदि की गति एवं स्थिति का वैज्ञानिक विवेचन प्रस्तुत किया तथा अंकगणित , बीजगणित व रेखागणित के महत्त्वपूर्ण सूत्रों की खोज की।

इन्हीं दोनों वैज्ञानिकों के नाम पर भारतीय उपग्रहों का नामकरण भी किया गया है।

उद्देश्यानि

इमं पाठं पठित्वा भवान्

भारतीयविज्ञानक्षेत्रे आर्यभटस्य महत्त्वं वर्णयिष्यति।

गणितक्षेत्रे भास्कराचार्यस्य योगदानं वर्णयिष्यति ;

लीलावत्याः वैशिष्ट्यं लेखिष्यति ;

तत्पुरुषसमस्तपदानां विग्रहं करिष्यति ; .

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1.अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत –

अद्यापि अनेन प्रतिपादितान् गणित विषयान् आधृत्य देशे विदेशे च सर्वत्र अनुसंधानम् क्रियते ज्योतिर्विज्ञानक्षेत्रे योगदानं प्रशंसन् भारतवर्षे वैज्ञानिकाः भास्कर' इति उपग्रहयानं निर्मितवन्तः।

(क) कैम् विषयमाधृत्य सर्वत्र अनुसंधानम् क्रियते?

उत्तर: ज्योतिर्विज्ञानक्षेत्रे विषयमाधृत्य सर्वत्र अनुसंधानम् क्रियते|

(ख) भास्कराचार्यस्य कस्मिन् विज्ञाने योगदान आसीत् ?

उत्तर: भास्कराचार्यस्य ज्योतिर्विज्ञानक्षेत्रे योगदान आसीत् |

(ग)'भास्कर' इति नामकं उपग्रहयानं के निर्मितवन्तः ?

उत्तर: 'भास्कर' इति नामकं उपग्रहयानं वैज्ञानिकाः निर्मितवन्तः|

2.अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत-

लीलावती भास्कराचार्यस्य पुत्री आसीत्। पुत्री शिक्षमाणः सः तस्याः कृते मनोविनोदं युक्तं गणितं काव्यरूपेण करचयत्। सः पशुपक्षिभ्रमरहंसादिमाध्यमेन गणितस्य जटिलप्रश्नान् अरचयत् तेषां समाधानं चापि अकरोत्। अतोऽयं ग्रन्थ: लीलावती इति नाम्ना प्रसिद्धः

प्रश्नाः

(1) भास्कराचार्य: कं ग्रन्थमरचयत् ?

उत्तर: लीलावती

(2) 'लीलावती' कस्य पुत्री आसीत् ?

उत्तर: 'लीलावती' भास्कराचार्यस्य पुत्री आसीत्

(3) भास्कराचार्य: गणितस्य प्रश्नान् केषां माध्यमेन रचितवान् ?

उत्तर : सः पशुपक्षिभ्रमरहंसादिमाध्यमेन गणितस्य जटिलप्रश्नान् अरचयत्|

3.अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत-

भारतवर्षः प्रात कालादेव ज्ञानविज्ञानयोः उर्वरा भूमि: आसीत्। को न जानाति. आर्यभटम् यश नाम्ना भारतेन उपग्रहयानं निर्मितम्। आर्यभट: क: ? ज्योतिर्विज्ञः, ग्रहगतिकथनपटुः गणितजः। अस्य जन्म 476 ख्रिष्टाब्दे अभूत्। 'आर्यभटीयम्' तेन रचितः प्रसिद्धः ग्रन्थ: अस्ति। ग्रन्थोऽय चतुर्षु पादेषु 121 श्लोकेषु च विभक्त: अस्ति।

प्रश्नाः

(1) आर्यभट्टस्य जन्म कदा अभूत् ?

(2) आर्यभट्टेन कः ग्रन्थः रचित ?

उत्तर: (1) 476 ख्रिष्टाब्दे

(2) आर्यभटीयम्

4.प्रश्नानाम् उत्तरं संस्कृतेन लिखत

(क) आर्यभटस्य जन्म कदा अभवत्?

उत्तर: 476 ख्रिष्टाब्दे

(ख) आर्यभटेन क: ग्रन्थ: विरचित:?

उत्तर: आर्यभट्टीयम्

(ग) आर्यभटः केषां शास्त्राणां नियमान् स्पष्टीकृतवान्?उत्तर: अंकगणितस्य बीजगणितस्य रेखागणितस्य नियमाः स्पष्टीकृताः ।

(घ) आर्यभटः कस्याः पद्धत्याः आविष्कार कृतवान् ?

उत्तर :दशमलव पद्धत्याः

(ड) कः सर्वप्रथमं उद्घोषयति यत् सूर्यादीनां सञ्चारः भ्रममूलः तथा पृथ्वी परिभ्रमति?

उत्तर: आर्यभटः सर्वप्रथमं उद्घोषयति यत् सूर्यादीनां सञ्चारः भ्रममूलः तथा पृथ्वी परिभ्रमति|

5.पाठमाधृत्य प्रश्नान् उत्तरत।

(क) आर्यभटेन रचितः ग्रन्थ: क:?

उत्तर: आर्यभटीयम्

(ख) सूर्यादीनां सञ्चारः कीदृशः?

उत्तर:भ्रममूल:

(ग) भास्कराचार्य: कदा जात:?

उत्तर:द्वादशशताब्दयाम:

(घ) भास्कराचार्येण काव्यरूपेण मनोविनोदयुक्तं किं रचितम्?

उत्तर: गणितम्

(ङ) पृथिवी कं परितः परिभ्रमति?

उत्तर: सूर्यम्

(च) केषां स्वप्रकाशता नास्ति?

उत्तर: ग्रहाणां

6,**रेखांकितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत|**

(i) **<u>लीलावती</u>** भास्कराचार्यस्य पुत्री आसीत्।

उत्तर: का भास्कराचार्यस्य पुत्री आसीत्?

(ii) **<u>सिद्धान्तशिरोमणे:</u>** प्रथमभागस्य नाम लीलावती अस्ति।

उत्तर: कस्य प्रथमभागस्य नाम लीलावती अस्ति?

(iii) स: **<u>ग्रन्थान्</u>** प्रणीतवान्।

उत्तर: स: कान् प्रणीतवान्।

(iv) सः **<u>गणितस्य</u>** जटिलप्रश्नान् स्पष्टीकृतवान्।

उत्तर: सः कस्य जटिलप्रश्नान् स्पष्टीकृतवान्।

7. भास्कराचार्यस्य जीवनपरिचयं लिखत –

(i) भास्कराचार्य: द्वादशशताब्द्यां जात:।

(ii) 'सिद्धान्तशिरोमणिः' अस्य सर्वप्रसिद्धा कृति:।

(iii) सः प्रसिद्धः ज्योतिर्विद् गणिताचार्य: च आसीत्।

(iv) लीलावती भास्कराचार्यस्य पुत्री आसीत् ।

(v) स: कथयति यत् इयं पृथिवी कदम्ब इव गोलाकारा।

8.आर्यभटस्य जीवनपरिचयं लिखत –

(i)आर्यभट: 476 ख्रिष्टाब्दे जात:।

(ii)' आर्यभटीयम्' तेन रचित: प्रसिद्ध: ग्रन्थ: आसीत्|

(iii) सः प्रसिद्धः ज्योतिर्विद् गणिताचार्य: च आसीत्।

(iv) आर्यभट: दशमलव: पद्धत्या: आविष्कारं कृतवान्|

(v) स: कथयति यत् पृथ्वी सूर्यम् परित: परिभ्रमति|

9.शब्दार्था:

ख्रिष्टाब्दे - ईसवी वर्ष मे

प्राक्तनकालादेव – प्राचीन काल से ही

भ्रममूल: - भ्रम का परिणाम है

शिक्षमाण: - शिक्षा देते हुए

गणितज्ञ: - गणित का विशेष ज्ञाता

10 .केषाञ्चन चतुर्णाम् ज्यातिर्विदां नामानि लिखत।

उत्तर: वराहमिहिरः ब्रह्मगुप्त:, मुंजाल:, महावीराचार्य:, दुर्गदेवः, राजादित्यः इत्यादयः

योग्यता विस्तारः

आर्यभट्- आर्यभट का जन्म पटना के पास कुसुमपुर में हुआ था । महान् गणितज्ञ और खगोलज्ञ आर्यभट आज पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं । इनके ग्रंथ आर्यभटीयम् पर 20 से अधिक टीकाएँ उपलब्ध हैं । आर्यभटीयम् का पहला पाद ' दशगीतिका ' है

भास्कराचार्य

भास्कराचार्य ज्योतिषशास्त्र तथा गणित के प्रकाण्ड विद्वान् थे । ' सिद्धांतशिरोमणि ' इनका प्रमुख ग्रंथ है जिसका आधार ब्रह्मगुप्त और पृथूदकस्वामी के सिद्धांत हैं । इसकी शैली की सरसता के कारण यह अत्यन्त लोकप्रिय है । इसका रचनाकाल 1150 ई . है । इनका जन्म शक संवत् 1036 में यानी 1114 ई . में हुआ ।

पाठ-10

प्रहेलिकाः

प्रहेलिका पहेली को कहते हैं। पहेली से आप सब परिचित हैं। यह ज्ञानवर्द्धन के साथ ही मनोरंजन का भी साधन है। अन्य भाषाओं की भाँति संस्कृत में भी यह शब्दों के साथ खेलने और गोष्ठियों में अपनी बुद्धिमत्ता प्रदर्शित करने का साधन रही है। पहेलियों में जान - बूझ कर ऐसे प्रश्न रखे जाते हैं जिससे सामने वाले की बुद्धि की परीक्षा हो सके। इसलिए प्रहेलिका का एक अर्थ है- कूटार्थप्रश्न , अर्थात् पेचीदे अर्थ के विषय में प्रश्न। इसमें पद्यों में कहीं एक अक्षर हटाकर , कहीं अक्षर बदल कर , तो कहीं अतिरिक्त अक्षर डाल कर प्रश्न किए जाते हैं।

उद्देश्यानि

इमं पाठं पठित्वा भवान् / भवती
स्वशब्दकोशे वृद्धिं करिष्यति ;
प्रहेलिकानाम् उत्तरं लेखिष्यति ;
गद्येन प्रहेलिकाः प्रक्ष्यति ;

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1 उचितम् उत्तर चीयताम्-

(i) कृष्णः के जघान:?
(क) महिषासुरम् (ख) मारीचम् (ग) घटोत्कचम् (घ) कंसम्

उत्तर: **घ**

(ii) क: हर्षम् उपागतः?
(क) कौरवा: (ख) केशव: (ग) द्रोणः (घ) शृगाल:

उत्तर: **ग**

(iii) शूलपाणि: इति कः कथ्यते?
(क) विष्णु: (ख) शिवः (ग) इन्द्रः (घ) सूर्य:

उत्तर: **ख**

(iv) जयन्तः कस्य सुतः?
(क) लक्ष्म्याः (ख) रामस्य (ग) इन्द्रस्य (घ) वरुणस्य

उत्तर: **ग**

2.**अधोलिखितप्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत-**

(i) कौरवाः किं कुर्वन्ति?
उत्तर: रुदन्ति

(ii) घटः किं धारयति?
उत्तर: जलम्

(iii) सर्वदेवानां क: वन्दनीयः?
उत्तर: मृत्युञ्जय: (शिव:)

(iv) क: कमलानि विकासयति?
उत्तर: सूर्य:

(v) के मित्रस्य उदये प्रसन्ना: भवन्ति?

उत्तर: सज्जना:

(vi) पद्मानि क: प्रबोधयति?

उत्तर: सूर्योदय:

(vii) सर्वदेवानां वन्द्यः कः अस्ति?

उत्तर: शिव:

(viii) के जनं शीतं न बाधते?

उत्तर: कम्बलवन्तं

(ix) विद्वद्भिः सदा वन्द्या का?

उत्तर: विद्या

(x) सीताया: पति: क: आसीत्?

उत्तर: राम:

(xi) सूर्य: कं नाशयति?

उत्तर: अन्धकारं

(xii) शिवस्य कति नेत्राणि भवन्ति?

उत्तर: त्रीणि

(xiii) तक्र कस्य अन्ते पेयम्?

उत्तर: भोजनस्य

(xiv) इन्द्रः कस्य पिता?

उत्तर: जयन्तस्य

(xv) दुर्लभपदं किं प्रोक्तम्?

उत्तर: विष्णुपदम्

(xvi) कंस क: हतवान् ?

उत्तर: कृष्ण:

(xvii) कम्बलवन्तं कि न बाधते?

उत्तर: शीतं

3. अधोलिखितं पद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उतरत-

अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः ।
अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डितः ।।

(i) दूरं गच्छति इति कृते किं पदमत्र प्रयुक्तम् ?

(ii) निरक्षरः इत्यस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम् ?

(iii) अस्मिन् श्लोके किं क्रियापदम् ?

उत्तर: (i) पत्रम्

(ii) साक्षर:

(iii) जानाति

4.**अधोलिखितं पद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उतरत-**

किमिच्छन्ति नराः काश्यां भूपानां को रणे हितः।

को वन्द्यः सर्वदेवानां   दीयतामेकमुत्तरम्।॥

(i) जना: काश्यां किमिच्छन्ति?

(ii) युद्धे राज्ञां हितकरं किम् ?

उत्तर: (i) मृत्युम्

(ii) जयः

5.अधोलिखितं पद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उतरत-

भोजनान्ते च कि पेयं जयन्तः कस्य वै सुत:।

कथं विष्णुपदं प्रोक्तं तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्।।

(i) भोजनान्ते किम् पेयं?

(ii) जयन्तः कस्य सुत: ?

उत्तर: तक्रं इन्द्रस्य

6.अधोलिखितं पद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उतरत-

सीमन्तिनीषु का शान्ता राजा कोऽभूद् गुणोत्तम: ।

विद्वद्भि: का सदा वन्द्या अत्रैवोक्तं न बुध्यते।॥

(i) सीमन्तिनीषु का शान्ता?

(ii) गुणोत्तम: राजा क: ?

उतर: (i) सीता

(ii) राम:

7.अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत -

भोजनान्ते च कि पेयं जयन्तः कस्य वै सुत:।

कथं विष्णुपदं प्रोक्तं तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्।।

अन्वयः

भोजनान्ते च किं पेयम्? __1__ वै कस्य सुतः? विष्णुपदं कथं __2__ ? तक्रं शक्रस्य (अपि) __3__(भवति)।

उत्तर: (1) जयन्तः

(2) प्रोक्तं

(3) दुर्लभम्

8.अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत –

वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजस्त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणिः।

त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्धयोगा जलं च विभत् न घटो न मेघ:॥

अन्वयः

वृक्षाग्रवासी न च _1__, त्रिनेत्रधारी शूलपाणि: च न, _2__ न च सिद्धयोगी. जलं च बिभ्रत् घट: न __3__ न।

उत्तर: (1) पक्षिराज:

(2) त्वग्वस्त्रधारी

(3) मेघ:

9.अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत –

आनन्दयति कोऽत्यर्थ सज्जनानेव भूतले।
प्रबोधयति पद्मानि तमासि च निहन्ति क: ||

अन्वयः

क: __1__ सज्जनान् अत्यर्थम् __2__ एव? क: पद्मानि _3__ तमांसि च निहन्ति?

उत्तर: (1) भूतले

(2) आनन्दयति

(3) प्रबोधयति

10.अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत –

अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः ।
अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डितः ॥

अन्वयः

अपदः _1__ च, साक्षरः च _2__ न अमुखः (अपि) स्फुटवक्ता च य: __3__ सः पण्डितः।

उत्तर: (1) दूरगामी

(2) पण्डितः

(3) जानाति

योग्यता विस्तारः

प्राचीन काल से आज तक पहेलियाँ सभी वर्गों के लोगों में मनोरंजन के साथ - साथ बौद्धिक व्यायाम का माध्यम रही है । ऋग्वेद , महाभारत आदि ग्रंथों में दार्शनिक प्रतीकों का पहेली की भाषा में प्रयोग हुआ है । महाभारत में उत्तंक कुछ विचित्र दृश्यों के बारे में अपने गुरु से प्रश्न करते हैं तो गुरु उन्हें बताते हैं- " जो दो स्त्रियाँ तुमने देखीं वे धाता और विधाता हैं । वे जिन काले और सफेद धागों से कपड़ा बुन रही थीं वे रात और दिन हैं । बारह अरों से युक्त जिस चक्र को छह कुमार घुमा रहे थे वे संवत्सर हैं ।

पाठ -11

रचनाकौशलम्

सुनना , बोलना , पढ़ना और लिखना भाषा के चार कौशल हैं जिनमें से हम बोल कर या लिख कर ही अपने विचारों की अभिव्यक्ति कर पाते हैं । लेखन कौशल को विकसित करने के लिए हमारे पास पर्याप्त शब्द भण्डार होना चाहिए । इसी के साथ हमें यह भी ज्ञात होना चाहिए कि वाक्य के लिखने में कौन - कौन से आवश्यक तत्त्व हैं जैसे कर्ता - क्रिया की अन्विति , विशेष्य - विशेषण की अन्विति इत्यादि । रचना कौशल को बढ़ाने वाले विभिन्न माध्यमों के मध्य चित्र वर्णन हमारी लिखित अभिव्यक्ति को सशक्त करने में सहायता प्रदान करता है और चित्र - वर्णन के अभ्यास हमें भाषिक तत्त्वों से परिचित कराते हैं । इस पाठ में हम चित्रों के माध्यम से शब्द भण्डार में वृद्धि करेंगे और वाक्यों में चित्रों का वर्णन करने का प्रयास भी करेंगे ।

उद्देश्यानि

भवान् अस्मिन् पाठे रचनाकौशलस्य विकासार्थं
चित्राणि दृष्ट्वा तेषामधः संस्कृतनामानि लेखिष्यति ।
प्रदत्तशब्दानां सूच्या : साहाय्येन चित्राणां वर्णनम् करिष्यति । चित्रानुसारं वाक्येषु अव्ययपदानां संयोजनम् करिष्यति ।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1.अधोलिखितानि वाक्यानि प्रदत्तशब्दैः पूरयत

1. एषा मम .... अस्ति
2. अहम् .... भोजनं पचामि।
3. अहम् .... ओदनं खादामि।
4. त्वम् .... अपूपान् पचसि।
5. सा .... रोटिकां निदधाति।
6. त्वम् .... भोजनं करोषि
7. सः .... चायं पिबति
8. एषः ....शाकम् चालयति।
9. सः .... जलेन पूरयति।
10. बालिका .... पात्रं धारवति।

उत्तर:
गैसचुल्लेन, कटाहे, स्थाल्याम्, चषकेन. चमसेत, दव्या, घटम्, उत्थापकेन, भाण्डे, द्रोणिः।

2.वाक्यानि पूरयत-

1. .... वस्त्राणि सीव्यति।
2. .... मृत्तिकापात्राणि रचयति।
3. ....मिष्टान्नानि पचति।
4. .... पत्राणि आनयति।
5. ....चिकित्सालये शल्यक्रियां करोति

6. ....भोजनं पचति।
7. ....न्यायालये पक्ष स्थापयति।
8. ....कृषिकार्य करोति ।
9. .... यानं चालयति।
10. ....उद्याने वृक्षान् रोपयति।
11......................विद्यालये पाठयति।

मञ्जूषा:
चिकित्सकः , सूदः , पत्रवाहकः , शिक्षकः , कुम्भकारः , यान-चालकः वाक्कीलः , सौचिकः , मालाकारः , कृषकः , कान्दविकः

3.तालिकां पूरयत-

यथा

1.	एकः सिंहः	द्वौ सिंहौ	अनेके सिंहाः
2.	एकः वानरः	द्वौ..........	अनेके.......
3.	एकः महिषः	द्वौ.........	अनेके...........
4.	एकः अजः	....	....
5.	एकः कुक्कुरः	....	....
6.	एकः भल्लूकः	....	....
7.	एकः शशकः	....	....
8.	एकः मकरः	....	....
9.	एक मार्जारः	....	....
10.	एकः व्याघ्रः	....	....

4.अधोलिखितां तालिका पूरयत-

यथा

1. एकः मयूरः (मोर)	द्वौ मयूरौ	अनेके मयूराः
2. एकः शुकः (तोता)	द्वौ...........	अनेके.........
3. एकः कुक्कुटः (मुर्गा)	द्वौ...........	अनेके........
4. एकः काकः (कौआ)	....	....
5.एकः कपोतः (कबूतर)	....	....
6.एकः बकः (बगुला)	....	....
7.एकः चिल्लः (चील)	....	....
8.एकः गृध्रः (गिद्ध)	....	....
9.एकः कोकिलः (कोयल)	....	....
10.एकः चटकः (चिड़ा)	....	....

5.चित्राणि दृष्ट्वा अव्ययप्रयोगसहितानि वाक्यानि लिखत

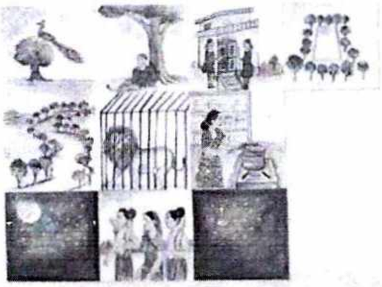

1.मयूर: वृक्षस्य उपरि उपविशति।

2. पथिक: .... तिष्ठति।

3. द्वारपालौ भवनात् ....

4. सरोवरम् .... वृक्षा: सन्ति।

5. नदीम् .... वृक्षा: सन्ति।

6. पिन्जरस्य ....

7. सीता रामेण .... वनम् .... ।

8. प्रकोष्ठस्य .... अग्निः ज्वलति।

9. आकाश: चन्द्रेण .... शोभते।

10. आकाशः चन्द्रं .... न शोभते।

मञ्जूषा	अन्तः, उभयतः, परितः, सह, विना, उपरि, अधः, बहिः, प्रति।

6.अधोलिखितवाक्येषु उचितं वाक्यं चित्वा चित्राणाम् अधः लिखत।

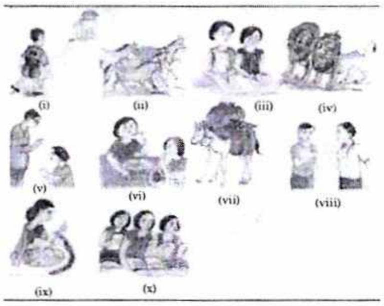

सहायता सूची

1. अश्वा: धावन्ति ....
2. बालकौ कदलीफलं खादतः। ....
3. सिंहौ गर्जतः.................
4. छात्रः विद्यालयं गच्छति। ....
5. गर्दभौ: भारं वहन्तः...................
6. बालिका आचार्य नमति। ....
7. बालिका: पुस्तकं पठन्ति। ....
8. बालिके पत्रं लिखत:। ....
9. बालिके भोजनं कुरुत:। ....
10. महिला माला रचयति। ....

पाठ-12

यक्ष - युधिष्ठिर - संवादः

एक बार पाण्डव वन में घूमते हुए प्यास से व्याकुल वट वृक्ष की छाया में बैठे हुए थे। तभी युधिष्ठिर ने नकुल को जल लाने के लिए भेजा। नकुल ने एक सुन्दर सरोवर पर पहुँचकर ज्योंही पानी पीना चाहा , त्योंही एक आवाज आई , तुम पहले मेरे प्रश्नों का उत्तर दो , पश्चात् जल ग्रहण करो , किन्तु उस वचन की उपेक्षा कर पानी पीने से नकुल वहीं मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। बहुत देर तक प्रतीक्षा के बाद भी जब नकुल पानी लेकर नहीं तब युधिष्ठिर ने एक एक कर सहदेव , अर्जुन और भीम को पानी लाने के लिए भेजा किन्तु कोई भी वापस नहीं आया। अन्त में युधिष्ठिर स्वयं गए। वहाँ जलाशय के तट पर मूर्च्छित पड़े अपने अनुजों को देखकर युधिष्ठिर बहुत दु : खी हुए। तभी आकाशवाणी हुई- यक्ष हूँ , पहले मेरे प्रश्नों का उत्तर दो , बाद में जल पीना , अन्यथा तुम्हारी भी यही दशा होगी। " इसके युधिष्ठिर ने यक्ष के सभी प्रश्नों का विद्वत्तापूर्ण उत्तर दिया। इस पाठ में आप उन्हीं प्रश्नों में से कुछ अत्यद्भुत प्रश्न और उत्तर पढ़ेंगे।

उद्देश्यानि

इमं पाठं पठित्वा भवान् / भवती .

यक्षस्य प्रश्नानाम् उत्तराणि बोद्धुं लेखितुं च समर्थः भविष्यति ;

पाठगतप्रश्नानाम् उत्तरैः सह मेलनं करिष्यति ;

वाक्येषु क्रियापदैः सह कर्तृपदं योजयिष्यति ;

प्रश्नवाचक - सर्वनामपदानां चयनं करिष्यति ;

विशेषण - विशेष्यान्वितिं कर्तुं शक्ष्यति।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1 उपयुक्तम् उत्तरं चिनुत |

(i) भूमेः गुरु तरा का अस्ति ?

(क) नदी

(ख) सरिता

(ग) माता

(घ) गङ्गा

उत्तर: **ग**

(ii) दिनस्य अन्ते रात्रौ किं पिबेत्?

(क) जलम्

(ख) दुग्धम्

(ग) नारिकेलजलम्

(घ) तक्रम्

उत्तर: **ख**

(iii) वायोः अधिकं गतिशीलम् किमस्ति ?

(क) मित्रम्

(ख) मनः

(ग) मुखम्

(घ) सहिष्णुत्वम्

उत्तर: **ख**

(iv) यक्षयुधिष्ठिरसंवादानुसारं किं हित्वा प्रियः भवति ?

(क) क्रोधम्

(ख) मानम्

(ग) कामम्

(घ) लोभम्

उत्तर: **ख**

(v) किंस्वित् गृहे मित्रम्?

(क) भार्या

(ख) माता

(ग) पिता

(घ) खात्

उत्तर: **क**

2. प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषायां एकपदेन लिखत।

(1) भूमेः गुरुतरं किम्?

उत्तर: माता

(2) आकाशात् उच्चतरं किम् ?

उत्तर: पिता

(3) वायोः शीघ्रतरं किम्?

उत्तर: मन:

(4) किंस्वित् गृहे मित्रम्?

उत्तर: भार्या

(5) रोगिण: किम् मित्रम्?

उत्तर: वैद्य:

(6) मरिष्यत: किम् मित्रम् ?

उत्तर: दानम्

(7) किं हित्वा अर्थवान् भवति?

उत्तर: लोभ:

(8) सुदुर्जयः शत्रुः क: अस्ति?

उत्तर: क्रोध:

(9) निर्दयः कः स्मृतः?

उत्तर: असाधु:

(10) नर: कि हित्वा सुखी भवेत् ?

उत्तर: मानं

(11) तप: किं भवति?

उत्तर: स्वधर्मवर्तित्वम्

(12) दमः कः प्रकीर्तितः?

उत्तर: मनस: दमनम्

(13) साधुः कीदृशः भवति?

उत्तर: सर्वभूतहित:

(14) पुंसाम् सुदुर्जयः शत्रु: क:?

उत्तर: क्रोध:

(15) ह्री: का कथ्यते?

उत्तर: अकार्यनिवर्तनम्

(16) अनन्तक: व्याधि: क: अस्ति?

उत्तर: लोभ:

3.रेखांकितपदम् आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(i) सार्थः प्रवसतः मित्रम्।

उत्तर: किंस्वित् प्रवसतः मित्रम्?

(ii) मनः शीघ्रतरं वातात्।

उत्तर: किंस्वित् शीघ्रतरं वातात्?

(iii) भार्या गृहे मित्रम्।

उत्तर: का गृहे मित्रम्।

(iv) मरिष्यत: मित्रम् दानम्।

उत्तर: किंस्विद्

(v) आकाशात पिता उच्चतर:।

उत्तर: आकाशात क: उच्चतर:?

(vi) दानम् मरिष्यत. मित्रम।

उत्तर: दानम् मरिष्यत किंस्वित्?

(vii) दुन्द्रसहिण्णुत्वं क्षमा॥

उत्तर: दुन्द्रसहिण्णुत्वं का?

(viii) पुंसाम दुर्जय: शत्रु: क्रोधः।

उत्तर: केषाम् दुर्जय: शत्रु: क्रोधः?

(ix) सर्वभूतहित: साधु: कथ्यते।

उत्तर: कीदृशः : साधु: कथ्यते?

4.अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत –

किन्नु हित्वा प्रियो भवति, किन्नु हित्वा न शोचति ।
किन्नु हित्वाऽर्थवान् भवति, किन्नु हित्वा सुखी भवेत्।।

अन्वयः-

(नरः) किम् नु __1__ प्रियः भवति, किम् नु हित्वा न __2__, किम् नु हित्वा अर्थवान् भवति, किम् नु हित्वा __3__ भवेत्।।

उत्तर: (1) हित्वा
(2) शोचति
(3) सुखी

5.अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत –

सार्थ: प्रवसतो मित्रं भार्या मित्रं गृहे सतः।।
आतुरस्य भिषङ् मित्रं दानं मित्रं मरिष्यतः ॥

अन्वयः-

प्रवसतः __1__ मित्रम् (भवति), गृहे सतः मित्रम् __2__(भवति), आतुरस्य मित्रम् भिषक् (भवति), मरिष्यतः च मित्रम् __3__ (भवति)।

उत्तर: (1) सार्थः , (2) भार्या , (3) दानं

6.अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत –

किस्विद् गुरुतरं भूमेः किस्विदुच्चतरं च खात्।
किस्विच्छीघ्रतरं वायोः किंस्विद् बहुतरं तृणात्।।

अन्वयः-

भूमेः गुरुतरम् किंस्वित्, __1__च उच्चतरम् किंस्वित्, __2__ शीघ्रतरम् किस्वित्, किंस्वित् (च) __3__ बहुतरम् (अस्ति) ।

उत्तर: (1) खात्

(2) वायोः

(3) तृणात्

7.अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत –

माता गुरुतरा भूमेः खात् पितोच्चतरस्तथा।
मनः शीघ्रतरं वाताच्चिन्ता बहुतरी तृणात्।॥

अन्वयः-

भूमेः गुरुतरा _1__, तथा खात् उच्चतरः पिता, __2__ शीघ्रतरम् मनः, तृणात् __3__ चिन्ता (भवति)।

उत्तर: (1) माता

(2) वातात्

(3) बहुतरी

8.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

माता गुरुतरा भूमेः खात् पितोच्चतरस्तथा।
मनः शीघ्रतरं वातात् चिन्ता बहुतरी तृणात् ।॥

(क) भूमेः अपि गुरुतरा का?

(ख) मनः कस्मात् शीघ्रतरं प्रचलति?

(ग) 'खात्' इत्यस्य पदस्य कः अर्थः ?

उत्तर: (क) माता

(ख) वातात्

(ग) आकाश

9.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

तपः स्वधर्मवर्तित्वं मनसो दमनं दमः

इत्यत्र (i) स्वधर्मस्य दृढतया पालनं किम् उच्यते ?

(ii) मनसः वशीकरणं किमुच्यते ?

उत्तर: (i) तपः

(ii) दमः

10.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत

मानं हित्वा प्रियो भवति, क्रोधं हित्वा न शोचति ।
कामं हित्वाऽर्थवान् भवति, लोभं हित्वा सुखी भवेत्।।

(i) नरः किम् हित्वा प्रिय भवति?

(ii) नर: किम् हित्वा सुखी भवेत्?

उत्तर: (i) मानं

(ii) लोभं

11.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

क्रोध: सुदुर्जयः शत्रुर्लोभो व्याधिरनन्तकः।
सर्वभूतहितः साधुरसाधुर्निर्दयः स्मृतः। ॥

(i) अनन्तक: व्याधि: क: अस्ति?

(ii) साधु: कीदृश: भवति?

उत्तर: (i) लोभ:

(ii) सर्वभूतहित

12.अधोलिखितपदेषु विशेषणपदानि विशेष्यपदानि पृथक्कृत्य संबद्धस्तम्भे लिखत।

	विशेषणम्	**विशेष्यम्**
(1)गुरुतरामाता	गुरुतरा	माता
(2) उच्चतर: पिता	उच्चतर:	पिता
(3) बहुतरी चिन्ता	बहुतरी	चिन्ता
(4) शीघ्रतरं मनः	शीघ्रतरं	मनः

13.शब्दार्था:

(क) खात् – आकाश से

(ख) आतुरस्य – रोगी का

(ग) हित्वा – छोड़कर

(घ) ह्री: - लज्जा

(ङ) कीदृशः - कैसा

योग्यताविस्तारः

ग्रन्थ - परिचयः

' महाभारतम् ' महर्षि व्यास द्वारा रचित एक सुंदर महाकाव्य है , इसमें अठारह पर्व हैं । इस महाकाव्य में इस समय एक लाख श्लोक हैं । इसे ' शतसाहस्री ' भी कहते हैं । ' गीता ' महाभारत का ही अंश है । महाभारत में कौरवों एवं पांडवों के युद्ध का वर्णन है । फिर भी इसका मुख्य रस शान्त रस है । युद्ध केवल दुर्योधन के द्वारा किए जा रहे अधर्म का नाश करने के लिए किया गया है । जब युद्ध अपरिहार्य हो जाए तभी युद्ध करना चाहिए । अन्यथा युद्ध से मानवता का विनाश हो जाता है । केवल युद्ध ही नहीं महाभारत सभी प्रकार के ज्ञान से परिपूर्ण है । इस के बारे में कहा जाता है- " यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित् '' । प्रस्तुत पाठ अरण्यपर्व के अध्याय 312 ' यक्ष युधिष्ठिर संवादः ' से संकलित है ।

कवि परिचयः- महर्षि वेद व्यास का नाम कृष्ण द्वैपायन भी है । यह महर्षि पराशर के पुत्र थे । इनकी माता का नाम सत्यवती था । इन्हें अठारहों पुराणों का रचयिता भी माना जाता है ।

पाठ-13

करुणापरा हि साधवः

बच्चो ! आपने भगवान बुद्ध का नाम सुना ही होगा । 'जातकमाला' में इन्हीं भगवान बुद्ध के पूर्वजन्मों के आख्यान संगृहीत हैं जिनमें उनका नाम सर्वत्र 'बोधिसत्त्व' प्रसिद्ध है । प्रस्तुत पाठ में बताया गया है कि महात्मा लोगों का ऐश्वर्य व अधिकार सम्पन्नता तथा विपन्नता में भी उनकी जीवों के प्रति अनुकम्पा को शिथिल नहीं करते । एक बार बोधिसत्त्व संयम , करुणा , परोपकारादि गुणों से सम्पन्न देवताओं के राजा इन्द्र हुए । उन्होंने विपत्ति में भी अपने स्वयं के जीवन की रक्षा की अपेक्षा 'गरुड़' पक्षी के बच्चों की रक्षा को अधिक महत्त्व दिया । महापुरुषों का हृदय करुणा से परिपूर्ण होता है । अतः हमें भी सभी जीवों पर करुणा करनी चाहिये ।

उद्देश्यानि

इमं पाठं पठित्वा भवान् / भवती
पाठस्य कथायाः सारं लेखितुं समर्थः भविष्यति
कथावाक्यानि घटनाक्रमेण पुनर्व्यवस्थापयिष्यति ;
शक्रस्य चरित्रचित्रणं करिष्यति ;

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1.उपयुक्तम् उत्तरं चिनुत|

(i) खगालयाः कीदृशैः पक्षिशावकैः युक्ताः ?

(क) जातपक्षैः
(ख) चलनोन्मुखैः
(ग) अजातपक्षैः
(घ) पक्षहीनैः

उत्तर: ग

(ii) विविधायुधैः सुसज्जितः महासत्त्वः' इत्यत्र किं विशेषणपदम् ?

(क) विविधायुधैः
(ख) महासत्त्वः
(ग) सुसज्जितः
(घ) सज्जितः

उत्तर: ग

(iii) शक्रस्य सारथि: नाम किम्?

(क) सूर्य:
(ख) चन्द्र:
(ग) दैत्य:
(घ) मातलि:

उत्तर: घ

(iv) कस्य प्रासादे राजलक्ष्मी: शशिन: प्रभेव अधिकम् अराजत?

(क) शक्र:
(ख) मातलि:

(ग) दैत्यगण:

(घ) चन्द्र:

उत्तर: क

(v) बोधिसत्व: कस्य कृते प्रयुक्तं?

(क) चन्द्रस्य

(ख) शक्रस्य

(ग) दैत्यस्य

(घ) सूर्यस्य

उत्तर: ख

4 अधोलिखितगद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उतरत-

ततोऽसुराः पुरायान्तं तस्य देवेन्द्रस्य रथं विलोक्य तत्पराक्रमस्य अतिशयसंभावनयाभयाकुलाः प्रणतिं गताः। अनन्तरम् सहर्षलज्जैः देवैः सत्क्रियमाणः जयश्रिया अलङ्कृतः शक्रः स्वपुरम् अगच्छत्।

(i) कस्य रथं विलोक्य असुराः भयाकुलाः प्रणतिं गताः?

(ii) देवैः कः सत्क्रियमाणः स्वपुरम् अगच्छत् ?

(iii) कीदृशैः देवैः शक्रः सत्क्रियमाणः आसीत् ?

उत्तर: (i) देवेन्द्रस्य रथं विलोक्य असुराः भयाकुलाः प्रणतिं गताः|

(ii) देवैः जयश्रिया अलङ्कृतः सत्क्रियमाणः जयश्रिया अलङ्कृतः शक्रः स्वपुरम् अगच्छत्।

(iii) सहर्षलज्जैः देवैः सत्क्रियमाणः जयश्रिया अलङ्कृतः शक्रः स्वपुरम् अगच्छत्।

5 अधोलिखितगद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उतरत-

एकदा बोधिसत्त्व: स्वपुण्यप्रभावात् दानसंयमकरुणादिभिः गुणैरलङ्कृतः देवानामधिपः शक्र: अभवत्। तस्य प्रासादे राजलक्ष्मी: शशिन: प्रभेव अधिकम् अराजत। नानासुखभोगसमन्वितोऽपि लक्ष्मीः तस्य हृदयं दर्पमलिनं नाकरोत्।

(क) लक्ष्मीः कस्य हृदयं दर्पमलिनं नाकरोत्?

(ख) कस्य प्रासादे राजलक्ष्मी: शशिन: प्रभेव अधिकम् अराजत?

(ग) देवानामधिपः क: अभवत्?

उत्तर: (क) लक्ष्मीः शक्रस्य हृदयं दर्पमलिनं नाकरोत्।

(ख) कस्य प्रासादे राजलक्ष्मी: शशिन: प्रभेव अधिकम् अराजत|

(ग) देवानामधिपः बोधिसत्त्व: अभवत्|

6 अधोलिखितगद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उतरत-

एकल: बोधिसत्त्वात्मक् सुरेन्द्र: एव रथेन असुराणां बलम् अवरुध्य समरेऽतिष्ठत् ततः सारथिः मातलि: 'अपसरणम् एव इतः उचितम्' इति मत्वा देवेन्द्रस्य स्यन्दनं न्यवर्तयत्। अथ यावत् शक्र: अग्रे सरति तावत् स समुत्पतत: रथस्य अग्रे आगतानि शाल्मलीवृक्षे गरुडनीडानि पश्यति |

(क) सारथि: नाम: क: अस्ति?

(ख) देवेन्द्र: शब्द: कस्य कृते प्रयुक्तम्?

(ग) 'अपसरणम् एव इतः उचितम्' इति क: कम् प्रति कथयति?

उत्तर: (क) सारथि: नाम: मातलि: अस्ति|

(ख) देवेन्द्र: शब्द: शक्रस्य कृते प्रयुक्तम्|

(ग) 'अपसरणम् एव इतः उचितम्' इति मातलि: शक्रम् प्रति कथयति|

7 प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषायां लिखत।

(क) विषदग्धेभ्यः शस्त्रेभ्यः भीता कस्य सेना पलायिता?

उत्तर: शक्रस्य

(ख) 'अपसरणम् एव इत: उचितम् इति क: अकथयत्?

उत्तर: मातलि:

(ग) खगालयाः कीदृशैः पक्षिशावकैः युक्ता:?

उत्तर: अजातपक्षै:

(घ) परिरक्ष सम्यक् गरुडनीडानि इति कः कम् प्रति कथयति ?

उत्तर: परिरक्ष सम्यक् गरुडनीडानि इति शक्र: मातलिम् प्रति कथयति|

(ङ) बोधिसत्त्वः कीदृशैः गुणैः विभूषित: शक्र: अभवत् ?

उत्तर: दानसंयमकरुणादिभि:

(च) शक्रस्य कीर्तिः कुत्र व्याप्ता अभवत्?

उत्तर: सर्वलोकेषु

(छ) शान्तिप्रियः शक्र: किमर्थ युद्धाय तत्पर: अभवत्?

उत्तर: प्रजारक्षणाय

(ज) देवासुरयोः मध्ये कुत्र युद्धम् अभवत्

उत्तर: समुद्रतीरान्ते

(झ) कः देवानामधिप: शक्र: अभवत् ?

उत्तर: बोधिसत्व:

(ञ) दैत्यानां कीदृशं सैन्यबलम् आसीत्?

उत्तर: द्विरद-रथ-तुरग-पदातियुक्तम्

(ट) शक्रः कीदृशं रथम् अभिरुह्य योद्धा गतवान् ?

उत्तर: हैमम्

(ठ) खगालया: कै: युक्ता: आसन्?

उत्तर: अजातपक्ष- पक्षिशावकै:

(ड) साधुजन: प्राणात्ययेऽपि कां न त्यजति?

उत्तर: स्ववृतिम्

8 **'भयदीनमुखानि अमूनि सत्त्वानि रथवेगेन संचूर्ण्य मलिनयशसः मे जीवितं धिक् । इति पंक्तिम् पठित्वा पश्नान् उत्तरत ।**

(क) भयुदीनमुखानि कानि आसन्?

(ख) अत्र 'मे' पदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(ग) 'धिक्' योगे अत्र का विभक्ति:

उत्तर : क. सत्त्वानि, (गरुडस्य शावकाः)

ख. शक्राय ग. द्वितीया

9 **अनन्तरं सहर्षलज्जैः देवैः स्क्रियमाणः जयश्रिया अलङ्कृतः शक्रः स्वपुरम् अगच्छत्।**

(क) देवैः सत्क्रियमाणः क: स्वपुरम् अगच्छत्?

(ख) अत्र 'देवैः' पदस्य किं विशेषणपदम् प्रयुक्तम्?

(ग)'जयश्रिया अलङ्कृत:' इति कस्य विशेषणम्?

उत्तर: (क) शक्र:

(ख) जयश्रिया अलङ्कृत:

(ग) शक्रस्य

10 शब्दार्थाः

अभिरुह्य – चढ़कर

अपसरणम् – भागना

शावकैः - बच्चों से

विषदग्धेभ्यः - विष मे बुझे हुए

प्रारब्धः - प्रारम्भ हुआ

11.शक्रस्य चरित्र चित्रणं लिखत –

(i) शक्र: देवानाम् अधिप: आसीत्।

(ii) स ऐश्वर्यसम्पन्नः आसीत्।

(iii) स: दानशील: संयमी च आसीत्।

(iv) स: महावीरः आसीत्।

(v) तस्य हृदयं करुणामयम् आसीत्।

12.पाठ सार लेखनं |

1. एकदा बोधिसत्वः देवानाम् अधिपः शक्रः अभवत् ।
2. शक्रः ऐश्वर्यम सम्पन्नः महावीरः,करुणापर :च आसीत् ।
3. शान्तिप्रियः शक्रः प्रजारक्षणाय असुराणां सह युद्धाय तत्परः अभवत्
4. प्राणानां संकटे तु साधुजनाः स्ववृति न त्यज्यति ।
5. अनन्तरं सहर्षलज्जैः देवैः सक्रियमाणः जयाश्रिया अलङ्कृतः सः स्वपुरम् अगच्छत् ।

योग्यताविस्तारः

लेखकपरिचयः प्रस्तुत पाठ का आधार ' जातकमाला ' की एक कथा ' शक्रजातकम् ' है । ' जातकमाला ' के लेखक आर्यशूर हैं । इनका रचनाकाल 400 ई . है ।

महात्मा बुद्ध के पूर्वजन्मों की कहानियाँ पालिभाषा में 500 से अधिक जातकों में संगृहीत हैं । आर्यशूर ने कुछ महत्त्वपूर्ण जातकों को संस्कृत भाषा में जातकमाला में संगृहीत किया है । विभिन्न जन्मों में बुद्ध ने किस प्रकार जीवों पर दया की इसका विवरण इनमें प्रस्तुत किया गया है । उन जन्मों में वे बोधिसत्त्व के नाम से प्रसिद्ध हुए । इन कथाओं का उद्देश्य मानव में जीवनमूल्यों की स्थापना करना है ।

पाठ -14

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्

बच्चो ! आप जानते ही हो कि हमारे शरीर का स्वस्थ होना कितना आवश्यक है। स्वस्थ होने पर ही हम अपनी प्रत्येक गतिविधि तथा क्रिया कलाप को बढ़िया तरीके से संपन्न कर सकते हैं। हमारे साहित्य में शरीर को स्वस्थ रखने पर बहुत बल दिया गया है। कालिदास ने शरीर को धर्म पालन करने अर्थात् कर्तव्यों को पूरा करने का पहला साधन बताया है। प्राचीन काल में भारतीय मनीषियों ने हजारों वर्षों के गंभीर निरीक्षण के पश्चात् प्रतिदिन प्रत्येक व्यक्ति द्वारा पालनीय कुछ ऐसे नियमों का विधान किया है , जिन्हें ' नित्यकर्म ' कहा जाता है तथा ये नित्यकर्म प्रतिदिन नींद से जागने के पश्चात् किए जाते हैं। जैसे- शौच जाना , दांतों को साफ करना , व्यायाम करना , तैल - मालिश करना तथा स्नान इत्यादि। इसके प्रमुख ग्रंथ चरकसंहिता , अष्टाङ्गहृदय तथा सुश्रुतसंहिता आदि हैं।

उद्देश्यानि

इमं पाठं पठित्वा भवान् / भवती

उत्तम - स्वास्थ्यस्य महत्त्वं वर्णयिष्यतिः

नित्यकर्मणाम् उपयोगिता लेखिष्यति ;

आयुर्वेदस्य प्रसिद्धानां ग्रन्थानां नामानि लेखिष्यति ;

यायामस्य लाभान् रेखाचित्रे दर्शयिष्यति ;

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1.उपयुक्तम् उत्तरं चिनुत |

(i) दिनस्य अन्ते रात्रौ किं पिबेत्?

(क) जलम्

(ख) दुग्धम्

(ग) नारिकेलजलम्

(घ) तक्रम्

उत्तर: ख

(ii) शरीरायासजननं कर्म क: उच्यते?

(क) व्यायाम:

(ख) स्वप्न:

(ग) अभ्यंग:

(घ) क्षय:

उत्तर: क

(iii) भोजनमध्ये________वारि|

(क) अमृतं

(ख) विषं

(ग) तक्रं

(घ)पय:

उत्तर: क

(iv) व्यायाम:_________करणीय: ?

(क) प्रतिदिनं

(ख) कदा-कदा

(ग) नशयन्ति

(घ) न कदापि

उत्तर: क (v) कति वारं दन्तविशोधनम् करणीय: ?

(क) पंच

(ख) वारं-वारं

(ग) न कदापि

(घ) द्वयो:

उत्तर: घ

2. प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषायां लिखत-

(i) स्वस्थ: नरः कस्य रक्षार्थ प्रातः उत्तिष्ठेत्?

उत्तर: आयुषः

(ii) सर्वं परित्यज्य कस्य रक्षा करणीया?

उत्तर: शरीरस्य

(iii) दन्तपवनं कानि अबाधयन् भक्षणीयम्?

उत्तर: दन्तमांसानि

(iv) शरीरायासजननं कर्म किम् उच्यते?

उत्तर: व्यायाम:

(v)अभ्यङ्गः कदा आचरणीय:?

उत्तर: नित्यम्

(vi) कम् विना शरीरं निर्मलं न भवति?

उत्तर: स्नानं विना

(vii) स्नानं कदा करणीयम् ?

उत्तर: प्रातः

(viii) 'पिपासा' इति कस्य शब्दस्य अर्थ:?

उत्तर: तृट्

(ix) दिनस्य अन्ते रात्रौ किं पिबेत्?

उत्तर: दुग्धम्

(x) यः निर्धारितसमये भोजनं करोति सः कः उच्यते?

उत्तर: कालभोजी

(xi) य: सीमितं भोजनं करोति सः कः कथ्यते?

उत्तर: मिताशी

3.अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत –

ब्राह्मे मुहूर्ते उत्तिष्ठेत् स्वस्थो रक्षार्थमायुषः।
सर्वमेव परित्यज्य शरीरमनुपालयेत्।।

अन्वयः

स्वस्थः आयुषः __1__ब्राह्ये मुहूर्ते उक्तिष्ठे। _2__एव परित्यज्य _3__ अनुपालयेत्।

उत्तर: 1) रक्षार्थम् 2) सर्वम् 3) शरीरम्

4.अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत –

भोजनान्ते पिबेत्तक्र वासरान्ते पिबेत्पयः।

निशान्ते च पिबेद् वारि त्रिभी रोगो न जायते ।।

अन्वयः

भोजनान्ते _1__ पिबेत्, वासरान्ते पयः पिबेत्, न__2__ च वारि पिबेत्, _3__ रोगः न जायते।

उत्तर: 1) तक्रम्

2) निशान्ते

3) त्रिभी:

5.अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत-

हिताशी स्यान्मिताशी स्यात्कालभोजी जितेन्द्रय:।

पश्यन् रोगान् बहून् कष्टान् बुद्धिमान् विषमाशनात्।।

अन्वयः

बुद्धिमान् विषम- अशनात् बहून् _1__ कष्टान् पश्यन् __2__ मिताशी स्यात् कालभोजी _3__ स्यात्।

उत्तर: 1) रोगान्

2) हिताशी

3) जितेन्द्रय:

6.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रशनान् उत्तरत –

ब्राह्मे मुहूर्ते उत्तिष्ठेत् स्वस्थो रक्षार्थमायुषः।

सर्वमेव परित्यज्य शरीरमनुपालयेत्।।

(क) कस्मिन् मुहूर्ते उत्तिष्ठेत्?

(ख) सर्वं परित्यज्य कम् अनुपालयेत्?

(ग) ब्राह्मे मुहूर्ते <u>उत्तिष्ठेत्</u> इत्यत्र रेखाङ्कितपदे कः लकारः ?

उत्तर: (क) ब्राह्मे

(ख)शरीरम्

(ग) विधिलिङ्

7.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रशनान् उत्तरत –

शरीरायासजननं कर्म व्यायाम उच्यते।

लाघवं कर्मसामर्थ्यं दीप्ताऽग्निर्मेदसः क्षय: ।।

(क) इत्यत्र व्यायाम् कीदृशं कर्म ?

(ख) अनेन क: लाभ: इति बिन्दु द्वयं लिखत।

उत्तर: (क) शरीरायासजननं

(ख) कर्मसामर्थ्यं , शरीरं लाघवं करोति|

8.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रशनान् उत्तरत –

भोजनान्ते पिबेत्तक्रं वासरान्ते पिबेत्पयः।

निशान्ते च पिबेद् वारि त्रिभी रोगो न जायते ।।

(क) भोजनान्ते किम् पिबेत्?

(ख) वासरान्ते किम् पिबेत्?

(ग) निशान्ते किम् पिबेत्?

उत्तर: (क) तक्रं

(ख) पय:

(ग) वारि

9.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रशनान् उत्तरत –

हिताशी स्यान्मिताशी स्यात्कालभोजी जितेन्द्रय:।

पश्यन् रोगान् बहून् कष्टान् बुद्धिमान् विषमाशनात्।।

(क) य: हितकरं भोजनं अश्नाति तस्य क: कथयति?

(ख) 'जितेन्द्रय:'

10.महत्वपूर्णा प्रश्ना:

(क) 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' इति पाठः कस्मात् ग्रन्थात् संगृहीतः ? कश्च तस्य लेखकः ? अत्र कः विषयः वर्णितः ?

उत्तर: 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' इति पाठः चरकसंहिताया: ग्रन्थात् संगृहीतः | चरक: तस्य लेखकः | अत्र उत्तम- स्वास्थ्यस्य महत्वं विषयः वर्णितः |

(ख) अभ्यङ्गेन शरीरे के के लाभाः भवन्ति ? त्रीन् लाभान् लिखत ।

उत्तर: 1 अभ्यङ्गः जरां नाशयति|

2 अभ्यङ्गः शरीरं दृढं करोति|

3 अभ्यङ्गः चर्म रक्षति|

4 अभ्यङ्गः आयुः वर्धयति|

5 अभ्यङ्गः दृष्टिं वर्धयति|

(ग) 'अभ्यंगमाचरेन्नित्यं सजराश्रमवातहा' इत्यत्र अभ्यंगेन के लाभा: उक्ता:?

उत्तर : अम्यङ्गेन तु श्रम: दूरीभवति, वृद्धावस्था दूरे गच्छति. वातदोषाः अपि नश्यन्ति।

11. विशेषाणि विशेष्यैः सह योजयत

विशेषणानि	**विशेष्याणि**
(1)ब्राह्मे	(क) दन्तपवनम्
(ii) आपोत्थिताग्रम्	(ख) अभ्यङ्गः
iii) दन्तास्यजम्	(ग) स्नानम्
(iv) द्वौ	(घ) कष्टान्
(v) जराश्रमवातहा	(ङ) मुहूर्ते
(vi) ओजोबलप्रदम्	(च) मलम्
(vii) बहून्	(छ) कालौ

उत्तर: (i) + ङ, (ii) + क, (iii) + च , (iv) + छ, (v) + ख, (vi) + ग, (vii) + घ

12 अधोलिखितशब्दान् अर्थैः सह मेलयत

शब्दाः	**अर्थाः**
(क) परित्यज्य	1. नाशयति
(ख) अबाधयन्	2. मुखात् जातम्
(ग) निहन्ति	3. बहिः आकृष्य
(घ) वैरस्यम्	4. शीघ्रम्, त्वरितम्
(ङ) आस्यजम्	5. त्यक्त्वा
(च) निष्कृष्टा	6. दन्तानां स्वच्छीकरणम्
(छ) सद्यः	7. स्वादहीनता
(ज) दन्तविशोधनम्	8. न पीडयन्

उत्तर: क + 5, ख + 8, ग + 1, घ + 7, ङ + 2,च + 3, छ + 4,ज +6

योग्यताविस्तारः

कविपरिचयः

महर्षि चरक- आयुर्वेद के प्रतिष्ठापक विशेषज्ञों में चरक का नाम सर्वोपरि है। चरक का समय तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व माना जाता है। कुछ लोग इसे प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व भी मानते हैं। चरक संहिता इनका सुप्रसिद्ध ग्रंथ है। इसमें स्वस्थ रहने के उपाय , आदर्श - आहार का वर्गीकरण , रोगनिदान एवं उनकी चिकित्सा के विविध उपाय वर्णित हैं। चरक के अतिरिक्त अन्य प्राचीन आयुर्वेद विज्ञानियों में अन्यतम हैं- सुश्रुत , वाग्भट्ट नागार्जुन आदि । आयुर्वेद का अत्यधिक प्रचार है। तिब्बती चिकित्सा प्रणाली वस्तुतः आयुर्वेद पर ही आधारित है।

पाठ-15

ईशः क्व अस्ति

प्रस्तुत पाठ कवीन्द्र रवीन्द्र नाथ टैगोर की विश्वविख्यात कृति गीताञ्जलि के संस्कृत अनुवाद से संगृहीत है । ' गीताञ्जलि ' प्रथम ऐसी कृति है जिसे यूरोप के बाहर से नोबेल पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया है । भारतीय संस्कृति के पोषक ग्रंथों में ईश्वर के विषय में बहुविध विवेचना की गई है । यहां एक उक्ति प्रसिद्ध है । ' एक सद् विप्राः बहुधा वदन्ति ' एक ही सत्य को विद्वान लोग अनेक प्रकार से कहते हैं । कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी गीताञ्जलि में ईश्वर के अस्तित्व का वर्णन बहुत सुंदर ढंग से किया है । कवि ने ईश्वर की वास्तविक सत्ता को किसानों , मजदूरों एवं गरीब परिश्रमी व्यक्तियों में दर्शाया है । ईश्वर प्राप्ति का सुगम उपाय बताते हुए कवि कहता है कि ईश्वर देवालयों , मंदिरों में विद्यमान नहीं है , और न ही वह भौतिक विलासिता में है , अपितु ईश्वर तो पत्थर के टुकड़ों को तोड़ते - खोदते मजदूर व धूलि - धूसरित किसान तथा पसीने से नहाए हुए परिश्रमी व्यक्ति के रूप में विद्यमान है ।

उद्देश्यानि

इमं पाठं पठित्वा भवान् / भवती

श्लोकानां शुद्ध - लेखनं करिष्यति ;

श्लोकानां सस्वरं पाठं करिष्यति ;

श्लोकानाम् अर्थ ज्ञास्यति ;

श्लोकसन्देशान् स्ववाक्येषु लेखिष्यति ;

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1 **उपयुक्तम् उत्तरं चिनुत|**

(i) ईशम् कथं भुवं सृजति?

(क) स्वलीलया

(ख) मलिनवपु:

(ग) कठिनाम्

(घ) धूसरितं

उत्तर: क

(ii) जीवन: क: महत्वपूर्ण: अस्ति?

(क) धन:

(ख) श्रम:

(ग) तृष्णा

(घ) दर्प:

उत्तर: ख

(iii) 'ईश: क्व अस्ति' इति पाठ: कस्मात् ग्रंथात् उद्धृत अस्ति?

(क) गीतांजली

(ख) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(ग) रामायण:

(घ) चरकसंहिता

उत्तर: घ

(iv) कवि: जनान् कुत्र गन्तुं प्रेरयति?

(क) विद्यालये

(ख) देवागारे

(ग) श्रमिकस्य निकटे

(घ) भ्रमणे

उत्तर: ग

(v) ईशप्राप्तये कवि: किम् त्यक्तुं कथयति?

(क) जपमालां

(ख) विद्यालयं

(ग) देवालयं

(घ) उद्यानं

उत्तर: क

2.**अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत –**

मुक्तिः? क्व नु सा दृश्या मुक्तिः। सलीलमीशः सृजति भुवम।

तिष्ठति चास्मद्धिताभिलाषी सविधेऽस्माकं मिषन् सदा!।

अन्वय:

मुक्तिः? सा मुक्तिः क्व नु __1__? ईशः सलीलम् __2__ सृजति। सदा। अस्मद्धिताभिलाषी अस्माकम् __3__ मिषन् तिष्ठति|

उत्तर: 1) दृश्या

2) भुवम

3) सविधे

3.**अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत –**

यदि तव वसनं धूसरित स्यात् यदि च सहस्रच्छिद्रं स्यात्।

का वा क्षतिरिह तेन भवेत्ते तत्त्वमिदं चिन्तय चित्ते ॥

अन्वय:

यदि तव __1__ धूसरितम् स्यात्, यदि च (तव वसन) __2__ स्यात् तेन ते इह का वा क्षतिः भवेत्। इदम् तत्त्वम् __3__ चिन्तय।

उत्तर: 1) वसनं

2) सहस्रच्छिद्रं

3) चित्ते

4.अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत-

ईशस्तिष्ठति वर्षातपरयोस्ताभ्यां सार्ध मलिनवपुः।

दूरे क्षिप तव शुद्धां शाटीमेहि स इव पांसुरभूमिम्॥

अन्वय:

मलिनवपुः ईशः __1__ (लाङ्गलिकेन जनपदरध्याकत्रा च) सार्थ वर्षातपयोः __2__। तव शुद्धाम् शाटीम् दूरे क्षिप, सः (ईशः) इव __3__ एवि|

उत्तर: 1) ताभ्यां

2) तिष्ठति

3) पांसुरभूमिम्

5.अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत-

तत्रास्तीशः, कठिनां भूमि यत्र हि कर्षति लाङ्कलिकः।
यत्र च जनपदरथ्याकर्ता प्रस्तरखण्डान् दारयते ॥

अन्वय:

ईशः तत्र अस्ति, यत्र हि __1__ कठिनाम् भूमिम् __2__, यत्र च जनपदरम्यान __3__ दारयते।।

उत्तर: 1) लाङ्कलिकः

2) कर्षति

3) प्रस्तरखण्डान्

6.अधोलिखितानां प्रश्नानां उत्तराणि लिखत।

क. लाङ्गलिकः किं करोति?

उत्तर: लाङ्गलिकः कठिनां भूमिं कर्षति।

ख. प्रस्तरखण्डान् कः दारयते?

उत्तर: जनपदर्थ्याक्ता प्रस्तरखण्डान् दारयते।

ग. ईश्वरः काभ्यां सार्ध तिष्ठति?

उत्तर: ईश्वरः ययोः, वर्षातपयोः मलिनवपुः, ताभ्यां सार्थ तिष्ठति।

घ. आगच्छ इति अर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?

उत्तर: एहि

ड. कविः जनान् कुत्र गन्तुं प्रेरयति?

उत्तर: स्वेदजलार्द्रस्य श्रमिकस्य निकटे

च. ईशः कथं भुवं सृजति?

उत्तर: सलीलम्

छ. अस्माकं सविधे कः तिष्ठति?

उत्तर: ईश्वरः

ज. ईशः अस्माकं किम् अभिलषन् तिष्ठति?

उत्तर: हितम्

7.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

ईशस्तिष्ठति वर्षातपयोस्ताभ्यां सार्धं मलिनवपुः
दूरे क्षिप तव शुद्धां शाटीमेहि स इव पांसुरभूमिम् ।।

(क) ईशः कीदृश वपुः अस्ति?

(ख) सः काभ्यां सार्धं तिष्ठति?

(ग) 'शाटीम्' इत्यस्य कः अर्थः?

उत्तर: (क) मलिनवपुः

(ख) कृषका: श्रमिका: च

(ग) वस्त्रम्

8 अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

ध्वानं हित्वा बहिरेहि त्वं त्यज तव कुसुम त्यज धूपम्।
पश्यस्तिष्ठ स्वेदजलाद्रस्तन्निकटे कार्यक्षेत्रे॥

1 किं हित्वा बहिरेहि

2 हित्वा इति पदे क: प्रत्यय ?

3 त्वं इति पदे क: विभक्ति?

उत्तर: 1) ध्वानं

2) कत्वा प्रत्यय

3) प्रथमा

9 शब्दार्था:

शब्दाः	**अर्था:**
(i) देवागारे	(क)मन्दिरे
(ii) तमोवृते	(ख)अन्धकारयुक्ते
(iii) दृशम्	(ग)नेत्रम्
(iv) मलिनवपुः	(घ)धूसरितशरीरः
(v) लाङ्गलिक:	(ड)कर्षक:

10 अधोलिखितैः विशेष्यैः सह पाठात् चित्वा उचितविशेषणपदानि लिखत|

(i) देवागारे - पिहितद्वारे

(ii) भूमिम् – कठिनाम्

(iii) शाटीम् – शुद्धाम्

(iv)वसनम् – धूसरितं

योग्यता विस्तारः

कवि एवं ग्रंथ परिचय

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर एक कवि , कथाशिल्पीसाधक , चिंतक , गायक , चित्रकार , अध्यापक और राष्ट्रचेता एवं समाज सुधारक थे । इनका जन्म 7 मई , 1861 को कोलकाता के एक धनी ब्राह्मण परिवार में हुआ था । टैगोर 8 वर्ष की आयु से ही कविता लिखने लगे थे । 1877 में इनकी बंगाली में पहली लघुकथा ' भिखारिणी ' (The Beggar Woman) प्रकाशित हुई । 16 वर्ष की आयु में ही इनकी प्रथम कविता ' भानुसिंघो ' (Sunlion) प्रकाशित हुई तथा 1882 में ' संध्यागीत ' जिसमें इनकी एक प्रसिद्ध कविता ' निर्जर स्वप्नभङ्गम् ' भी प्रकाशित हुई ।

टैगोर की प्रसिद्धि एक लेखक व कवि के रूप में अमेरिका व इंग्लैंड में तब हुई जब गीताञ्जलि का प्रकाशन हुआ । ' गीताञ्जलि ' को 1913 में साहित्य के नोबेल पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया । टैगोर यूरोपीय महाद्वीप के बाहर के ऐसे प्रथम कवि थे जिन्हें साहित्य | के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

टैगोर की प्रसिद्धि एक लेखक व कवि के रूप में अमेरिका व इंग्लैंड में तब हुई जब गीताञ्जलि का प्रकाशन हुआ । ' गीताञ्जलि ' को 1913 में साहित्य के नोबेल पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया । टैगोर यूरोपीय महाद्वीप के बाहर के ऐसे प्रथम कवि थे जिन्हें साहित्य | के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

पाठ-16

गीतामृतम्

आपने श्रीमद्भगवद्गीता का नाम अवश्य सुना होगा। युद्ध क्षेत्र में जब अर्जुन मोहग्रस्त हो गए, तब उस मोह को दूर करने के लिए भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जो उपदेश दिया था, वही उपदेश गीता के रूप में उपनिबद्ध है। ये उपदेश विश्व के मानवमात्र का सम्पादन करने वाले हैं। प्रस्तुत पाठ में लिए गए श्लोक गीता के सत्रहवें अध्याय से संकलित हैं। इस पाठ में आप पढ़ेंगे कि सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण के आधार पर भोजन, दान और तप तीन प्रकार के होते हैं। अगर हमारा भोजन सात्त्विक होगा तो हमारे विचार शुद्ध होंगे और हमारा शरीर भी स्वस्थ रहेगा। इसी प्रकार सात्त्विक दान और सात्त्विक तप को श्रेष्ठ माना गया है। प्रस्तुत पाठ में हम इनके विषय में विस्तार से पढ़ेंगे।

उद्देश्यानि

पाठं पठित्वा भवान् / भवति

श्लोकानां सस्वरवाचनं करिष्यति ;

श्लोकान् पठित्वा जीवनमूल्यानि लेखिष्यति ;

श्लोकानाम् अन्वयं करिष्यति ; श्

लोकसंदेशान् स्ववाक्येषु लेखिष्यति ;

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1.उपयुक्तम् उत्तरं चिनुत|

(i) आहारः कति विधः भवति ?

क षट्

ख पञ्च

ग सप्त

घ नव

उत्तर: क

(ii) फलमुदिश्य दत्तं दानं किं कथ्यते?

क सात्त्विकं

ख राजसम्

ग तामसम्

घ न कोऽपि

उत्तर: ख

(iii) किम् तपः सर्वोत्तमम्?

क मानसम्

ख राजसम्

ग उभयोः

घ सर्वे

उत्तर: क

(iv) 'गीतामृतम्' कस्मात् ग्रन्थात् उद्धृतो अस्ति?

क रामायण

ख महाभारत

ग कादम्बरी

घ उत्तररामचरित

उत्तर: ख

(v) अवज्ञापूर्व दत्तं दानं किं मन्यते?

क सात्त्विकं

ख राजसम्

ग तामसम्

घ सर्वे

उत्तर: ग

2.अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत- पूर्णवाक्येन प्रश्नान् उतरत-

(i) उच्छिष्टम् अमेध्यञ्च भोजनं कीदृशं कथ्यते?

उत्तर: तामसम् भोजनम्

(ii) आहार: राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदा:-अस्मिन् वाक्ये "रोगं प्रयच्छन्ति" इत्यर्थे कः शब्दः प्रयुक्त:?

उत्तर: आमयप्रदा:

(iii) आरोग्यप्रदः आहार: कीदृशः आहार: कथ्यते?

उत्तर: सात्त्विक: आहार:

(iv) दु:खशोकामयप्रदाः आहारा: कीदृशाः आहाराः

उत्तर: राजस. आहाराः

(v) यातयामं पर्युषितञ्च भोजनं भोक्तव्यं न वा?

उत्तर: न भोक्तव्यम्

(vi) शारीरं तप कः उच्यते ?

उत्तर: ब्रह्मचर्यमहिंसा

(vii) कीदृशम् भोजनम् त्याज्यम् भवति ?

उत्तर: अतिकटु अत्यम्लम्, अतिलवणम्. अत्युष्णम्, अतितीक्ष्णं च

(viii) "अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्" इति वाक्यांशे वाक्यम् इत्यस् विशेषणानि लिखत।

उत्तर: अनुद्वेगकरं, सत्यं, प्रियं, हितञ्च।

(ix) यः विद्यार्थी स्वाध्यायं करोति सत्यं प्रियं च वदति सः कीदृशं तपः करोति?

उत्तर: वाङ्.मयं तपः

(x) मानसतपसः उदाहरणद्वयं लिखत।

उत्तर: मौनम् आत्मविनिग्रहः च|

(xi) अहिंसा कीदृशं तपः अस्ति?

उत्तर: शारीरं तपः

(xii) गुरोः सेवा कीदृशं तपः अस्ति?

उत्तर: शारीरं तप:

(xiii) कीदृशं दानं सात्त्विकं दानं कथ्यते?.

उत्तर: यद्दानं दातव्यम् इति विचिन्त्य अनुपकारिणे, देशे, काले पात्रे च दीयते, तद् सात्त्विकं दानं कथ्यते।

(xiv) कीदृशं दानं राजसम् इति उच्यते?.

उत्तर: यद्दानं प्रत्युपकाराय, फलम् उद्दिश्य वा काठिन्येन दीयते, तद् राजसी दानं इत्युच्यते।

(xv) अपात्रेभ्यः दत्तं दानं कीदृशं दानं भवति?.

उत्तर: तामसं दानम्।

(xvi) "पिपासिते भ्यः जलदानम्" "व्याधिग्रस्ताय औषधिदानम्" "बुभुक्षितेभ्यः भोजनदानम्" कीदृशं दानं कथ्यते?

उत्तर: सात्विकदानम्

(xviii) प्रत्युपकाराय दत्तं दानं किं कथ्यते?.

उत्तर: राजसं दानम्।

3.अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत –

यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम्।।

अन्वयः

यत् तु _1__पुनः फलम् उद्दिश्य वा _2__ दानम् दीयते, तद् दानं __3__ स्मृतम्।

उत्तर: 1) प्रत्युपकारार्थं

2) परिक्लिष्टं

3) राजसं

4.अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत –

अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते।

असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम्।।

अन्वयः

यद्दानम् अदेशे, __1__, अपात्रेभ्यः च असत्कृतम् __2__ च दीयते, तत् __3__ इति उदाहृतम्।

उत्तर: 1) अकाले

2) अवज्ञातं

3) तामसदानम्

5.अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत-

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम्॥

ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते।।

अन्वयः

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनम्, _1__ आर्जवम् ब्रह्मचर्यम् __2__ च शारीरम् _3__ उच्यते|

उत्तर: 1) शौचम्

2) अहिंसा

3) तपः

6.अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत-

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च तत्।

स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते।।

अन्वयः

अनुद्वेगकरम् __1__ प्रियम् हितम् __2__ स्वाध्यायः वाङ्मयम् _3__ उच्यते।

उत्तर: 1) सत्यं

2) वाक्यं

3) तप:

7. अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते।।

1 वाङ्मय तपसः उदाहरण द्वयम् लिखत -

उत्तर - सत्यं, प्रियहितम् , स्वाध्याय, अभ्यसनं च ।

2 अनुद्वेगकरं वाक्यं . सत्यं प्रियहितम् . च यत् इति वाक्यांशे वाक्यम् इत्यस्य . विशेषणानि लिखत ।

उत्तर - अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितम् च ।

3 वाङ्मय तपः किम् ?

उत्तर -अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितम् स्वाध्याय, अभ्यसनं च ।

8.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुदिदश्य वा पुनः दीयते च परिक्लिप्टं तद्दानं राजस स्मृतम्।।

1 परिक्लिष्ट कीदृशम् दानम् दीयते ?

उत्तर - राजसं दानं ।

2 प्रत्युपकाराय दत्तं दानं किं दानं कथ्यते ?

उत्तर - राजसं दानं ।

3 कीदृशम् दानम् राजसम् दानम् कथ्यते ?

उत्तर फलम् उद्दिश्य दत्त दानं राजसम् दानम् कथ्यते ।

9 . क' स्तम्भे पदानि दत्तानि 'ख' स्तम्भे तेषा विलोमपदानि। तयोः मेलनं कुरुत-

'क' स्तम्भः	**ख' स्तम्भः**
(i) उपकारिणें	(क) सुखम्
(ii) गृह्यते	(ख) निरामयः
(iii) घृणा	(ग) उष्ण :
(iv) शीत:	(घ) प्रीतिः
(v) सरलम्	(ङ) जटिलम्
(vi) आमय:	(च) अपकारिणें
(vii) दुःखम्	(छ) दीयते

उत्तर: (i) – च, (ii) – छ, (iii) – घ, (iv) – ग, (v) – ङ, (vi) – ख, (vii) – क

10.शब्दार्था:

अमेध्यम् – अपवित्र

अनुपकारिणे – उपकार नहीं करने वालो को

स्मृतम् – माना गया है

अवज्ञातं – अवज्ञापूर्वक

गतरसम् – जिसका रस सूख गया हो

योग्यताविस्तारः

कविपरिचयः महाकवि व्यास का नाम किसने नहीं सुना होगा ? लौकिक संस्कृत के कवियों में वाल्मीकि के बाद व्यास का आविर्भाव हुआ , यह भारतीय मान्यता है । अठारहों पुराणों के रचयिता महाकवि व्यास ही हैं यह इस श्लोक से प्रमाणित होता है

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् ।

परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ।।

ग्रन्थपरिचयः

महाभारत -

महाभारत ज्ञान विज्ञान का भण्डार है । धर्म , अर्थ , काम , मोक्ष , युद्ध नीति , धर्मनीति आदि की जैसी विशद चर्चा महाभारत में है वैसी अन्यत्र नहीं |

श्रीमद्भगवद्गीता -

श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत के भीष्मपर्व का एक अङ्ग है | श्रीकृष्ण द्वारा दिये उपदेश ही गीता के रूप में निबद्ध हैं । गीता के अधिकांश श्लोक हर काल में , हर व्यक्ति के लिए उपयोगी हैं । उन श्लोकों को सार्वकालिक कहा जा सकता है ।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।

मा कर्मफलहेतुर्भूः मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ।।

पाठ-17

स्वस्ति पन्थामनुचरेम

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है समाज को सुस्थिर एवं सम्पुष्ट बनाने के लिए यह आवश्यक है कि सभी व्यक्ति परस्पर प्रेम भाव से रहें , सभी मिलजुलकर रहें । कोई किसी से द्वेष न करे । कोई किसी के धन का हरण न करे । प्रत्येक व्यक्ति दूसरे लोगों को अपने जैसा माने तथा अपने को दूसरों जैसा ।

समाज के सदस्यों में परस्पर प्रेमभाव तथा हितभावना से विश्वबन्धुत्व में वृद्धि हो सकती है । भारतीय संस्कृति के आधारभूत संस्कृत के ग्रंथों में इस प्रकार के उपदेश दिए गए हैं को मित्रता की भावना बढ़ाने के लिए परस्पर किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए । प्रस्तुत पाठ में हम इसी प्रकार के मंत्रों की जानकारी प्राप्त करेंगे जिनमें विश्वकल्याण की भावनाएँ प्रदर्शित की गई हैं ।

उद्देश्यानि

इमं पाठं पठित्वा भवान् / भवती .

समाजस्य सम्पुष्ट्यै क्रियमाणानि कार्याणि लेखिष्यति ;

पाठे उद्धृतानां मन्त्राणाम् अन्वयं करिष्यति ;

विश्वबन्धुतायाः वृद्ध्यै पाठगतान् निर्देशान् स्वशब्दैः लेखिष्यति ; . समानार्थकसूक्तिभिः सह मन्त्राणां मेलनं करिष्यति ।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1.**उपयुक्तम् उत्तरं चिनुत |**

(i) सर्वाणि भूतानि मा______चक्षुषा समीक्षान्ताम् |

(क) मित्रस्य

(ख) शत्रुस्य

(ग) उभयो:

(घ) देवस्य

उत्तर: क

(ii) इदं सर्व __________ईशावास्याम् |

(क) जगत्

(ख) नभम्

(ग) पृथ्वी

(घ) न कोऽपि

उत्तर: क

(iii) मनुष्येण कथं भोक्तव्यम् |

(क) लालसापूर्वकं

(ख) ईर्ष्यापूर्वकं

(ग) त्यागपूर्वकं

(घ) उभयो:

उत्तर: ग

(iv) ईश्वर: निवास: कुत्र अस्ति?

(क) यत्र- तत्र

(ख) तावत्

(ग) सर्वत्र

(घ) कुत्रो न अस्ति

उत्तर: ग

(v) सूर्याचन्द्रमसौ इव ____पन्थाम् अनुचरेम |

(क) अहनता

(ख) अहर्निशं

(ग) स्वस्ति

(घ) सर्वे:

उत्तर: ग

2.अधोलिखितान् प्रश्नान् उत्तरत-

(क) वयम् कीदृशं मार्गम् अनुचरेम?

उत्तर: स्वस्ति

(ख) "युष्माकम् " इत्यर्थे किं पदम् अत्र प्रयुक्तम्?

उत्तर: वः

(ग) "मनः" इति पदस्य प्रथमा-बहुवचने रूपं लिखत।

उत्तर: मनांसि

(घ) अनुचरेम इति पदस्य अस्मिन्नेव लकारे पुरुषे च एकवचने रूपं लिखत।

उत्तर: अनुचरेयम्

(ङ) तृतीये मन्त्रे त्रीणि अव्ययपदानि सन्ति, तानि लिखत।

उत्तर: इव, स्वस्ति, पुनः

(च) प्रथममन्त्रे वेदस्य प्रथम. उपेदशः कः अस्ति?

उत्तर: सर्वे मिलित्वा चलन्तु/संगच्छध्वम्।

(छ) नराणां कि कि समानं स्यात्?

उत्तर: आकूतिः, हृदयानि, मनांसि ।

(ज) केन सह वयं गच्छेम?

उत्तर: ददता/अघ्नता/जानता।

(झ) सूर्यः कीदृशं मार्गम् अनुचरति?

उत्तर: कल्याणमय/स्वस्ति।

(ञ) जगत् केन व्याप्तम् अस्ति

उत्तर: जगत् इंशा व्याप्तम् अस्ति।

(ट) मनुष्येण कथं भोक्तव्यम्?

उत्तर: मनुष्येन त्यागेन/त्यागपूर्वक भोक्तव्यम्।

(ठ) सर्वे अन्यान् केन भावेन पश्यन्तु?

उत्तर: सर्वे मित्रभावेन पश्यन्तु।

(ड) भ्राता कं प्रति द्वेषं न कुर्यात्?

उत्तर: भ्राता भ्रातरं प्रति द्वेष न कुर्यात्।

(ढ) परिवारे जना: कीदृशीं वाणीं वदन्तु?

उत्तर: परिवारे जनाः भद्रां वाणी वदन्तु।

(ण) अस्माकं मनांसि कीदृशानि स्युः?

उत्तर: अस्माकं मनांसि परस्परं प्रेममयानि स्युः।

(त) जनानाम् आकूति: कीदृशी भवेत्?

उत्तर: जनानाम् आकूतिः समानी स्यात् ।

(थ) वयं कीदृशैः सह संगमेमहि?

उत्तर: वयं ददता, अघ्नता, जानता संगच्छेमहि।

(द) अस्माभिः वस्तूनाम् उपभोग ः कथं कर्तव्य:?

उत्तर: अस्माभिः वस्तूनाम् उपभोग: त्यागेन कर्तव्यः।

(ध) वयं परिवारे कथं कार्य कुर्याम?

उत्तर: वयं परिवारे सम्मनस्काः भूत्वा कार्य कुर्याम।

3.**अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत-**

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताऽघ्नता जानता संगमेमहि।।

अन्वयः

सूर्याचन्द्रमसौ इव _1__ पन्थाम् अनुचरेम __2__, अघ्नता, जानता _3__ संगमेमहि।

उत्तर: 1) स्वस्ति

2) ददता

3) पुन:

4.**अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत-**

ईशावास्यमिदं सर्व यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद् धनम्।

अन्वयः

जगत्यां यत् किञ्च __1__ इदं सर्वम् ईशावास्यम्। तेन _2__ भुञ्जीथाः कस्यस्विद् _3_ मा गृधः।

उत्तर: 1) जगत्

2) त्यक्तेन

3) धनम्

5.**अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत-**

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्च: सव्रता भूत्वा वाचं वदत,भद्रया।।

अन्वयः

भ्राता _1_ मा द्विक्षत्। उत् स्वसा __2__ (मा द्विक्षत्)। सम्यञ्चः सव्रता: __3__ भद्रया वाचा वदत।

उत्तर: 1) भ्रातरं

2) स्वसारं

3) भूत्वा

6.अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत-

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥1॥

अन्वयः

संगच्छध्वम्। __1__ वः मनांसि __2__। यथा पूर्वे देवा संजानानाः _3__उपासते।

उत्तर: 1) संवदध्वं
2) संजानताम्
3) भागं

7.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताऽघ्नता जानता संगमेमहि॥

(i) वयं कीदृशं पन्थामनुचरेम ?
(ii) को सर्वदा सर्वेषां हितं कुरुतः ?
(iii) वयं कैः सह संगतिम् कुर्याम ?

उत्तर: (i) स्वस्ति
(ii) सूर्याचन्द्रमौ
(iii) अहनता संगमेमहि॥

8.**अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-**

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा भा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥

(i) इदं सर्वं जगत् केन व्याप्तम् अस्ति ?
(ii) मानवः वस्तूनाम् उपयोगः कथं कुर्यात् ?
(iii) कस्यापि धनं प्रति कीदृशः भावः स्यात् ?

उत्तर: (i) ईश्वरेण
(ii) त्यागबुद्धयैव
(iii) त्यागबुद्धयैव

9.शब्दानाम् अर्थैः सह मेलनं कुर्यात्-

शब्दाः	**अर्थाः**
(i) आकूतिः	(क) लोभं मा कुरु
(ii) गृधः	(ख) पश्यन्तु
(iii) जगत्	(ग) कल्याणयुक्तया
(iv) समीक्षन्ताम्	(घ) चिन्तनम्
(v) स्वसा	(ङ) युष्माकम्
(vi) भद्रया	(च) अहिंसकेन सह
(vii) वः	(छ) भगिनी

(viii) अघ्नता (ज) चैतन्ययुक्तम्
(ix) भुञ्जीथाः (झ) वदत
(x) संवदध्वम् (ञ) भोगं कुरु

10.निम्नलिखितपदानां हिन्दीभाषायाम् अर्थान् लिखत-

क) समीक्षे – मै देखता/देखती हूँ
(ख) वः – तुम्हारा/तुम्हारी
(ग) अघ्नता - हिंसा न करने वाले के साथ
(घ) मा द्विक्षत् – द्वेष न करे
(ङ) स्वसा – बहन

योग्यताविस्तारः-

कृतिपरिचयः

भारतीय चिन्तन का ग्रन्थ रूप सबसे पहले वेदों में मिलता है । ऋग्वेद विश्व का सबसे पहला ग्रंथ है । इस पाठ में वेदों से संकलित मन्त्र रखे गए हैं । वेद , ब्राह्मण ग्रंथ , आरण्यक और उपनिषद्- यह वैदिक साहित्य हैं । वेद चार हैं ऋग्वेद , यजुर्वेद , सामवेद और अथर्ववेद । वेद लगभग ईसापूर्व 5000 वर्ष पहले रचे गए । ब्राह्मणग्रंथों में यज्ञ संबंधी प्रक्रियाओं तथा उनसे संबंधित अन्य विषयों पर विस्तार से लिखा गया है । प्रत्येक वेद का अपना अलग ब्राह्मण ग्रंथ है । शतपथ ब्राह्मण , गोपथ ब्राह्मण एवं षडविंशब्राह्मण आदि | कुछ प्रसिद्ध ब्राह्मण ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं । यज्ञों के अतिरिक्त आत्मा , परमात्मा तथा | ब्रह्म आदि विषयों पर चर्चा आरण्यक ग्रंथों में है । ये ग्रंथ अरण्यों - वनों में लिखे गए । ऋषि | लोग गांवों तथा नगरों से दूर रहकर इन विषयों पर चर्चा करते थे अतः इन ग्रंथों का नाम ही आरण्यक हो गया । आरण्यकों का विषय ही व्यवस्थित तथा विस्तृत रूप से उपनिषदों | में है । उपनिषदों की संख्या बहुत अधिक है परन्तु ईश केन , कठ , प्रश्न , मुण्डक , माण्डूक्य , | तैत्तिरीय , ऐतरेय , छान्दोग्य , बृहदारण्यक एवं श्वेताश्वतर नाम के ग्यारह उपनिषदों का विशेष | महत्त्व है । भारतीय संस्कृति को गंभीरता से समझने के लिए वैदिक साहित्य का अध्ययन | महत्त्वपूर्ण है ।

पाठ-18

कर्तव्यनिष्ठा

प्रस्तुत पाठ पण्डित अम्बिकादत्त व्यास द्वारा रचित प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास ' शिवराजविजयः ' से सङ्कलित है। इस रचना को संस्कृत - साहित्य का प्रथम ' ऐतिहासिक उपन्यास ' भी कहा जाता है। यह रचना राष्ट्रीय प्रेम की भावनाओं से परिपूर्ण है। 1857 के प्रथम स्वाधीनता - संग्राम की विफलता के बाद जनता में भय तथा आतंक फैल गया था। इस रचना के देशभक्तिपूर्ण कथानक के माध्यम से लेखक ने जनमानस के हृदय में उत्साह की भावनाओं का संचार करने का प्रयास किया है।

लोभ मनुष्य को पाप के गर्त में डाल देता है। सदाचारी मनुष्य किसी भी प्रकार के लालच में न फंसते हुए अपने कर्त्तव्य - मार्ग से नहीं डिगता। इसी भाव को प्रस्तुत पाठ में दर्शाया गया है।

उद्देश्ययानि

पाठं पठित्वा भवान् / भवती

दौवारिकस्य चरित्र - चत्रिणं करिष्यति ;

पाठस्य सारांशं कथारूपेण लेखिष्यति ;

कर्त्तव्यनिष्ठायाः महत्त्वं वर्णयिष्यति ;

पाठगतघटनानां क्रमेण संयोजनं करिष्यति ;

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1.**उपयुक्तम् उत्तरं चिनुत |**

(i) कर्तव्यनिष्टः कः आसीत्?

(क) दौवारिकः

(ख) संन्यासी

(ग) शिववीरः

(घ) सर्वे

उत्तरः क

(ii) दया कः याचते?

(क) दौवारिकः

(ख) संन्यासी

(ग) गौरसिंहः

(घ) सर्वे

उतरः ख

(iii) कः पुरुषः जीवने सम्मानं प्राप्नोति?

(क) शत्रुः

(ख) दुश्चरित्र

(ग) लालसायुक्त जनः

(घ) कर्तव्यनिष्टः

उत्तरः घ

(iv) कः उत्कोचं दातुम् इच्छति?

(क) दौवारिकः

(ख) संन्यासी

(ग) गौरसिंह:

(घ) लव:

उत्तर: ख

(v) दौवारिक : किम् न स्वीकरोति?

(क) उत्कोचं

(ख) वस्त्रं

(ग) पत्रं

(घ) पुष्पं

उत्तर: क

2. अधोलिखितान् प्रश्नान् उत्तरत-

(i) दौवारिकेण किमर्थम् आक्रुश्यते?

उत्तर: दौवारिकेन अनुमतिं विना दुर्गप्रवेशकारंणात् संन्यासी आक्रुश्यते।

(ii) संन्यासी कीदृशः आसीत्?

उत्तर: संन्यासी काषायवास: धृततुम्बीपात्र: भस्मलितललाट: रूद्राक्षामाला-भूषितः भव्यमूर्तिः आसीत्।

(iii) दौवारिक: कान् अगणयन् जीविका निर्वहति?

उत्तर: दौवारिक: स्वप्राणान् अगणयन् जीविकां निर्वहति॥

(iv) दौवारिक: शिरसा किम् वहति?

उत्तर: दौवारिक: शिरसा शिववीरस्य आज्ञा दहति |

(v) क: उत्कोचं दातुम् इच्छति?

उत्तर: संन्यासी उत्कोचं दातुम् इच्छति।

(vi) क: कठोर वचनै: तिरस्करोति?

उत्तर: दौवारिक:

(vii) दौवारिक: कस्य आज्ञां पालयति?

उत्तर: शिववारस्य

(viii) संन्यासी दौवारिकाय किम् दातुं कथयति?

उत्तर: पारदमस्य

(ix) पारभस्मनः किं वैशिष्टयम् आसीत्?

उत्तर: गुआमात्रेण डश तुलायरिमितं तामुम् सुवर्वेण विधातुं शक्नोति।

(x) दौवारिकः कीदृशैः वचनैः संन्यासिनम् तिरस्करोति?

उत्तर: कठोरवचनैः

(xi) दौवारिकः कस्य आज्ञां पालयति?

उत्तर: शिववीरस्य

(xii) संन्यासिनः कुत्र विचरन्ति?

उत्तर: वनेषु गिरिकन्दरेषु

(xiii) कः क्रुध्यति?

उत्तर: दौवारिकः

(xiv) क: आत्मपरिचयं न ददाति?

उत्तर: संन्यासी

3..**रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-**

(i) दौवारिक: प्रभुवर्यस्य आदेशं पालयति

उत्तर: दौवारिक: **कस्य** आदेशं पालयति?

(ii) दौवारिक: संन्यासिनम् दुर्गाध्यक्षसमीपे नेतुम् इच्छति।

उत्तर: दौवारिक: **कम्** दुर्गाध्यक्षसमीपे नेतुम् इच्छति?

(iii) दौवारिक: नम्रीभूय प्रणमति।

उत्तर: **क:** नम्रीभूय प्रणमति?

(iv) मया बहुशः परीक्षितः असि।

उत्तर: **केन** बहुशः परीक्षितः असि?

(v) संन्यासी तुरीया श्रमसेवी अस्ति।

उत्तर: **क:** तुरीया श्रमसेवी अस्ति?

4.अधोलिखितं नाटयांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत -

दौवारिकः (संन्यासिनो हस्तं घृत्वा) इतस्तावत् सत्यं कथय, कस्त्वम् ? कुत: आयात., केन वा प्रेषित

संन्यासी (स्मित्वेव) अथ त्वं मां मन्यसे ?

दौवारिक: कस्याप्यन्यस्य वा गृढचरं मन्ये । तदादेशं पालयिष्यामि प्रभुवर्यस्य ।

संन्यासी: त्यज ! नाहं पुनरायास्यामि दयस्व, दयस्व

प्रश्ना: (i) दौवारिक, संन्यासिनं कं मन्यते ?

(ii) संन्यासी दया के प्रार्थयति ?

(iii) 'मन्यसे' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम् ?

उत्तर: (i) गूढ़चर:

(ii) दौवारिक:

(iii) दौवारिक:

5.अधोलिखितं नाटयांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत –

दौवारिक: हहो! कपटसन्यासिन्! कथं विश्वासघात स्वामिवञ्चनं च शिक्षामा हे केचनान्ये भवन्ति ये उत्कोचलोभेन स्वामिनं वञ्चयित्वा तमसि पातयन्ति। न वयं शिवगणास्ताद्दशा:।

(संन्यासिनो हस्त धृत्वा) इतस्तावत् सत्य कथव आयात:? केन वा प्रेषित:?

संन्यासी: (स्मित्वेव) अथ त्वं क मन्यसे?

दौवारिक: कस्याप्यन्यस्य वा गूढचरं मन्ये। तदादेशं पालयिष्यामि प्रभुव्र्यस्या आगच दुर्गाध्यक्षसमोपे, स एवाभिज्ञाय त्वया सह यथोचित व्यवहारष्यात।

संन्यासी: त्यज! नाहं पुनरायास्यामि । दयस्व, दयस्व!

प्रश्ना: (i) संन्यासी कम् उत्कोचं दातुम् इच्छति ?

उत्तर - दौवारिकम् ।

(ii) दौवारिकः कस्य आदेश पालयति ?

उत्तर - प्रभुवर्यस्य ।

(iii) दौवारिकः कम् दुर्गाध्यक्षसमीपे नेतुम् इच्छति ?

उत्तर - संन्यासिनम् ।

(iv) दयां कः याचते ?

उत्तर संन्यासी ।

6. 'क' स्तम्भस्य विशेषणपदैः सह 'ख' स्तम्भात् उचितविशेष्यपदानि चित्वा मेलयत-

स्तम्भ 'क'	स्तम्भ ख
(i) धृततुम्बीपात्रः	(क) भाषणे:
(ii) कर्तव्यननिष्ठ:	(ख) संयासी
(ii) कठोरै:	(ग) व्यवहार:
(iv) अनुचितः	(घ) गौरसिंहः
(v) श्रीमान्	(ङ) दौवारिक:

उत्तर: (i) - ख , (ii) – ङ , (iii) – क , (iv) – ग , (v) - घ

7.शब्दार्था:

अध: - नीचे

क्षम्यताम् – क्षमा करे

दयस्व – दया करो

प्रविशन्त: - प्रवेश करते हुए को

यथोचित – जो उचित होगा

8.पाठ सार लेखनं |

1. एकदा एकः संन्यासी - शिववीरस्य पार्श्वे गन्तुम् इच्छति।
2. दौवारिका तम् कठोरभाषणैः तिरस्करोति ।
3. संन्यासी दौवारिकाय उत्कोचं दातुं कथयति ।
4. दौवारिकः उत्कोचं दातुं कथयति ।
5. गौरसिंहः नृपः दौवारिकम् बहुशः परीक्ष्यः तस्मै पुरस्कारम दातुम् इच्छति।

9.दौवारिकस्य चरित्र चित्रणं लिखत |

1. दौवारिकः कर्तव्यनिष्ठ पुरुषः अस्ति।

2 सः शिववीरस्य आदेशम् पालयति।

3 सः संन्यासिनम् नम्रीभूय प्रणमति ।

4 संन्यासी दौवारिकाय उत्कोचं दातुं कथयति ।

5 दौवारिकः उत्कोचम् न - स्वीकरोति ।

6 सः सन्यासिनम् कठोर भाषणै : तिरस्करोति ।

योग्यता विस्तारः

लेखकपरिचयः-

भारतभूषण , भारतभास्कर , घटिकाशतक , शतावधान , धर्माचार्य , महामहोपदेशक , सुकवि साहित्याचार्य पं . अम्बिकादत्त व्यास का जन्म राजस्थान प्रदेश के जयपुर जिलान्तर्गत ' धूला ' नाम गाँव के निवासी पं . दुर्गादत्त जी के घर में 1885 ईस्वी में हुआ। इन्होंने 78 ग्रन्थों की रचना की । इन्हें शतरंज , चित्रकारी , संगीत , विविध वाद्ययन्त्र - वादन , हाजिरजवाबी , वाक्पटुता में महारत हासिल थी । वे एक घटी अर्थात् 24 मिनट में 100 नए श्लोकों की रचना करने में समर्थ थे । 100 प्रश्नों का उनके क्रमानुसार उत्तर देने में भी समर्थ थे , जिसके कारण इन्हें ' शतावधान ' की उपाधि दी गयी।

शिवराजविजय

शिवराजविजय के कारण व्यास जी को सर्वाधिक ख्याति प्राप्त हुई । इसकी भाषा प्रवाहपूर्ण एवं भावानुसारिणी है । प्रस्तुत पाठ वीर - रस युक्त है । पात्रों का चरित्र - चित्रण भावानुकूल एवं विषयवस्तुपरक है ।

पाठ-19

पुत्रोऽहं पृथिव्याः

प्राचीन काल में मनुष्य का जीवन प्रकृति की गोद में ही पलता था। प्रकृति ने हमें बहुत कुछ दे रखा है जैसे वायु, जल, जीव - जंतु, स्थल और वृक्ष आदि। पशु - पक्षी, वृक्ष, लता इत्यादि हमारे परिवार के अंग ही थे। दोनों का जीवन एक दूसरे पर आश्रित था। मानव द्वारा अपनी लालच की पूर्ति में प्रकृति का मनमाना दोहन करने से प्राकृतिक ऊर्जा दूषित और विलुप्त हो रही है और प्रकृति में असन्तुलन हो रहा है, इन सबका संरक्षण प्रकृति संरक्षण कहलाता है। भारतीय संस्कृति में भूमि को माता के समान माना गया है और ' हम पृथ्वी के पुत्र और पुत्रियाँ हैं ? ऐसी भावना को लेकर हम सबको चलना चाहिए यह सिखाया गया है .संस्कृत वाङ्मय में प्रकृति संरक्षण के प्रति जागरूकता मिलती है। इस पाठ में हमने प्रकृति संरक्षण से संबंधित श्लोकों को लिया है जो हमें वातावरण शुद्धि और प्रकृति संरक्षण की शिक्षा प्रदान करते हैं। आइये हम इनमें | से कुछ का अध्ययन करें।

उद्देश्यानि

इमं पाठं पठित्वा भवान् - भवति

पर्यावरणरक्षणस्योपायान् वर्णयिष्यति / लेखिष्यति ; .

पाठगतपद्यानां सस्वरं पाठं करिष्यति ;

पद्यानामन्वयं लेखिष्यति।

श्लोकभावमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं करिष्यति

बहुव्रीहिसमस्तपदानां विग्रहं

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1.**उपयुक्तम् उत्तरं चिनुत |**

(i) किं पादपेषु स्पर्शः विद्यते।

(क) आम्

(ख) न

(ग) कदा

(घ) सर्वदा **उत्तर: क**

(ii) वयं कस्याः पुत्राः ?

(क) पृथिव्याः

(ख) आकाशः

(ग) पातालः

(घ) सर्वः **उत्तर: क**

(iii) कीर्ति केन प्राप्यते ?

(क) यज्ञदानेन

(ख) भूमिदानेन

(ग) धनदाने

(घ) सर्वस्वदाने **उत्तर: ख**

(iv) जीवनं______जलाशयसुनिर्भरम् |

(क) मादकानां

(ख) अल्पजनानां

(ग) सर्वप्राणिनां

(घ) पादपानां **उत्तर: ग**

(v) माता भूमिः ____पृथिव्याः |

(क) कुपुत्रोऽहं

(ख) निष्ठीहहं

(ग) पुत्रोऽहं

(घ) ऊर्जस्तन्तः **उत्तर: ग**

2.अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत- पूर्णवाक्येन प्रश्नान् उतरत-

(i) दशकूपसमा का अस्ति?

उत्तर: वापी

(ii) दशहदसमः कः अस्ति?

उत्तर: पुत्रः

(iii) कीदृश्यः गावः भवेयुः?

उत्तर: घृतक्षीरप्रदा

(iv) अस्माकम् समानाः एव के जिघ्रन्ति?

उत्तर: पादपाः

(v) कि पादपेषु स्पर्शः विद्यते?

उत्तर: आम्

(vi) कीर्तिः केन प्राप्यते ?

उत्तर: भूमिदानेन , गोदानेन

(vii) लोहितं ष्ठीवनं वा कुत्र न समुत्सृजेत्?

उत्तर: अप्सु

(viii) सर्वप्राणिनां जीवनं कुत्र सुनिर्भरं भवति?

उत्तर: जलाशयेषु

(ix) वयं कस्याः पुत्राः ?

उत्तर: पृथिव्याः

(x) द्रुमः कति पुत्रसमः अस्ति ?

उत्तर: दश

(xi) घृतोद्भवाः काः सन्ति?

उत्तर: गावः

(xii) तस्मात् के जिघ्रन्ति?

उत्तर: पादपाः

(xiii) स्पर्शः कुत्र विद्यते?

उत्तर: फले – पुष्पे

(xiv) काः सन्तु सदा मे गृहे?

उत्तर: गावः

3.अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत –

दशकूपसमा वापी दशवापीसमो ह्रदः।
दशह्रदसमः पुत्रः दशपुत्रसमो द्रुमः॥ 1॥

अन्वयः

वापी दशकूपसम (भवति), __1__ दशवापीसमः (भवति), __2__ दशह्रदसमः (भवति) द्रुमः __3__(भवति)।

उत्तर: 1) ह्रदः
2) द्रुमः
3) दशपुत्रसमो

4.अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत –

ऊष्मतो म्लायते वर्णस्त्वक् फलं पुष्पमेव
म्लायते शीर्यते चापि स्पर्शस्तेनात्र विद्यते।

अन्वय:

फलम् __1__ एवम् च वर्णस्त्वक् च __2__ म्लायते शीर्यते, तेन __3__ अपि अत्र विद्यते।

उत्तर: 1) पुष्पम्
2) ऊष्मत:
3) स्पर्श:

5.अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत –

भूमिदानेन ये लोका गोदानेन न कीर्तिताः।
ते लोकाः प्राप्यन्ते पुभि: पादपाना प्ररोहणे।।

अन्वय:

भूमिदानेन __1__ च (लोके) कीर्तिताः. __2__ ते लोकाः पादपानाम _3__ अपि प्राप्यन्ते|

उत्तर: 1) गोदानेन
2) पुभि:
3) प्ररोहणे

6.अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत –

नाप्सु मूत्रं पुरीषं वा ष्ठीवनं वा समत्सृजेत्।
अमेध्यालिप्तमन्यद्वा लोहितं वा विषाणि वा।।

अन्वयः

मूत्रम्, __1__, वा ष्ठीवनम्, लोहितम्, __2__, अमेध्यालिप्तम् अन्यत् वा __3__ न समुत्सृजेत्।

उत्तर: 1) पुरीषं
2) विषाणि
3) अप्सु

7.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

जीवनं सर्वप्राणिनां जलाशयसुनिर्भरम् ।
संरक्ष्यं वर्धनीयं च जलं रक्षति रक्षितम्
इत्यत्र (i) किमर्थं जलं रक्षणीयम् ?
(ii) केषां जीवनं जलाशयसुनिर्भरम् ?

उत्तर: (i) जीवनस्य रक्षायाय

(ii) सर्वप्राणिनां जीवनं जलाशयसुनिर्भरम् |

8.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

नाप्सु मूत्रं पुरीषं वा, ष्ठीवनं वा समुत्सृजेत् ।
अमेध्यालिप्तमन्यद्वा लोहितं वा विषाणि वा

(i) इति पद्ये 'रक्तम्', 'जलेषु' इति अर्थद्वये किं पद्वयं प्रयुक्तम् ?

उत्तर: रक्तम् – लोहितं

जलेषु – अप्सु

9.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

दशकूपसमा वापी दशवापीसमो ह्रदः।
दशहदसमः पुत्रः दशपुत्रसमो द्रुमः।।

(i) कः दशकूपः समः अस्ति ?

उत्तर - वापी ।

(ii) द्रुमः कति पुत्रसमः अस्ति ?

उत्तर - दश ।

(iii) दशह्रद समो कः अस्ति ?

उत्तर - पुत्रः ।

10.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

घृतक्षीरप्रदा गावो घृतयोन्यो घृतोद्भवाः।
घृतनद्यो घृतावर्तास्ता में सन्तु सदा गृहे।।

(i) गावः किम् यच्छति ?

उत्तर क्षीरम् ।

(ii) घृतोद्वाः काः सन्ति ?

उत्तर गाव: ।

(iii) काः सन्तु सदा मे गृहे ?

उत्तर . - गावः ।

योग्यताविस्तारः

कवि परिचय

आपने पाठ में पर्यावरण से संबंधित श्लोकों का अध्ययन किया है । ये श्लोक और मंत्र मत्स्य पुराण , पद्मपुराण , महाभारत , मनुस्मृति तथा अथर्ववेद से उद्धृत हैं । आपने पिछले पाठों में महाभारत , मनुस्मृति और अथर्ववेद से संबंधित कुछ अन्य श्लोक और संवाद पढ़े हैं । यह पाठ उन ग्रंथों में निहित पर्यावरण के प्रति सजगता का वर्णन करता है । वेद अपौरुषेय हैं । ज्ञान - विज्ञान की सारी बातें हमारे इन ग्रंथों में भरी पड़ी हैं जिनके बारे में जानकारी हम सबको होनी चाहिए । पिछले पाठों में आपने इन ग्रंथों के रचयिताओं के बारे में पढ़ा होगा । महाभारत और पुराणों के रचयिता महर्षि वेद व्यास हैं , इस संबंध में एक श्लोक भी प्रचलित है ।

' अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् ।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ।।

पाठ-20

सत्याग्रहाश्रमः

आप महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व से परिचित ही हैं। अंग्रेजों की दासता व अन्याय से देश को मुक्त कराने में जहाँ उनके सत्याग्रह की भूमिका प्रशंसनीय थी , वहीं उनका आचार - व्यवहार आज भी हमारे लिए अनुकरणीय है । आधुनिक युग में हम विज्ञान की उपलब्धियों से तो बहुत उत्साहित हैं- किन्तु हम सामाजिक जीवन में गाँधी जी के आदर्शों व सिद्धान्तों से दूर हटते जा रहे हैं। जो उचित नहीं है। प्रस्तुत पाठ आधुनिक कवयित्री पण्डिता क्षमाराव कृत ' सत्याग्रहगीता ' के चतुर्थ अध्याय से उद्धृत है जिसमें उन्होंने साबरमती के सत्याग्रह आश्रम तथा महात्मा गाँधी के आदर्श आचरण व उनके चिन्तन का सुन्दर वर्णन किया है। | हमें यह पाठ सत्य , अहिंसा तथा सदाचार को जीवन में अपनाने की प्रेरणा देता है , जिससे हम इस महान् देश के महान् नागरिक बन सकें।

उददेश्यानि

इमं पाठं पठित्वा भवान् / भवती

सत्याग्रहाश्रमस्य विशेषतां वर्णयिष्यति ;

पाठगतश्लोकानाम् अन्वयं भावार्थं च लेखिष्यति ;

महात्मनः गान्धिनः चारित्रिक वैशिष्ट्यं लेखिष्यति ;

दीर्घ - पूर्वरूप - विसर्गसन्धियुक्तपदानां सन्धिच्छेदं करिष्यति ;

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1 उपयुक्तम् उत्तरं चिनुत |

(i) बुद्धः कुत्र राजते स्म् ?

(क) पीपलवृक्षतले

(ख) आम्रवृक्षतले

(ग) वटवृक्षतले

(घ) बोधिद्रुमतले **उत्तर: घ**

(ii) सत्याग्रहाश्रम: क: निवास: अस्ति?

(क) पाप:

(ख) पुण्य:

(ग) मुनि:

(घ) बोधि: **उत्तर: ख**

(iii) संसारे क: बल: श्रेष्ठ: मन्यते?

(क) शक्ति:

(ख) धन:

(ग) सत्ता

(घ) सत्य: **उत्तर: घ**

(iv) सुकलत्र: क: आसीत् ?

(क) महात्मा गाँधी:

(ख) बुद्ध:

(ग) क्षमाबाई

(घ) शिवि: **उत्तर: क**

(v) महात्मा गाँधी आश्रमस्य नाम: क: अस्ति?

(क) सत्याग्रह

(ख) अहिंसाग्रह

(ग) देवाग्रह

(घ) पितृग्रह **उत्तर: क**

2 अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-

(क) सत्याग्रहाश्रमः कुत्र स्थितः अस्ति?

उत्तर: सबर्मत्या: नद्या: तटे

(ख) सुकलत्रः कः आसीत्?

उत्तर: महात्मा गाँधी

(ग) तस्मिन् पुण्यनिवासे किं प्रमाणम् आसीत्?

उत्तर: सत्यम्

(घ) सत्यमेव केभ्य: अतिरिच्यते?

उत्तर: सर्वबलेभ्य:

(ङ) 'सत्याग्रहाश्रम:' इति नाम केन दत्तम्?

उत्तर: महात्मना

(च) महात्मा गाँधी केषां हितैकपरायणः अभवत् ?

उत्तर: स्वबंधूनाम्

(छ) सत्यादिधर्माणाम् बलं कीदृशं भवति?

उत्तर: अमोघम् अद्भुतम् च

(ज) महात्मनः गाँधिन: गुणैः वशीभूता: के व्यवर्धन्त

उत्तर: पदानुगा:

(झ) सर्बबलेषु श्रेष्ठं बलं किम् अस्ति?

उत्तर: सत्यम्

(ञ) महात्मनः विनीतवसते: नाम किम्?

उत्तर: सत्याग्रहाश्रम:

(ट) आत्मवत् सर्वभूतानि क:पश्यति?

उत्तर: महात्मा गाँधी

(ठ) गुरुः सबहून् कानि ग्राहयामास?

उत्तर: व्रतानि

(ड) सत्याग्रहाश्रमः कस्याः नद्याः तीरे अस्ति?

उत्तर: सबर्मत्या:

(ढ) यथार्थ: क: आसीत्?

उतर: आश्रम:

(ण) आश्रमवासिनाम् क: पिता इव आसीत् ?

उत्तर: महात्मा गाँधी

(त) बुद्ध: कुत्र राजते स्म?

उत्तर: बोधिद्रुमतले

3. अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत –

ध्यायन् क्लेशान् स्वबन्धूनां तद्धितैकपरायणः।
विराजते मुनिर्बुद्धो बोधिद्रुमतले यथा।।

अन्वयः

स्वबन्धूनाम् _1__ ध्यायन् तद्धितैकपरायणः __2__विराजते यथा बोधिद्रुमतले __3__ (व्यराजत)।

उत्तरः 1) क्लेशान्
2) मुनिः
3) बुद्धः

4 .अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत –

निर्ममो नित्यसत्त्वस्थो मिताशी सुस्मिताननः।
सुकलत्रः शिशुप्रेमी पितेवाश्रमवासिनाम्।।

अन्वयः

(महात्मा गाँधी) निर्ममः, __1__, मिताशी, सुस्मिताननः, __2__, शिशुप्रेमी (च आसीत्) । (सः) आश्रमवासिनाम् __3__ इव (आसीत्) ।

उत्तरः 1) नित्यसत्त्वस्थः
2) सुकलत्रः
3) पिता

5 अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत –

ततस्तीरे सबर्मत्या नाम्ना सत्याग्रहाश्रमः ।
महात्मा स्थापयामास सदनं सानुयात्रिकः।।

अन्वयः

तत् __2__ महात्मा सबर्मत्याः __2__ सत्याग्रहाश्रमः (इति) नाम्ना __3__ स्थापयामास।

उत्तरः 1) सानुयात्रिकः
2) तीरे
3) सदनं

5.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

ततस्तीरे सबर्मत्या नाम्ना सत्याग्रहाश्रमः ।
महात्मा स्थापयामास सदनं सानुयात्रिकः।।

1 सत्याग्रहाश्रमः कस्या नद्याः तीरे अस्ति?
उत्तर - सबर्मत्या ।

2 सत्याग्रहाश्रमः कः स्थापयासाम ?
उत्तर - महात्मा गाँधी

6.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

निर्ममो नित्यसत्त्वस्थो मिताशी सुस्मिताननः।
सुकलत्रः शिशुप्रेमी भितेवाश्रमवासिनाम्||

1 सुकलत्र कः आसीत् ?
उत्तर - महात्मा गाँधी ।

2 आश्रमवासिनाम् कः पिता इव आसीत्?

उत्तर - महात्मा गाँधी ।

3 कः मिताशी सुस्मितानन ,शिशु प्रेमी च आसीत् ?

उत्तर - महात्मा गाँधी ।

7.अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

इति सत्यादिधर्माणाममोधं बलमद्भुतम्।
वर्णयन् ग्राहयामास व्रतानि सुबहून् गुरुः ॥

(i) सत्यादिधर्माणां बलं कीदृशम् आसीत् ?

(ii) 'गुरुः' इति पदस्य कः अर्थः ?

(iii) गुरुः व्रतानि कान् ग्राहयामास ?

उत्तर: (i) अद्भुतम्

(ii) श्रेष्ठ:

(iii) सत्यादिधर्माणाम् व्रतानि ग्राहयामास |

8.विशेषण-विशेष्यमेलनं कुरुत।

क	**ख**
(क) तस्मिन्	(i) मुनि:
(ख) यथार्थ:	(ii) पुण्यनिवासे
(ग) सानुयात्रिक:	(iii) आश्रमः
(घ) तद्धितैकपरायणः	(iv) महात्मा

उत्तर: क – ii , ख – iii , ग – iv , घ – i

9.शब्दार्था:

सनुयात्रिक: - अपने अनुयायियो का

मिताशी – कम भोजन करने वाला

अतिरिच्यते – सबसे बढ़कर है

बोधिद्रुमतले – बोधि वृक्ष (पीपल) के नीचे

पदानुगा: - पीछे चलने वाले

योग्यताविस्तारः

कवि परिचयः

प्रस्तुत पाठ पण्डिता क्षमाराव की कृति ' सत्याग्रहगीता ' के चतुर्थ सर्ग से उद्धृत है । संस्कृत साहित्य की विदुषी पं . क्षमाराव का जन्म 1890 ई . में पूना (महाराष्ट्र) में हुआ था । पं . क्षमाराव ने सन् 1926 में साबरमती आश्रम जाकर महात्मा गाँधी जी का सान्निध्य प्राप्त किया । 1938 में उत्कृष्ट संस्कृत योगदान के लिए उन्हें ' पण्डिता ' की उपाधि से विभूषित किया गया । संस्कृत साहित्य , समाज व राष्ट्र की सेवा करते हुए 1954 ई . में इनका निधन हो गया ।

कृति परिचयः

' सत्याग्रहगीता ' पं . क्षमाराव की प्रथम कृति है जो 18 अध्यायों में विभक्त है । पं . क्षमाराव ने अनुष्टुप् , छन्द में गीता की अनुकृति पर गाँधी जी के सत्याग्रह आंदोलन को प्रस्तुत किया है । इस ग्रन्थ में 659 पद्यों में क्षमाराव ने गाँधी जी की अथक साधना का विवरण दिया है ।

पाठ-21

तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते

प्रस्तुत पाठ ' उत्तररामचरितम् ' से उद्धृत नाट्यांश का संपादित रूप है । अयोध्या के राजा रामचन्द्र के द्वारा अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर छोड़ा गया । घोड़ा जब वाल्मीकि आश्रम के समीप पहुँचता है तब क्षत्रियों के पराक्रम रूपी इस घोड़े को लव अपने साथी बटुकगणों सहित आश्रम की ओर ले जाता है । घोड़े को छुड़ाने के लिए चन्द्रकेतु की सेनाओं का लव के साथ युद्ध होता है । तब सुमन्त्र सारथि के साथ रथारूढ चन्द्रकेतु आता है । अकेले लव के साथ बहुत से सैनिकों को युद्ध करते देख चन्द्रकेतु लज्जा अनुभव करता है । तभी चन्द्रकेतु की सेना भागती दिखाई देती है । चन्द्रकेतु लव से द्वन्द्व युद्ध के लिए कहता है । चन्द्रकेतु के सैनिक लव पर पुनः आक्रमण करते हैं । लव के जृम्भकास्त्र के प्रयोग से सारी सेना स्तब्ध हो जाती है । लव और चन्द्रकेतु परस्पर आत्मीयता भरा स्नेह और अनुराग | अनुभव करते हैं । लव को पैदल देख चन्द्रकेतु भी रथ से नीचे उतर जाता है और कहता है कि यही न्याय युद्ध का सिद्धान्त है और यही रघुकुल की रीति है ।

उद्देश्यानि

इमं नाट्यांशं पठित्वा भवान् / भवती
लवस्य पराक्रमविषये लेखितुं समर्थः भविष्यति ;
चन्द्रकेतोः चरित्रस्य उल्लेखं कर्तुं शक्ष्यति ;
नाट्यांशं घटनाक्रमेण पुनर्लेखिष्यति ;
कर्मधारयसमस्तपदानां विग्रहं करिष्यति ;

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1 उपयुक्तम् उत्तरं चिनुत |

(i) लक्ष्मणस्य पुत्रः नाम किम्?
(क) चन्द्रकेतु
(ख) कुशः
(ग) शिवः
(घ) लवः **उत्तर: क**

(ii) रामस्य सेनायाः प्रमुखाः कः अस्ति ?
(क) लव :
(ख) इन्द्रः
(ग) शिव :
(घ) चन्द्रकेतु : **उत्तर: घ**

(iii) जृम्भकास्रतम् केन प्रयुक्तम ?
(क) रामेण
(ख) कुशेन
(ग) लवेन
(घ) लक्ष्मेण **उत्तर: ग**

(iv) सुमन्त्र कस्य सारथिः अस्ति ?
(क) इन्द्रः

(ख) रावणः

(ग) चन्द्रकेतो:

(घ) शिवः उत्तर: ग

(v) लवस्य गुरु नाम किम् ?

(क) वाल्मीकि

(ख) वशिष्ठ :

(ग) परशुराम

(घ) जनक : उत्तर: क

2.अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-

(क) समस्तसैन्यदलम् अपि कस्य समक्षं योद्धुम् पर्याप्तं नासीत्?

उत्तर: लवस्य

(ख) चन्द्रकेतु: कम् सखा इति कथयति ?

उत्तर: लवम्

(ग) चन्द्रकेतु: कस्य कृते दर्पनिकष: अस्ति?

उत्तर: लवस्य

(घ) सूर्यकुलकुमारस्य वीरवचनप्रयुक्ति: कीदृशी अस्ति?

उत्तर: प्रसन्नकर्कशा

(ङ) कस्य सैनिकैः युगपत् युद्ध प्रारब्धम्?

उत्तर: चन्द्रकेतो:

(च) जृम्भकास्त्र केन प्रयुक्तम्?

उत्तर: लवेन

(छ) सैन्यम् किमिव अस्पन्दम् आसीत्?

उत्तर: चित्रलिखितमिव

(ज) लवः जृम्मकास्त्रं कुतः प्राप्तवान्?

उत्तर: वाल्मीके:

(झ) स्नेहात्मक: तन्तुः कानि अन्तः सीव्यति?

उत्तर: भूतानि

(ञ) स्यन्दनात् कः अवतरति?

उत्तर: चन्द्रकेतु:

(ट) वीरचारित्रपद्धति: केषाम् अस्ति?

उत्तर: रघुसिंहानाम्

(ठ) कस्य महानुभावस्य प्रसन्नकर्कशा वीरवचनप्रयुक्ति आसीत्।

उत्तर: सूर्यकुलकुमारस्य

(ड) लवः कीदृशः बालकः अस्ति?

उत्तर: पराक्रमी, वीर:

(ढ) द्विरद-तुरग-स्यन्दनस्थाः कस्य सैनिकाः आसन्?

उत्तर: चन्द्रकेतो:

(ण) कीदृशः पक्षपात: प्रतिक्रिया योग्य: न भवति?

उत्तर: अहेतु:

(त) तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते इति शीर्षकम् आधृतम् अस्ति?

उत्तर: लवम्

(थ) पाठोऽयम् कस्मात् ग्रन्थात् संकलित:? कश्च तस्य लेखक:?

उत्तर: उत्तररामचरितात् , भवभूति:

3 कः कम् प्रति कथयति ?

	कः	**कम् प्रति**
(i) आर्य! त्वर्यताम्। अस्मद्रथं तत्रैव नयतु।	चन्द्रकेतु:	सुमन्त्रं प्रति
(ii) आयुष्मन्! एष प्राप्ताः वयम्। पश्यतु तत्रास्ति लवः।	सुमन्त्र:	चन्द्रकेतुं प्रति
(iii) सत्यमैक्ष्वाक: खल्वसि ।	लव:	चन्द्रकेतुं प्रति
(iv) कुतः पुनरस्य जृम्भकस्य प्राप्ति:	सुमन्त्र:	चन्द्रकेतुं प्रति
(v) एकस्तावदयं: वीरपुरुष: पूजितो भवति	चन्द्रकेतु:	सुमन्त्रं प्रति

4.अधोलिखित नाट्यांश पठित्वा प्रश्नान् उतरत-

(ततः प्रविशति सुमन्त्रेण सह रथारूढ: चन्द्रकेतुः)

चन्द्रकेतु:- आर्य! एकाकिनं लवम् उद्दिश्य बहूनां युद्धारम्भ: इति लज्जते मे हृदयम्।

सुमन्त्र: - वत्स! समस्तसैन्यदलम् अपि लवसमक्षं योद्धम् नालम्।

चन्द्रकेतु:- (सविस्मयम्) हन्त! प्रतिनिवर्तन्ते अस्माकं सैनिकाः। आर्य। त्वर्यताम्, त्वर्यताम्! अस्मद्रथं तत्रैव नयतु।

(i) चन्द्रकेतु किमर्थं लज्जितः इव अनुभवति ?

उत्तर - सर्वे सैनिकाः एकाकिना लवेन सह युद्धम् कुर्वन्ति ।

(ii) चन्द्रकेतु : कं रथं युद्धस्थले नेतुम् आदिशीत ?

उत्तर - सुमन्त्र सारथिम् ।

(iii) चन्द्रकेतोः सैनिकैः सह कस्य युद्धम् भवति ?

उत्तर -लवस्य ।

5. अधोलिखित नाट्यांश पठित्वा प्रश्नान् उतरत-

चन्द्रकेतुः- भो भो राजानः! असंख्यातैः द्विरद-तुरग-स्यन्दनस्थैः भवद्भिः कवचावृत्तैः एकस्मिन् पदातौ युगपत् यत् युद्धं प्रारब्धं तद् वः धिग् अस्मान् च धिक्।

लवः- (सोन्माथम्) आ: कथम् अनुकम्पते नाम? (ससम्भ्रमं विचिन्त्य) भवतु जृम्भकास्त्रेण तावत् सैन्यानि संस्तम्भयामि। (इति नाट्येन मुञ्चति)

सुमन्त्रः- अये! किमिदानीम् सैन्यघोषाः प्रशान्ता:! वत्स! मन्ये कुमारेण जृम्भकास्त्रं प्रयुक्तमिति।

चन्द्रकेतु:- अत्र कः सन्देहः! पश्यतु सैन्यम् चित्रलिखितमिव अस्पन्दम् आस्ते। अतोऽजितवीर्यं जृम्भकास्त्रमेवेदम्॥

सुमन्त्र:- कुतः पुनरस्य जृम्भकस्य प्राप्तिः?

चन्द्रकेतुः- भगवतः प्राचेतसादिति मन्यामहे।

(i) जृम्भकास्त्र केन प्रयुक्तम् ?

उत्तर - लवेन ।

(ii) सैन्यम् किम् इव अस्पन्दम् आसीत् ?

उत्तर - चित्रालिखितमिव ।

(iii) कुत्र सन्देहः नास्ति ?
उत्तर - इदं जृम्भकास्त्र एवं अत्र सन्देह: नास्ति ।
(iv) लवः कुतः जृम्भकस्य प्राप्ति ?
उत्तर - मन्यामहे वाल्मीकिः ।

6.लवस्य चरित्र चित्रणं लिखत |

1 सः वीरः अस्ति।
2 . सः बुद्धिमान: अस्ति।
3. सः रामस्य पुत्रः अस्ति।
4. सः चन्द्रकेतुना सह युद्धं कृतवान् ।
5 सः वाल्मीकि : आश्रमः वसति |
6 सः न्यायप्रियः अस्ति।
7 लवः गुरुः वाल्मीकिः अस्ति।

7.चन्द्रकेतुस्य चरित्र चित्रणं लिखत |

1 सः वीरः अस्ति।
2 . सः ब्रुद्धिमान अस्ति।
3. सः लक्ष्मणस्य पुत्रः अस्ति।
4. सः लवेन सह युद्धं कृतवान् ।
5 सः रामस्य सेना : प्रमुखाः अस्ति।
6 सः लवस्य भ्राताः अस्ति ।
7. सः न्यायप्रियः अस्ति।

योग्यतविस्तारः

कवि - परिचयः- ' भवभूति ' विदर्भ प्रदेश में पद्मपुर के निवासी थे । इनका स्थितिकाल 700 ई . या सातवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध माना जाता इनका जन्म उदुम्बरवंश ब्राहमणों के परिवार में हुआ था । इनके पिता का नाम ' नीलकण्ठ ' तथा माता का नाम ' जतुकर्णी ' था । इनके गुरु का नाम ' ज्ञाननिधि ' था । ' श्रीकण्ठ ' उनकी उपाधि थी । वे सभी शास्त्रों के ज्ञाता तथा रससिद्ध कवि थे ।

कृतिपरिचय- ' भवभूति ' को तीन रचनाएं प्रसिद्ध है ।
1- मालतीमाधवम् 2 महावीरचरितम् तथा 3- उत्तररामचरितम् ।
ये तीनों नाटक हैं । ' उत्तररामचरितम् ' इनकी सर्वप्रसिद्ध रचना है ।
इसमें सात अंक हैं। ' उत्तररामचरित ' की कथा वस्तु रामायण
आधारित है जिसे ' भवभूति ' ने अपनी कल्पना से खूब सजाया है |
" उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते ।

पाठ -22

पत्र - लेखनम्

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे अपने भावों, विचारों के आदान-प्रदान की आवश्यकता होती है। इसके बिना वह जीवित नहीं रह सकता। जो समीप होते हैं उनसे हम वार्तालाप द्वारा अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। हमारे सभी आत्मीय सर्वदा हमारे समीप ही वर्तमान नहीं रहते हैं। अतः दूर स्थित स्वकीय लोगों के साथ विचार विनिमय का जी सर्वसुलभ साधन है, वह है 'पत्र'। आज जबकि दूर संचार टेलीफोन, मोबाइल, इंटरनेट (ईमेल) तथा फेसबुक एवं आरकुट जैसी सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि ने यद्यपि स्थान की दूरियों को कम कर दिया है, तब भी पत्रों का महत्त्व कम नहीं हुआ है। ये पत्र-व्यवहार हमारे मित्रों, कार्यालयों अथवा संस्थाओं आदि के साथ भी हो सकता है।

प्रस्तुत पाठ में आप सीखेंगे कि किस अवसर पर किस व्यक्ति को किस प्रकार के भावों और संदेशों से युक्त पत्र संस्कृत भाषा में भेजे जा सकते हैं। यहाँ हम इस तरह के सभी पत्रों की चर्चा करेंगे।

पत्र प्रारूपम्

यद्यपि सभी पत्र एक-दूसरे से अलग होते हुए भी प्रारूप/लेखन के प्रकार में कुछ समानताएं व विभिन्नताएँ लिए रहते हैं, इन्हें जान लेने पर पत्र लेखन में पर्याप्त सरलता और एकरूपता आ जाती है। इसलिए पहले इनके सामान्य प्रारूप पर विचार किया जा रहा है। पत्र प्रारूप के विभिन्न अंग होते हैं

(क) पत्रलेखकस्य पत्रसङ्केतः, तिथिः।

(ख) संबोधनम् अभिवादनं, कौशल वचांसि च।

(ग) विषयवस्तु

(घ) समाप्तौ वाक्यांशविशेषः

(ङ) संबंधसूचकशब्दाः नाम च

(च) पत्रसङ्केतः (पत्रस्वीकर्तुः पत्रप्रेषयितुः च)

पत्र सङ्केतः तिथिश्च-

पत्र-लेखन के समय पत्र के ऊपर दाँई और आप अपने घर का पता, उसके नीचे नगर का नाम, प्रदेश का नाम तथा उसके नीचे उस दिन की तिथि लिखेंगे। जैसे

(i)बी- 3/76

विद्यारण्यपुरम् दिल्लीत: 12.10.2011

(ii)परीक्षाभवनत: परीक्षाभवनात्

12.10.2010

ऊपर पता एवं तिथि लिखने के दो उदाहरण दिये गये हैं। ध्यान से देखें कि संस्कृत में नगर (दिल्ली) के नाम के साथ "त:" जोड़ा गया है त का प्रयोग पञ्चमी विभक्ति के अर्थ में होता है। पञ्चमी का अथवा उसके स्थान पर 'त:' का प्रयोग अलग होने की अवधि को अर्थात् जहाँ से अलग हुआ जाता है उसे बताता है। पत्र लिखते समय स्थान के साथ 'त:' का प्रयोग यह दर्शाता है कि पत्र उस निर्दिष्ट स्थान से लिखा गया है।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि परीक्षा केन्द्र में 'घर का पता' तथा 'नगर का नाम न लिखकर केवल 'परीक्षाभवनात्' या 'परीक्षाभवनत:' लिखा जाता है। ऐसा इसलिए कि परीक्षक से आपका नगर तथा घर का पता गोपनीय रहे अथवा आप यथानिर्देश पत्र सकते लिख सकते हैं।

(ख) संबोधनं अभिवादनं आशीर्वचांसि/कुशलवचासि वा।

पत्र का प्रारम्भ संबोधन पद से किया जाता है। यह पत्र के बाँई तरफ लिखा जाता है। हम जिसे पत्र लिख रहे हैं अर्थात् पत्रस्वीकृर्ता उसके अनुसार पत्र में संबोधन पदों में भी परिवर्तन हो आधार पर होती है।

अधुना पाठम् अवगच्छामः

विशिष्टावसरेषु लेखनीयानि विविधपत्राणि

1.नववर्षस्यागमे सखीम् प्रति शुभकामनाः

217 बी सरोजनीनगरम्
नवदिल्लीत:
28.12.2020

प्रिय सखि दीपा,
सप्रेम नमस्ते।
नवसंवत्सरोऽयं तव जीवने प्रतिदिनं सौख्यं,सफलता,
समृद्धिम्,नवतां च पूरयेत्। गृहे समेषां परिवारजनानां
कृतेऽपि नववर्षस्य हार्दिकशुभकामनाः।

तव सखी
टीना

2. दूरदर्शनं प्रति/आकाशवाणी प्रति पत्रम्।

336, सरस्वतीपुरम्
दिल्लीतः
10.7.11

माननीयाः निर्देशकमहोदया: दूरदर्शनम्/आकाशवाणी
नवदेहली

मान्याः ,
सादरं नमः
गत सोमवासरे (04.07.21) रात्रौ नववादने (9.00)
प्रसारितं संस्कृतनाटक बहु उत्तमम् आसीत्।
प्रतिसप्ताहम् एतादृशा: कार्यक्रमाः पुनः पुनः

प्रसारिता: भवन्तु इति प्रार्थयामि
धन्यवादाः

इति संस्कृतानुरागी
रामनारायण:

3. गुरुं प्रति पठनार्थम् अनुमतये

बी-3/76
पुष्पविहारम्
नवदिल्लीत:

श्रद्धेया गुरुचरणाः
सादरं प्रणामाञ्जलयः।
ईश्वरानुग्रहेण मम स्वास्थ्यं सम्यक् अस्ति।
भवताम् आशीर्वादेन परीक्षायामपि सम्यक्
लिखितवान् अस्मि । इति विरामं प्राप्य भवतां
पाश्र्वे आगमिष्यामि। विरामसमये
(सिद्धान्तकौमुदीम्) पाठयन्तु इति प्रार्थयामि
भवतां पत्रं प्रतीक्षमाणः

भवतां विनेयः
श्रीशः

4. जन्मदिवसोपलक्ष्ये मित्राय पत्रम्

246 सी बी 4 केशवपुरम्
दिल्लीत:
O7.03.2021

प्रिय मित्र सत्य!,
सस्नेहम् नमः।

जन्मदिवसस्यावसरे तव सौख्याय, दीर्घायुष्याय,
स्वस्थजोवनाय, च ईश्वर प्रार्थये। मम
हार्दिकशुभकामना: वर्धापनानि च स्वीकुरु।

तव अभिन्नहृदयः
प्रदीप कुमारः

5."दीपमालिकायाः अवसरे ज्येष्ठभगिन्यै पत्रम्

बी 525 रोहिणी
दिल्लीतः
10.10.2020

आदरणीये भगिनि राधिके!
सादरं नमः।

प्रकाशस्यायम् उत्सवः युष्माकं सर्वेषां
जीवने सुखं, समृद्धिं, आरोग्यं च पूरयेत्
इति मे कामना:।

भवत्याःअनुजा
श्रुतिः

6. "परीक्षायाम् प्रथमस्थानोपलब्धये भ्रात्रे पत्रम्।

ए-1, कृष्णनगरम्
शाहदरा दिल्लीत:
04.05.2011

प्रिय अनुज अशोक!,
शुभाशिषः।

मैट्रिकपरीक्षायां प्रथमस्थानं प्राप्य सफलतायै
मम पक्षतः तव भ्रातृजायायाः पक्षतः च भूयोभूयः
वर्धापनानि आशीर्वादाः च। अग्रेऽपि भवान्
अहर्निशं सततपरिश्रमेण एवमेव सफलतायाः
सोपानमारोहेत् इति मम कामना विश्वासश्च।

तव भ्राता
विजयः।

<u>अनुप्रयुक्त व्याकरणम्</u>

<u>पाठ-1</u>

।। वर्णों के उच्चारणस्थान ।।

1.अ-कु-ह-विसर्जनीयानां कण्ठः ।

-अकार, कवर्ग (क्, ख्, ग्, घ्, ङ्), हकार और विसर्ग का उच्चारण स्थान " कण्ठ " है ।

2.इ-चु-य-शानां तालु ।

-इकार, चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्), यकार और शकार इनका " तालु " उच्चारण स्थान है ।

3.ऋ-टु-र-षाणां मूर्धा ।

-ऋकार, टवर्ग (ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्), रेफ और षकार इनका " मूर्धा " उच्चारण स्थान है ।

4.लृ-तु-ल-सानां दन्ताः ।

-लृकार, तवर्ग (त् थ् द् ध् न्), लकार और सकार इनका उच्चारण स्थान " दन्त " है ।

5.उ-पु-उपध्मानीयानाम् ओष्ठौ ।

-उकार, पवर्ग (प् फ् ब् भ् म्) और उपध्मानीय इनका उच्चारण स्थान " ओष्ठ " है ।

6.ञ-म-ङ-ण-नानां नासिका च ।

-ञकार-मकार-ङकार-णकार-नकार इनका उच्चारण स्थान " नासिका " है ।

7.ऐदैतौः कण्ठ-तालु ।

-ए और ऐ का उच्चारण स्थान " कण्ठ-तालु " है ।

8.ओदौतौः कण्ठोष्ठम् ।

-ओ और औ का उच्चारण स्थान " कण्ठ-ओष्ठ " है ।

9.व ' कारस्य दन्तोष्ठम् ।

-वकार का उच्चारण स्थान "दन्त-ओष्ठ " है ।

10.जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम् ।

-जिह्वामूलीय का उच्चारण स्थान " जिह्वामूल " है ।

11.अनुस्वारस्य नासिका ।

-अनुस्वार का उच्चारण स्थान " नासिका " है ।

अधोलिखितानां वर्णानां उच्चारणस्थानानि लिखत-

1.'श' वर्णस्य उच्चारण स्थानमस्ति-

(1) मूर्धा

(2) दन्ताः

(3) कण्ठः

(4) तालुः ।

उत्तर-4

2.ल' वर्णस्योच्चारणस्थलमस्ति-

(1) नासिका

(2) तालुः

(3) दन्ताः ।

(4) वत्त्स:

उत्तर-3

3.'त' वर्णस्योच्चारणस्थलमस्ति-

(1) नासिका

(2) तालुः

(3) दन्ताः ।

(4) वत्त्स:

उत्तर-3

4.'च' वर्णस्योच्चारणस्थलमस्ति-

(1) नासिका

(2) तालुः

(3) दन्ताः ।

(4) वत्त्स:

उत्तर-2

5.'क' वर्णस्य उच्चारण स्थानमस्ति-

(1) मूर्धा

(2) दन्ताः

(3) कण्ठः

(4) तालुः ।

उत्तर-3

6.फ' वर्णस्य उच्चारण स्थानमस्ति-

(1) मूर्धा

(2) दन्ताः

(3) कण्ठः

(4) ओष्ठ:।

उत्तर-4

7.ब' वर्णस्य उच्चारण स्थानमस्ति-

(1) मूर्धा

(2) दन्ताः

(3) कण्ठः

(4) ओष्ठ:।

उत्तर-4

8.'भ' वर्णस्य उच्चारण स्थानमस्ति-

(1) मूर्धा

(2) दन्ताः

(3) कण्ठः

(4) ओष्ठ:।

उत्तर-4

9. 'म' वर्णस्य उच्चारण स्थानमस्ति-
(1) मूर्धा
(2) दन्ताः
(3) कण्ठः
(4) ओष्ठः।

उत्तर-4

10. 'द' वर्णस्य उच्चारण स्थानमस्ति-
(1) मूर्धा
(2) दन्ताः
(3) कण्ठः
(4) तालुः ।

उत्तर-2

11.'ध' वर्णस्य उच्चारण स्थानमस्ति-
(1) मूर्धा
(2) दन्ताः
(3) कण्ठः
(4) तालुः ।

उत्तर-2

12. 'न' वर्णस्य उच्चारण स्थानमस्ति-
(1) मूर्धा
(2) दन्ताः
(3) कण्ठः
(4) तालुः ।

उत्तर-2

13.'ड' वर्णस्य उच्चारण स्थानमस्ति-
(1) मूर्धा
(2) दन्ताः
(3) कण्ठः
(4) तालुः ।

उत्तर-1

14. 'ढ' वर्णस्य उच्चारण स्थानमस्ति-
(1) मूर्धा
(2) दन्ताः
(3) कण्ठः
(4) तालुः ।

उत्तर-1

15.'ण' वर्णस्य उच्चारण स्थानमस्ति-
(1) मूर्धा
(2) दन्ताः

(3) कण्ठः

(4) तालुः ।

उत्तर-1

16 'ङ' वर्णस्य उच्चारण स्थानमस्ति-

(1) मूर्धा

(2) नासिका

(3) कण्ठः

(4) तालुः ।

उत्तर-3

17.'ङ' वर्णस्य उच्चारण स्थानमस्ति-

(1) मूर्धा

(2) नासिका

(3) कण्ठः

(4) तालुः ।

उत्तर-2

18. 'ञ' वर्णस्य उच्चारण स्थानमस्ति-

(1) मूर्धा

(2) नासिका

(3) कण्ठः

(4) तालुः ।

उत्तर-4

19.ण' वर्णस्य उच्चारण स्थानमस्ति-

(1) मूर्धा

(2) नासिका

(3) कण्ठः

(4) तालुः ।

उत्तर-2

20. 'व' वर्णस्य उच्चारण स्थानमस्ति-

(1) मूर्धा

(2) दन्त-ओष्ठ

(3) कण्ठः

(4) तालुः ।

उत्तर-2

पाठ-2

संख्यावाची

संख्यावाची शब्द विशेषण के रुप में प्रयुक्त होते हैं। गणनावाचक संख्या शब्दो मे एक से चतर् तक के शब्दों के रूप तीनों लिंगों में विशेष्य के अनुसार चलते हैं यथा-एकःबालः । एका बाला एकम् पत्रम । पञ्चन् से दश तक के शब्द रुप तीनों लिंगों में एक जैसे ही चलते हैं।

हम इसे एक तालिका के रूप में समझ सकते हैं:-

संख्या	पुं० तथा नपुं०	स्त्रीलिंग	
1	एकम्	प्रथम	प्रथमा
2	द्वि	द्वितीय	द्वितीया
3	त्रि	तृतीय	तृतीया
4	चतुर्	चतुर्थ, तुर्य, तुरीय	चतुर्थी, तुरीया
5	पञ्चन्	पञ्चम	पञ्चमी
6	षष	षष्ठ	षष्ठी
7	सप्तन्	सप्तम	सप्तमी
8	अष्टन्	अष्टम	अष्टमी
9	नवन्	नवम	नवमी
10	दशन	दशम	दशम

अधोलखितेषु संख्यावाची शब्देषु संस्कृत भाषायाम् लिखित :-

(i). 5 इन्द्रियाणी

(ii). 9 कूपा

(iii). 7 दिवसा

(iv.) 2 रामौ

(v). 1 रमा

(vi). 4 तितलिका :

(vii).3 कमलानि

(viii).2 पत्र

(ix).3 अम्बा

(x). 5 पचिका

(xi).2 हस्तौ

(xii).3 मत्स्या

(xiii).4 विद्वांश

(xiv).1 बालः

(xv).2 हाथी

पाठ-3
संधि

सन्धि – दो वर्णों या ध्वनियों के संयोग से होने वाले विकार (परिवर्तन) को सन्धि कहते हैं।

जैसे-सुर + इन्द्र = सुरेन्द्र

सन्धियाँ तीन प्रकार की होती हैं

1.स्वर सन्धि

2.व्यंजन सन्धि

3.विसर्ग सन्धि

1. स्वर सन्धि

स्वर के साथ स्वर का मेल होने पर जो विकार होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं। स्वर सन्धि के पाँच भेद है-

गुण सन्धि

जब अ अथवा आ के आगे 'इ' अथवा 'ई' आता है तो इनके स्थान पर ए हो जाता है। इसी प्रकार अ या आ के आगे उ या ऊ आता है तो ओ हो जाता है तथा अ या आ के आगे ऋ आने पर अर् हो जाता है। दूसरे शब्दों में, हम इस प्रकार कह सकते हैं कि जब अ, आ के आगे इ, ई या 'उ', 'ऊ' तथा 'ऋ' हो तो क्रमशः ए, ओ और अर् हो जाता है, इसे गुण सन्धि कहते हैं;

जैसे-

अ, आ + ई, ई = ए

अ, आ + उ, ऊ = ओ

अ, आ + ऋ = अर्

सन्धि – उदाहरण

अ + इ = ए – उप + इन्द्र = उपेन्द्र

अ + ई = ए – गण + ईश = गणेश

आ + इ = ए – महा + इन्द्र = महेन्द्र

आ + ई = ए – रमा + ईश = रमेश

अ + उ = ओ – चन्द्र + उदय = चन्द्रोदय

अ + ऊ = ओ – समुद्र + ऊर्मि = समुद्रोर्मि

आ + उ = ओ – महा + उत्सव = महोत्सव

आ + ऊ = ओ – गंगा + उर्मि = गंगोर्मि

अ + ऋ = अर् – देव + ऋषि = देवर्षि

आ + ऋ = अर – महा + ऋषि = महर्षि

वृद्धि सन्धि

जब अ या आ के आगे 'ए' या 'ऐ' आता है तो दोनों का ऐ हो जाता है। इसी प्रकार अ या आ के आगे 'ओ' या 'औ' आता है तो दोनों का औ हो जाता है, इसे वृद्धि सन्धि कहते हैं;

जैसे-

सन्धि – उदाहरण

अ + ए = ऐ – पुत्र + एषणा = पुत्रैषणा
अ + ऐ = ऐ – मत + ऐक्य = मतैक्य
आ + ए = ऐ – सदा + एव = सदैव
आ + ऐ = ऐ – महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य
अ + ओ = औ – जल + ओकस = जलौकस
अ + औ = औ – परम + औषध = परमौषध
आ + ओ = औ – महा + ओषधि = महौषधि
आ + औ = औ – महा + औदार्य = महौदार्य

यण सन्धि
जब इ, ई, उ, ऊ, ऋ के आगे कोई भिन्न स्वर आता है तो ये क्रमशः य, व, र, ल् में परिवर्तित हो जाते हैं, इस परिवर्तन को यण सन्धि कहते हैं;
जैसे-
इ, ई + भिन्न स्वर = व
उ, ऊ + भिन्न स्वर = व
ऋ + भिन्न स्वर = र
सन्धि – उदाहरण
इ + अ = य् – अति + अल्प = अत्यल्प
ई + अ = य् – देवी + अर्पण = देव्यर्पण
उ + अ = व् – सु + आगत = स्वागत

अयादि सन्धि
जब ए, ऐ, ओ और औ के बाद कोई भिन्न स्वर आता है तो 'ए' का अय, 'ऐ' का आय् , 'ओ' का अव् और 'औ' का आव् हो जाता है;
जैसे-
ए + भिन्न स्वर = अय्
ऐ + भिन्न स्वर = आय्
ओ + भिन्न स्वर = अव्

ह्रस्व या दीर्घ
ह्रस्व या दीर्घ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ और ऋ के बाद ह्रस्व या दीर्घ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ और ऋ स्वर आ जाएँ तो दोनों मिलकर दीर्घ आ, ई, ऊ और ऋ हो जाते हैं। इस मेल से बनने वाली संधि को दीर्घ स्वर संधि कहते हैं।

2. व्यंजन सन्धि
व्यंजन के साथ व्यंजन या स्वर का मेल होने से जो विकार होता है, उसे व्यंजन सन्धि कहते हैं।
जैसे-
दिक् + अम्बर = दिगम्बर
वाक् + ईश = वागीश
अच् + अन्त = अजन्त
षट् + आनन = षडानन

सत् + आचार = सदाचार
सुप् + सन्त = सुबन्त
उत् + घाटन = उद्घाटन
तत् + रूप = तद्रूप

1) श्चुत्व संधि (स्तोः श्चुना श्चुः)

यदि दन्त्य स् या त् वर्ग से पहले या बाद में तालव्य 'श' या च वर्ग का कोई एक वर्ण आये तो दन्त्य 'स' का तालव्य 'श' में और त् वर्ग को च् वर्ग में बदल देते हैं।

त/द् + च = च्च
उद् + चारण = उच्चारण
सत् + चेष्टा = सच्चेष्टा
सत् + चरित्र = सच्चरित्र
शरद् + चन्द्र = शरच्चन्द्र

(1) जश्त्वव संधि (घोष व्यंजन संधि)

यदि प्रथम पद के अंत में किसी वर्ग का प्रथम वर्ण (क् , च् , ट् ,त् , प् ,) में से कोई एक वर्ण आये तथा दूसरे पद् के प्रारंभ में किसी वर्ग का 3, 4, 5 वर्ण य,र,ल,व, अर्थात (घोष या संघोष) में से कोई एक वर्ण आये तो प्रथम पद के अंत वाला प्रथम वर्ण अपने ही वर्ग के तीसरे वर्ण में बदल जाता है यदि आगे कोई स्वर वर्ण आये तो उस स्वर की मात्रा तीसरे वर्ण में (ग् , ज् ,ड् ,द् ,ब्) जुड़ जाती है।

क् + ग् , ज् ,ड् ,द् ,ब् /य,र,ल,व/सभी स्वर = क् के स्थान पर "ग"
वाक् + ईश = वागीश
दिक् + गज = दिग्गज
वाक् + जाल = वाग्जाल
ऋक् + वेद = ऋग्वेद

2) चर्त्व संधि (अघोष)

यदि प्रथम पद के अंत में किसी भी वर्ग का तीसरा वर्ण आये तथा दूसरे पद के प्रारंभ में 1,2 वर्ण अथवा श, ष, स (घोष वर्ण) में से कोई एक वर्ण आये तो प्रथम पद के अंत वाला तीसरा वर्ण अपने ही वर्ग के प्रथम वर्ण में बदल जाता है

द् + क, त, थ, प, स = द् के स्थान पर "त्"
तत् + सम् = सम् = तत्सम
उद् + कर्ष = उत्कर्ष
तद् + पुरुष = तत्पुरुष
उद् + कीर्ण = उत्कीर्ण
तद् + पर = तत्पर

3. विसर्ग सन्धि

विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के संयोग से जो विकार होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।
जैसे-
अतः, पुनः, प्रायः, शनैः शनैः आदि।
निः + रव = नीरव
निः + रोग = नीरोग

निः + रस = नीरस

निः + तार = निस्तार

दुः + चरित्र = दुश्चरित्र

निः + छल = निश्छल

धनुः + टंकार = धनुष्टंकार

निः + ठुर = निष्ठुर

1.) उत्व संधि

यदि प्रथम पद के अंत में "अ" स्वर के बाद विसर्ग आये तथा दूसरे पद के प्रारंभ में किसी भी वर्ग का 3, 4, 5, य, र, ल, व, है में से कोई एक वर्ण आये तो विसर्ग "उ" में बदल जाता है और "अ + उ को ओ" हो जाता है। यदि आगे ह्रस्व "अ" आ जाये तो उसका अवग्रह रूप (ऽ) हो जाता है या फिर "अ" होने पर "अ" का लोप हो जाता है।

<u>अ स्वर + विसर्ग + अ/घोष वर्ण/य/र/ल/व/है = विसर्ग का ओ, अ का लोप</u>

उदाहरण

मनः + अभिलाषा = मनोभिलाषा

सरः + वर = सरोवर

मनः + हर = मनोहर

तपः + वन = तपोवन

2.) सत्व विसर्ग संधि

यदि प्रथम पद के अंत में "अ" स्वर को छोड़कर अन्य किसी स्वर के बाद विसर्ग आये तथा दूसरे पद के प्रारंभ में किसी भी वर्ग का तीसरा, चौथा, पांचवां वर्ण या य, र, ल, व, है में से कोई एक वर्ण आये तो विसर्ग "र्" में बदल जाता है और अगले वर्ण के ऊपर चढ़ जाता है। यदि आगे कोई स्वर वर्ण आ जाये तो उस स्वर की मात्रा "र" में जुड़ जाती है।

<u>'अ' के अलावा अन्य स्वर + विसर्ग + स्वर/घोष वर्ण/य/व/ह = र्</u>

बहिः + अंग = बहिरंग

आशीः + वाद = आशीर्वाद

आयुः + वेद = आयुर्वेद

यजुः + वेद = यजुर्वेद

<u>संधि-विच्छेद</u>

दो वर्णों के मेल से होने वाले विकार को **संधि** कहते हैं। इस मिलावट को समझकर वर्णों को अलग करते हुए पदों को अलग-अलग कर देना **संधि-विच्छेद** है

केचनान्ये = केचन + अन्ये

शिवगणास्तादृशाः = शिवगणाः + तादृशाः

इतस्तावत् = इतः + तावत्

कस्त्वम् = कः + त्वम्

कस्याप्यन्यस्य = कस्य + अपि + अन्यस्य

तदादेशं = तत् + आदेशं

एवाभिज्ञाय = एवं + अभिज्ञाय

यथोचितं = यथा + उचितं

पुनरायास्यामि = पुनः + आयास्यामि

स्तम्भोपरि = स्तम्भ + उपरि
तच्छुत्वा = तत् + श्रुत्वा
भविष्यत्येव = भविष्यति + एवं
जीवत्यनाथोऽपि = जीवति + अनाथ: + अपि
मत्स्यजीविभिर्जालेन = मत्स्यजीविभिः + जालेन
अतोऽहम् = अंत: + अहम्
द्वावेतौ = द्वौ + एतौ
बहुमत्स्योऽयम् = बहुमत्स्यः + अयम्
अस्माभिरन्वेषितः = अस्माभिः + अन्वेषित:
चापि = च + अपि
अत्रागत्य = अत्र + आगत्य
आहूयेदम् = आहूय + इदम्
उक्तञ्च = उक्तम् + च
अशक्तैर्बलिनः = अशक्तैः + बलिनः
क्षणमप्यत्र = क्षणम् + अपि + अत्र
तदाकर्ण्य = तत् + आकर्ण्य
ममाप्यभीष्टमेतत् = मम + अपि + अभीष्टम् + एतत्
सिंहात् + एकम् सिंहादेकम्
सर्व + इन्द्रियाणि = सर्वेन्द्रियाणि
कालदेश + उपपन्नानि = कालदेशोपपत्रानि
बहु + आशी: = बह्वाशी:
शूरः + च = शूरश्च
शीत + उष्णम् = शीतोष्णम्
ससंतोषः + तथा = ससंतोषस्तथा
प्रात: + उत्थानम् = प्रातरुत्थानम्
रक्षेत् + चतु: = रक्षेच्चतुः
अणुभ्यः + च = अणुभ्यश्च
महद्भ्यः + च = महद्भ्यश्च
भूतैः आक्रम्यमाणः + अपि = भूतैराक्रम्यमाणोऽपि
विद्वान् + न = विद्वान्न
चलेत् + मार्गात् = चलेन्मार्गात्
निजवपुषा + एवं = निजवपुषैव
फलानि + अपि = फलान्यपि
सत्पुरुषा: + इव = सत्पुरुषा इव
कोऽपि = क: + अपि
संन्यासी = सम् + न्यासी
संन्यासिनोऽपि = संन्यासिन: + अपि
निजपरिचयमददेवायाति = निजपरिचयम् अददत् + एव + आयाति
अद्यावधि = अद्य + अवधि

अपरिचाययन्तोऽपि = अपरिचाययन्तः + अपि
ब्रह्मणोऽत्याज्ञाम् = ब्रह्मणः + अपि + आज्ञां
तपसंश्चान्तरायाणां = तपसः + च + अन्तरायाणां
तस्यैव = तस्य + एव
दौवारिकोऽसि = दौवारिकः + असि
कदापि = कदा + अपि
प्राप्स्यसीति = प्राप्स्यसि + इति
स्यादवम् = स्यात् + एवम्
तदधुनैव = तत् + अधुना + एव
गुञ्जामात्रेणापि = गुञ्जामात्रेण + अपि

महत्त्वपूर्ण संधि उदाहरण

सन्धि कृत्वा लिखत -

1.निर् + रोगः	नीरोगः (रेफलोप एवं दीर्घ)
2.धर्मः रक्षति	धर्मो रक्षति (विसर्ग को उ)
3.वधू + उत्सव	वधूत्सवः (दीर्घसन्धिः)
4.वा + अतिथिपूजनम्	वातिथिपूजनम्
5.यदि + अपि	यद्यपि
6.एका + एव	एकैव
7.कपि + ईश्वरः	कपीश्वरः
8.गुरु + उपदेशः	गुरूपदेश
9.इति + आदिः	इत्यादिः
10.सदा + एव	सदैव
11.सु + आगतम्	स्वागतम्
12.परम + ओषधिः	परमौषधिः
13.तस्य + एव	तस्यैव
14.मातृ + आज्ञा	मात्राज्ञा
15.अद्य + एव	अद्यैव
16.गंगा + ओघः	गंगौघः
17.इति + एतेषाम्	इत्येतेषाम्
18.श्.रेष्ठः + अहम्	श्रष्टोऽहम्

19.प्रति + आगता	प्रत्यागता
20.प्र + उष्य	प्रोष्य
21.प्राण + आदयः	प्राणादयः
22.निः + अगच्छत्	निरगच्छत्
23.अत्र + आगत्य	अत्रागत्य
24.च+ अपि	चापि
25.आहूय + इदम्	आहूयेदम्
26.उक्तम् + च	उक्तञ्च
27.अशक्तैः + बलिनः	अशक्तैर्बलिनः
28.भविष्यति + एव	भविष्यत्येव
29.अतः + अहम्	अतोऽहम्
30.पट् + नवतिः	षण्णवतिः
31.सत् + नाम	सन्नाम
32. तत् + शिवः	तच्छिवः
33.मनः + हरिः	मनोहरः
34.अतः + अस्ति	अतोऽहम्
35.इति + अपि	इत्यपि
36.अद्य + अपि	अद्यापि।
37.भास्कर + आचार्यः	भास्कराचार्यः
38.गणित + आचार्यः	गणिताचार्य
39.च + एव	चैव
40.स + अक्षरः	साक्षरः
41.वृक्ष + अग्रवासी	वृक्षाग्रवासी
42.दमः + च	दमश्च
43.देव + इन्द्रः	देवेन्द्रः
44.महा + ईशः	महेशः
45.पर + उपकारः	परोपकारः
46.महा + इन्द्रः	महेन्द्रः

47.देव + ऋषि	देवर्षि
48.सुर + इन्द्रः	सुरेन्द्रः
48.दृष्ट्वा + एव	दृष्ट्वैव
50.खग + आलयाः	खगालयाः
51.ईशः + तिष्ठति	ईशस्तिष्ठति
52.देव + आगारे	देवागारे
53.तत्र + अस्ति + ईशः	नास्त्यत्रेशः
54.च + अमेध्यम्	चामेध्यम्
55.अति + उष्णम्	अत्युष्णम्
56.कटु + अम्लः	कट्वम्लः
57.शोक + आमयः	शोकामयः
58.बल + आरोग्यम्	बलारोग्यम्

पाठ-4

समास

समास शब्द की व्युत्पत्ति – सम् उपसर्गपूर्वक अस् धातु से घञ् प्रत्यय करने पर 'समास' शब्द निष्पन्न होता है। इसका अर्थ 'संक्षिप्तीकरण' है।

समास की परिभाषा – संक्षेप करना अथवा अनेक पदों का एक पद हो जाना समास कहलाता है। अर्थात् जब अनेक पद मिलकर एक पद हो जाते हैं तो उसे समास कहा जाता है। जैसे–सीतायाः पतिः=सीतापतिः।

यहाँ 'सीतायाः' और 'पतिः' ये दो पद मिलकर एक पद (सीतापतिः) हो गया है, इसलिए यही समास है।

समास होने पर अर्थ में कोई भी परिवर्तन नहीं होता है। जो अर्थ 'सीतायाः पतिः' (सीता का पति) इस विग्रह युक्त वाक्य का है, वही अर्थ 'सीतापतिः' इस समस्त शब्द का है।

समास विग्रह

'विग्रह' शब्द का अर्थ है अलग-अलग करना अर्थात् समस्त पदों को तोड़कर पूर्व क्रमानुसार अलग-अलग रख देना 'विग्रह' कहलाता है।

जैसे-'राजपुरुषः' इस पद को (राज्ञः + पुरुषः) इस रूप में तोड़कर पूर्वक्रमानुसार अलग-अलग रख दिया गया है अतः इसे 'विग्रह' कहेंगे।

समास के भेद-

संस्कृत भाषा में समास के मुख्य रूप से चार भेद होते हैं।

समास में प्रायः दो पद होते हैं – पूर्वपद और उत्तर। पद का अर्थ पदार्थ होता है। जिस पदार्थ की प्रधानता होती है, उसी के अनुरूप ही समास की संज्ञा भी होती है। जैसे कि प्रायः पूर्वपदार्थ प्रधान अव्ययीभाव होता है। प्रायः उत्तरपदार्थ प्रधान तत्पुरुष होता है। तत्पुरुष का भेद कर्मधारय होता है। कर्मधारय का भेद द्विगु होता है। प्रायः अन्य पदार्थ प्रधान बहुव्रीहि होता है। प्रायः उभयपदार्थप्रधान द्वन्द्व होता है। इस प्रकार समास के सामान्य रूप से छः भेद होते हैं।

1.अव्ययीभाव समासः

2.तत्पुरुष समासः

3.कर्मधारयसमासः

4. द्विगुसमासः

5.बहुव्रीहिसमासः

6.द्वन्द्वसमासः

1. अव्ययीभाव समासः

जब विभक्ति आदि अर्थों में वर्तमान अव्यय पद का सुबन्त के साथ नित्य रूप से समास होता है, तब वह अव्ययीभाव समास होता है अथवा इसमें यह जानना चाहिए-

जैसे–

अव्ययपदम् – अव्ययस्यार्थः – विग्रहः – समस्तपदम्

- अधि – सप्तमीविभक्त्यर्थे – हरौ इति – अधिहरि

2. तत्पुरुष समासः

तत्पुरुष समास में प्रायः उत्तर पदार्थ की प्रधानता होती है। जैसे– राज्ञः पुरुषः – राजपुरुषः (राजा का पुरुष)। यहाँ उत्तर पद 'पुरुषः' है, उसी की प्रधानता है। 'राजपुरुषम् आनय' (राजा के पुरुष को लाओ) ऐसा कहने पर पुरुष को ही

लाया। जाता है। राजा को नहीं। तत्पुरुष समास में पूर्व पद में जो विभक्ति होती है, प्रायः उसी के नाम से ही समास का भी नाम होता है। जैसे–

- कृष्णं श्रितः – कृष्णश्रितः (द्वितीयातत्पुरुषः)

3. कर्मधारय समासः

जब तत्पुरुष समास के दोनों पदों में एक ही विभक्ति अर्थात् समान विभक्ति होती है, तब वह समानाधिकरण तत्पुरुष समास कहा जाता है। इसी समास को कर्मधारय नाम से जाना जाता है। इस समास में साधारणतया पूर्वपद विशेषण और उत्तरपद विशेष्य होता है। जैसे– नीलम् कमलम् = नीलकमलम्।।

1. इस उदाहरण में 'नीलम् कमलम्' इन दोनों पदों में समान विभक्ति अर्थात . प्रथमा विभक्ति है।
2. यहाँ 'नीलम्' पद विशेषण है और 'कमलम्' पद विशेष्य है। इसलिए यह कर्मधारय समास है।

4. द्विगुसमासः (संख्यावाची)

1. 'संख्यापूर्वो द्विगु' इस पाणिनीय सूत्र के अनुसार जब कर्मधारय समास का पूर्वपद संख्यावाची तथा उत्तरपद संज्ञावाचक होता है, तब वह 'द्विगु समास' कहलाता
2. यह समास प्रायः समूह अर्थ में होता है।
3. समस्त पद सामान्य रूप से नपुंसकलिङ्ग के एकवचन में अथवा स्त्रीलिङ्ग के एकवचन में होता है।
4. इसके विग्रह में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

जैसे

- सप्तानां दिनानां समाहारः इति = सप्तदिनम्

5. बहुव्रीहिसमासः

जिस समास में जब अन्य पदार्थ की प्रधानता होती है तब वह बहुव्रीहि समास कहा जाता है। अर्थात् इस समास में न तो पूर्व पदार्थ की प्रधानता होती है और न ही उत्तर पदार्थ की, अपितु दोनों पदार्थ मिलकर अन्य पदार्थ का बोध कराते हैं। समस्त पद का प्रयोग अन्य पदार्थ के विशेषण के रूप में होता है। जैसे–

- पीतम् अम्बरं यस्य सः = पीताम्बरः (विष्णु)।
- पीला है वस्त्र जिसका वह = पीताम्बर, अर्थात् विष्णु।

6. द्वन्द्वसमासः(च अर्थे द्वन्द्व)

द्वन्द्व समास में आकांक्षायुक्त दो पदों के मध्य में 'च' (और, अथवा) आता है, है। जैसे– धर्मः च अर्थ : च – धर्मार्थौ। यहाँ पूर्व पद 'धर्मः' और उत्तर पद 'अर्थः' इन दोनों की ही प्रधानता है। द्वन्द्व समास में समस्त पद प्रायः द्विवचन में होता है। यथा–

- हरिश्च हरश्च – हरिहरौ।

1. वर्षान्ते	1. वर्षस्य + अन्ते(तत्पुरुष)
2. मद्विना	2. मया + विना(तत्पुरुष)
3. अपश्यन्तः	3. न + पश्यन्तः (अव्ययीभाव)
4. अशृण्वन्तः	4. न + शृण्वन्तः(अव्ययीभाव)
5. प्रभातममये	5. प्रभातस्य + समये :(षष्ठीतत्पुरुषः)
6. मत्स्यमंक्षयम्	6. मत्स्यानां + संक्षयम् (षष्ठीतत्पुरुषः)
7. प्रत्युत्पन्नमतिः	7. प्रत्युत्यप्रन्ना + मतिः + यस्य + सः (बहू व्रीहिः)
8. बहूमत्प्यः	8. बहवः + मत्स्याः + यस्मिन् + सः (ह्रदः) (बहूव्रीहिः)
9. अनन्तकः	9. न + अन्तः + यस्य+ सः (बहूव्रीहिः)

10. सर्वभूतहितः	10. सर्वेषां + भूतानां + हितम् + एव + हितं + यस्य + यः (बहुव्रीहिः)
11. असाधुः	11. न +साधुः (नञ् तत्पुरुषः)
12. निर्दयः	12. निर्गता + दया + यस्मात् + सः (बहुव्रीहिः)
13. राजलक्ष्मीः	13. राज्ञः + लक्ष्मीः (षष्ठीतत्पुरुषः)
14. दर्पमलिनम्	14. दर्पात् + मलिनम् (पञ्चमीतत्पुरुषः)
15. शान्तिप्रियः	15. शान्तिः + प्रिया + यस्य +सः (बहुव्रीहिः)
16. प्रजारक्षणाय	16. प्रजानां + रक्षणाय (षष्ठीतत्पुरुषः)
17. महासत्त्वः	17. महान् +चासौ + सत्त्वः (कर्मधारयः)
18. समुद्रतीरान्ते	18. समुद्रतीरस्य +vअन्ते (षष्ठीतत्पुरुषः)
19. सुरेन्द्रवाहिनी	19. सुरेन्द्रस्य + वाहिनी (ष.तत्पुरुषः)
20. गुरुडनीडानि	20. गरुडस्य + नीडानि (ष.तत्पुरुषः)
21. खगालयाः	21. खगानाम् + आलयाः (ष.तत्पुरुषः)
22. आत्मरक्षणम्	22. आत्मनः + रक्षणम् (ष.तत्पुरुषः)
23. दैत्यराजेन	23. दैत्यानां + राजा + दैत्यराजः (षष्ठीतत्पुरुषः)
24. भयदीनमुखानि	24. भयात् + दीनानि + मुखानि + येषां + तानि (बहुव्रीहिः)
25. मलिनयशसः	25. मलिनं + यशः + यस्य + तस्य (बहुव्रीहिः)
26. वीतघृणः	26. वीता + घृणा + यस्य + सः (बहुव्रीहिः)
27. सघृणः	27. घृणया + सह + विद्यमानः (बहुव्रीहिः)
28. पिहितद्वारे	28. पिहितं + द्वारं + यस्य + तस्मिन् (बहुव्रीहिः)
29. जनपदरथ्याकर्ता	29. जनपदस्य + रथ्यायाः +कर्ता (षष्ठीतत्पुरुषः)
30. वर्षातपयोः	30. वर्षा + च + आतपश्च + वर्षातपौ + तयोः (द्वन्द्वः)
31. मलिनवपुः	31. मलिनं + वपुः + यस्य +सः (बहुव्रीहिः)
32. अहिंसा	32. न + हिंसा (नञ् समासः)
33. आत्मविनिग्रहः	33. आत्मनः + विनिग्रहः (षष्ठीतत्पुरुषः)
34. भावसंशुद्धिः	34. भावानां + संशुद्धिः (षष्ठीतत्पुरुषः)
35. काषायवासाः	35. काषायं + वासः + यस्य + असौ (बहुव्रीहिः)
36. धृततुम्बीपात्रः	36. धृतं + तुम्बीपात्रं + येन + सः (बहुव्रीहिः)
37. भस्मलिप्तललाटः	37. भस्मना + लिप्तं + ललाटं + यस्य + असौ (बहुव्रीहिः)
38. रुद्राक्षमालाभूषितः	38. रुद्राक्षमालया + भूषितः (तत्पुरुष)
39. भव्यमूर्तिः	39. भव्या + मूर्तिः+ यस्य + सः (बहुव्रीहिः)
40. तुरीयाश्रमसेवी	40. तुरीयम् + आश्रमं + सेवितुं + शीलं + यस्य + सः (बहुव्रीहिः)
41. अपरिचाययन्तः	41. न + परिचाययन्तः (नञ् तत्पुरुषः)
42. अगणयन्	42. न + गणयन् (नञ् तत्पुरुषः)
43. पारदभस्म	43. पारदस्य + भस्म+ इति (षष्ठी तत्पुरुषः)
44. कपटसंन्यासिन्	44. कपटश्चासौ + संन्यासी + च + तत् + संबुद्धौ+ कपटसंन्यासिन्

45. स्वामिवञ्चनम्	45. स्वामिनः + वञ्चनं (षष्ठीतत्पुरुषः)
46. उत्कोचलोभेन	46. उत्कोचस्य + लोभेन (षष्ठीतत्पुरुषः)
47. विश्वासघातम्	47. विश्वासस्य + घातम् (षष्ठीतत्पुरुषः)
48. शिवगणाः	48. शिवस्य + गणाः (षष्ठीतत्पुरुषः)
49. तदादेशम्	49. तस्य + आदेशम् (षष्ठीतत्पुरुषः)
50. दुर्गाध्यक्षसमीपे	50. दुर्गस्य + अध्यक्षः + तस्य + समीपे (षष्ठीतत्पुरुषः)
51. नित्यसत्त्वस्थः	51. नित्यं + सत्त्वे + स्थितः (तत्पुरुषः)
52. मिताशी	52. मितम् + अश्नाति + तच्छीलः (तत्पुरुषः)
53. सत्याग्रहाश्रमः	53. सत्याग्रहाय + आश्रमः (च. ततपुरुषः)
54. शिशुप्रेम	54. शिशूनां + प्रेमी (षष्ठी तत्पुरुषः)
55. बोधिद्रुमतले	55.बोधेः + द्रुमः + बोधिद्रुमः + बोधिद्रुमस्य + तले (षष्ठी तत्पुरुषः)
56. महात्मा	56. महान् + आत्मा + यस्य + सः (बहुव्रीहिः)
57. पुण्यनिवासे	57. पुण्यः + निवासः + तस्मिन् (कर्मधारय)
58.तद्धितैकपरायणः	58. तेषाम् हितम् तद्धितम् (षष्ठी तत्पुरुषः)
59. मनोवाक्कायकर्मभिः	59. मनः + च + वाक् +च + कायः +च + कर्म + च + तैः (द्वन्द्वः)
60.सानुयात्रिकः	60. अनुयात्रिकैः + सह + विद्यमानः (बहुव्रीहिः)
61.अमोघम्	61.न + मोघम् (नञ्, तत्पुरुषः)
62.सत्यवर्जितात्	62. सत्यात् + वर्जितः + तस्मात् (पञ्चमीतत्पुरुषः)
63.पदानुगाः	63.पदानि + अनुगच्छन्ति + ये + ते (उपपद तत्पुरुषः)
64.सर्वबलेभ्यः	64.सर्वम् + बलम् + तेभ्यः (कर्मधारयः)
65. विनीतवसतेः	65,विनीता + वसतिः + तस्याः (कर्मधारयः)
66. सर्वभूतानि	66.सर्वाणि + भूतानि (कर्मधारयः)
67.अबलः	67.नास्ति + बल + यस्य + सः (बहुव्रीहिः)
68. रथारूढः	68.रथम् + आरूढ़ः (द्वितीयातत्पुरुष)
69. सविस्मयम्	69.विस्मयेन + सहितम् (तृतीयात्पुरुष)
70.महाबाहो!	70.महान्तौ + बाहू + यस्य + तत्सम्बुद्धौ (बहुब्रीहि)
71.राजपुत्र!	71.राज्ञः + पुत्रः + तत्सम्बुद्धौ (षष्ठीतत्पुरुष)
72. सूर्यकुलकुमारस्य	72.सूर्यस्य + कुलम् + तस्य + कुमारः + तस्य (षष्ठीतत्पुरुष)
73. प्रियदर्शनः	73.प्रियं + दर्शनं + यस्य + सः (बहुव्रीहिसमासः)
74.मृदुशरीरे	74.मृदु + शरीरं + तस्मिन् (कर्मधारयसमासः)
75.वीरपुरुषः	75.वीरः + चासौ + पुरुषः (कर्मधारयसमासः)

पाठ-5

उपसर्ग

वे शब्दांश जो किसी मूल शब्द के पहले लगकर नये शब्द का निर्माण करते है, उन्हें उपसर्ग कहते है। स्वतंत्र रुप से इनका कोई अर्थ नहीं होता लेकिन किसी अन्य शब्द के साथ जुडकर ये अर्थ में विशेष परिवर्तन ला देते है।
संस्कृत में 22 उपसर्ग होते है।

आ – तक, ओर, समेत, उल्टा, सीमा, कमी, विपरीत	आकर्षण, आकर, आभार, आशंका, आवेश, आचरण
उत्, उद – ऊँचा, श्रेष्ठ	उत्कर्ष उत्पल, उल्लेख, उत्साह, उत्थान, उत्पात
उप – निकट, सदृश, सहायक, हीनता	उपकार, उपभेद, उपनिवेश, उपनाम, उपरांत
दुर, दुस् – बुरा, कठिन, दुष्ट, हीन	दुबल, दुलभ, दुष्कम, दुखद, दुष्प्राप्य, दु:सह, दुरवस्था, दुर्दमनीय, दुस्साहस
नि-भीतर, नीचे, बाहर, अतिरिक्त	निदेशक, निदान, निपात, निगम, निरूपा, निखर
निर्, निस्–बाहर, निषेध, रहित	निर्बल, निराकरण, निरपराध, निर्भर
परा-पीछें, उलटा, अनादर, नाश	पराजय, पराभव, पराधीन, पराजित
प्र-अधिक, आगे, ऊपर, यश	प्रकाश, प्रख्यात, प्रचार, प्रयोग, प्रसार, प्रकट, प्रवाह, प्रबल, प्रगति, प्रताप, प्रपंच, प्रलाप, प्रभुता
प्रति-विरुद्ध, सामने, बराबरी, प्रत्येक	प्रतिकूल, प्रतिकार, प्रतिदान, प्रत्यर्पण, प्रतिद्वंद्वी, प्रतिशोध, प्रतिरोधक
वि – भिन्न, आभाव, विशेष, हीनता, असामनता	विभाग, विवाह, विमुख, विनय, विभिन्न, विहार, विश्राम
सम् – अच्छा, साथ, संयोग	संगम, संग्रह, संजय, संस्कार, संदेह, संसर्ग, संग्राम, संचालन
सु – अच्छा, अधिक, सुन्दर, सुखी	सुगठित, सुहाग, सुकर्म, सुकृत, सुखद, सुभाषित, सुकवि, सुरभि, सुलभ
अध, अधस् – नीचे आधा	अधजल, अधोगति, अध्स्थल
अ, अन् – अभाव, निषेध	अज्ञान, अलग, अनजान, अनमोल, अनेक, अनिष्ट, अथाह, अनाचार, अलौकिक
अति – अधिक, उस पार, ऊपर	अतिकाल, अतिरिक्त, अतिशय, अत्यंत

अधि – ऊपर, स्थान में श्रेष्ठ, सामीप्य	अधिकरण , अधिकार, अधिपाठक, अधिग्रहण, अधिवक्ता, आधिक्य
अनु-पीछे, पश्चात्, क्रम, समानता	अनुकरण, अनुग्रह, अनुचर, अनुज, अनुपात,अपकर्ष,
अप – बुरा, हीन, विरुद्ध, अभाव	अपकीर्ति, अपभ्रश, अपमान, अपव्यय, अपवाद
अभि – ओर, पास, सामने, इच्छा प्रकट करना	अभिसार, अभ्यागत, अभ्यास, अभ्युदय, अभिषेक, अभिनय, अभिभावक, अभिया

अभ्यास प्रश्नाः

अधोलिखितेषु पदेषु उपसर्गान् धातुन् च पृथक् कृत्वा लिखत -

1 उतिष्ठतु -

उत्तर - उत् + स्था धातु

2 निरगच्छन्

उत्तर निर् + गम् धातु

3 संवदन्ति

उत्तर सम् + वद् धातु

4 सुगमः

उत्तर सु + गम् धातु

5 प्रसीदामि

उत्तर प्र + सद् धातु

6 विजयते

उत्तर वि + जय धातु

7 उपविशामः

उत्तर उप + विश् धातु

8 विकारः

उत्तर वि + कृ धातु

9 अवागच्छत्

उत्तर अव् + गम् धातु

10 अपाकुर्वन्

उत्तर अप + कृ धातु

11 अन्वकरोत्

उत्तर अनु + कृ धातु

12 प्रत्यवदत्

उत्तर प्रति + वद् धातु

13 पराभवति

उत्तर - परा + भू धातु

14 उपहरति

उत्तर - उप + हृ धातु
I5 प्रवहति
उत्तर प्र + वह् धात
16 प्रतिजानाति
उत्तर प्रति + ज्ञा धातु
17 अभिनयति
उत्तर अभि + नी धातु
18 प्रत्यावर्तत
उत्तर प्रति + वतृ धातु
19 संहार
उत्तर सम् + हृ धातु

पाठ-6

प्रत्यय

वे शब्दांश जो किसी धातु के बाद जुड़कर विशेषता प्रदान करते हैं , प्रत्यय कहलाते हैं |

1. क्त्वा प्रत्यय

1. क्त्वा प्रत्यय का प्रयोग करते समय क्त्वा का त्वा शेष रहता है ।

2. प्रत्यय का प्रयोग करते समय धातु के अंतिम वर्ण में "इ" का प्रयोग होता है । यदि अंतिम वर्ण में कोई स्वर की मात्रा न हो तो ।

3. यदि धातु का अंतिम वर्ण " म्/न् " हो तो इसका लोप हो जाता है और शेष वर्ण मे "इ" का प्रयोग नहीं होता है।

4. यदि धातु का अन्तिम वर्ण *म्/नु" समान वर्ग से हो तो म्/न् का लोप नहीं होता है , और प्रत्यय प्रयोग के समय "इ" का प्रयोग करना होता
है

- धातु प्रत्यय शब्द
- धाव क्त्वा धावित्वा
- चल् क्त्वा चलित्वा
- हस् क्त्वा हसित्वा
- खाद् क्त्वा खादित्वा
- नम् क्त्वा नत्वा
- गम् क्त्वा गत्वा
- भ्रम् क्त्वा भ्रमित्वा
- चि क्त्वा चित्वा
- दृश् क्त्वा दृष्ट्वा
- कृष् क्त्वा कृष्ट्वा

2.क्तवतु

1. क्तवतु प्रत्यय का प्रयोग भूतकालिक कर्तृ वाच्य वाक्य मे होता है |

2. क्तवतु प्रत्यय का पुल्लिङ्ग मे "तवान्", स्त्रीलिंग में "तवती" तथा नपुंसकलिंग मे "तवत् " शेष रहता है । 3. प्रत्यय का प्रयोग करते समय धातु से पूर्व 'इ" का प्रयोग होता है 4. यदि धातु का अन्तिम अक्षर म् /न् हो तो इसका लोप हो जाता है और वहां "इ" का प्रयोग नहीं होता है ।

5. कर्ता (प्रथमा विभक्ति) के लिङ्ग व वचन के अनुसार क्रिया का लिग - वचन होता है ।

6. क्तवतु प्रत्यय मे पुल्लिङ्ग के रूप के "भवत्" ; स्त्रीलिंग मे "नदी" के समान तथा नपुंसकलिंग मे "जगत् " के समान चलते

उदाहरण

- धातु क्तवतु शब्द
- चल् क्तवतु चलितवान्
- धाव् क्तवतु धावितवान्
- हस् क्तवतु हसितवान्
- भ्रम् क्तवतु भ्रमितवान्
- नम् क्तवतु नतवान्

- रक्ष् क्तवतु रक्षितवान्
- दृश् क्तवतु दृष्टवान्
- गम् क्तवतु गतवान्
- स्मृ. क्तवतु स्मृतवान्
- पत् क्तवतु पतितवान्
- कृ क्तवतु कृतवान्

3.ठक्

1. 'ठक्' (इक) प्रत्ययान्त शब्द विशेषण होते हैं |

उदाहरण

- इतिहास ठक् ऐतिहासिकः
- पक्ष। ठक् पाक्षिकः
- वेद ठक् वैदिकः
- पुराण ठक् पौराणिकः
- संसार ठक् सांसारिकः
- सर्वभूमि ठक् सार्वभौमिकः

4.ल्यप्

1. ल्यप् प्रत्यय में धातु से पूर्व उपसर्ग का प्रयोग होना आवश्यक है ।
2. ल्यप् प्रत्यय का प्रयोग करते समय ल्यप् का " य " शेष रहता है ।

उदाहरण

- उपसर्ग धातु प्रत्यय शब्द
- प्र हस् ल्यप् प्रहस्य
- वि हस् ल्यप् विहस्य
- आ नी ल्यप् आनीय
- सम् आप ल्यप् समाप्य
- परि त्यज् ल्यप् परित्यज्य
- आ दा ल्यप् आदाय

5.क्त

1. क्त प्रत्यय का प्रयोग भूतकालिक कर्मवाच्य वाक्य मे होता है ।
2. क्त प्रत्यय का पुल्लिङ्ग मे "तः", स्त्रीलिंग में "ता" तथा
नपुंसकलिंग मे "तम् " शेष रहता है |
3. प्रत्यय का प्रयोग करते समय धातु से पूर्व "इ" () का प्रयोग होता है
4. यदि धातु का अन्तिम अक्षर म्/न हो तो इसका लोप हो जाता है और वहां "इ" () का प्रयोग नहीं होता है ।
5. क्त प्रत्यय मे कर्म (द्वितीया विभक्ति) प्रथमा विभक्ति मे , कर्ता (प्रथमा विभक्ति) तृतीया विभक्ति में बदल जाता है |
6. कर्ता (प्रथमा विभक्ति) के लिङ्ग व वचन के अनुसार लिङ्ग - वचन होता है। क्रिया का
7. क्त प्रत्यय मे पुल्लिङ्ग के रूप के "राम" ; स्त्रीलिंग में "लता " के समान तथा नपुंसकलिंग मे "फल" के समान चलते हैं

उदाहरण

- धातु क्त शब्द

- चल क्त चलितः
- धाव क्त धावितः
- हस् क्त हसितः
- नम क्त नतः

6.टाप

1. अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिये टाप्/डाप् (आ) जोडते हैं |

अज + टाप् (आ) अजा अश्व + टाप् (आ) अश्वा

वृद्ध + टाप् (आ) वृद्धा सरल + टाप् (आ) सरला

॥ . शब्द के अन्त मे "अक" का उच्चारण हो तो टाप् लगने पर 'क' से पूर्व वर्ण में "इ" का प्रयोग करते हैं

सेवक + टाप् = सेविका

श्रावक + टाप् = श्राविका

7.डाप् (आ)

मन्नन्त शब्द तथा बहुव्रीहि समास युक्त अन्नन्त शब्दो में 'डाप्' प्रत्यय लगता है |

(सीमन्) सीम + डाप् सीमा

पाम + डाप् पामा

बहुराजन् (बहवः सन्ति अत्र राजानः) बहुराज + डाप बहुराजा

8.ङीप् ('ई')

ऋकारान्त तथा नकारान्त शब्दों में ङीप् प्रत्यय का प्रयोग होता है

धातृ (त्र) + ङीप्= धात्री

कर्तृ + ङीप् = कर्त्री

अभिनेतृ + ङीप् = अभिनेत्री

दुहितृ, स्वसृ, तिसृ, आदि में मे ङीप् प्रत्यय नहीं लगेगा | पितृ में भी नहीं लगेगा

॥ . कामिन् + ङीप् = कामिनी

प्रियवादिन् + ङीप् = प्रियवादिनी

शतृ प्रत्यय से बने शब्द मे "ङीप" का प्रयोग होने पर अन्तिम वर्ण से पूर्व "न्" का प्रयोग होता होता

भवत् ङीप् भवन्ती चोरयत् + ङीप् चोरयन्ती

9.शतृ

1. शतृ प्रत्यय का प्रयोग वर्तमान काल में होता है ।
2. शत् प्रत्यय का पुल्लिङ्ग मे 'अन्", स्त्रीलिंग में *अन्ती तथा नपुंसकलिंग मे "अत्" शेष रहता है ।
3. कर्ता के लिङ्ग व वचन के अनुसार क्रिया (शत्) का लिङ्ग वचन होता है |
4. शतृ प्रत्यय मे पुल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिंग के रूप "भवत्" के समान तथा नपुंसकलिंग मे "जगत्" के समान चलते हैं |

10.'शानच्'

1. आत्मनेपद धातुओं में 'शानच्' प्रत्यय होता है ।
2. शानच् प्रत्यय से युक्त विशेषण के रूप में होता है |
3. पुल्लिंग में 'आन' स्त्री० में 'आना' नपुं० में 'आनम्' जुड़ता
4. प्रत्यय से पूर्व धातु में (मुक्) का 'म्' लगाया जाता है ।
5. शानच् प्रत्ययान्त शब्द के लिंग, वचन, विभक्ति विशेष्य के अनुसार चलेंगे |

6.पुल्लिंग में 'रामवत्' स्त्री० में 'लतावत् नपुं० में 'फलवत्' चलेंगे

11.तुमुन्

1. तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग करते समय तुमुन् का " तुम् " शेष रहता है |

2. प्रत्यय का प्रयोग करते समय धातु के अंतिम वर्ण में "इ" का प्रयोग होता है। यदि अंतिम वर्ण में कोई स्वर की मात्रा न हो तो |

3. यदि धातु का अंतिम वर्ण " म्/न् " हो तो यह अनुस्वार/ न में परिवर्तन हो जाता है और शेष वर्ण मे "इ" का प्रयोग नहीं होत

4. यदि धातु का अन्तिम वर्ण "म्/न्" समान वर्ग से हो तो म्/ लोप नहीं होता है , और प्रत्यय प्रयोग के समय "इ का प्रयोग करना होता है ।

दूर + तरप्	दूरतर:
प्र + नम् + शतृ बहुवचन	प्रणमन्तः
लघु+तमप्	लघुतमः
शिक्षा + शानच्	शिक्षमाणः
लघु+तरप्	लघुतर
दूर + तमप्	दूरतम:
पच् + शानच्	पचमान:
गुरु+तरप्	गुरुतरः
वृद्ध + तरप्	वृद्धतरः
वृद्ध+तमप्	वृद्धतमः
बहु + तरः	बहुतरः
बहु + तमप्	बहुतमः
कृ + क्तवतु	कृतवान्
गम् + क्तवतु	गतवान्
लिख् + क्तवतु	लिखितवान्
पा + क्तवतु	पीतवान्
पठ् + क्तवतु	पठितवान्
धाव् + क्तवतु	धावितवान्
पच् + शत्	पचत्
पठ + शत्	पठत्
गम् + शतृ	गच्छत्
खाद् + शत्	खादत् (न्) (खाता हुआ)
उत् + घुष् + शतृ	उद्घोषयन् (घोषणा करता हुआ)

जन् + क्त	जात:
शिक्ष् + शानच्	शिक्षमाण:
वर्ण + क्त	वर्णित:
आ + धृ + ल्यप्	आधृत्य
निर् + मा + क्तवतु	निर्मितवान्
गम् + शतृ, तृतीया बहुवचन .(पं.)	गच्छद्भिः
अनु + इष् + णिच् + क्त प्र. एकवचन	अन्वेषित:
सम् + जन् + क्त प्र. एकवचन। (स्त्री.)	सञ्जाता
आ + गम् = ल्यप्, अव्यय	आगत्य
आ + ह्वे + ल्यप्, अव्यय	आहूय
अभि + धा + क्त प्र. एकवचन (नपुं.)	अभिहितम्
अव+ स्था तुमुन्, अव्यय।	अवस्थातुम्
आ+ कर्ण + ल्यप्, अव्यय।	आकर्ण्य
सम् + आ + गम् + ल्यप्, अव्यय।	समागत्य
कृ + तव्यत् कर्मवाच्य प्र. एकवचन (नपुं.)	कर्तव्यम्
श्रि + तव्यत् कर्मवाच्य प्र. एकवचन (पुं.)	श्रयितव्यः
लिख् + शतृ	लिखन्
वद् + शतृ	वदन्
श्वस्+शतृ	श्वसन्
लिख् + शतृ	लिखन्
दृश् + शतृ	पश्यन्
हस् + शतृ	हसन्
हस + क्त्वा	हसित्वा
चल् + क्त्वा	चलित्वा
खेल + क्त्वा	खेलित्वा
सम् + प्र +वृत् + क्त	सप्रवृत्तः
प्र + वस् + ल्यप्	प्रोष्य
प्रति + आ + गम् + क्त + टाप्	प्रत्यागता

प्रति + आ + वृ+ ल्यप्	प्रत्यावृत्य
महत् + (तल) ता	महत्ता
गुरु + (तल्) ता	गुरुता
लघु + (तल्) ता	लघुता
पटु + (तल्) ता	पटुता
वि + हस + ल्यप	विहस्य
सम् + चल + ल्यप	संचल्य
उप + + कृ + ल्यप	उपकत्य

पाठ-7

अव्ययाः

अव्यय नित्यपद होते हैं। लिङ्ग, विभक्ति तथा वचन के कारण इनमें कोई परिवर्तन नहीं होता अर्थात् तीनों लिङ्गों, सभी विभक्तियों तथा तीनों वचनों में ये अपरिवर्तित या समान रहते हैं।

कुछ निम्नलिखित उपयोगी अव्ययों को जान लीजिए :

अव्ययाः	अर्थ	वाक्य
1.अपि	भी	रामेण सह सीता अपिगच्छति।
2.इति	ऐसा (इतना)	सः अकथयत्-'आगच्छामि' इति।
3 इव	के समान	सुरंगना इव भासते सा।
4. उच्चैः	जोर से	सः उच्चैः वदति।
5.एव	ही	सः एव चोरः अस्ति
6.कदा	कब	त्वम् गृहम् कदा गमिष्यसि?
7. कुतः	कहाँ से	त्वम् कुतः आगच्छसि?
8.खलु	निश्चय ही	सा खलु साम्राज्ञी एव।
9. नूनम्	अवश्य ही	सः नूनम आगमिष्यति।
10.पुरा	पहले प्राचीन काल में	पुरा एका नगरी आसीत् 'द्वारका'।
11. मा	मत	पुष्पाणि मा त्रोटय।
12. इतस्ततः	यहाँ-वहाँ	कुक्कुरः भोजनाय इतस्ततः भ्रमति ।
13. विना	बिना	विद्या विना जीवनम् वृथा भवति
14 सहसा	अचानक/बिना सोचे	सहसा विदधीत न क्रियाम्।
15. श्वः	आनेवाला कल	श्वः अहम् विद्यालयम् न गमिष्यामि
16 ह्यः	बीता हुआ कल	ह्यः अवकाशः आसीत्
17. अधुना	अब	अधुना रमा एकम् गीतम् गास्यति।
18. बहिः	बाहर	गृहात् बहिःआगच्छ।
19- वृथा	व्यर्थ	दिवसे दीपकः वृथा। समयः वृथामा यापय।
20. कदापि	कभी भी	सः कदापि असत्यम् न वदति।
21.शनैः	धीरे	गजः शनैःचलति।
22. किमर्थम्	क्यों/किसलिए	त्वम् किमर्थम् असत्यम् वदसि?
23 यत् तत्	जो वह	यत् सत्यम् तत् एव शोभनम्।
24. अत्र-तत्र	यहाँ-वहाँ	अत्र सर्वे पठन्ति परं तत्र सर्वे क्रीडन्ति।
25-यत्र-तत्र	जहाँ-वहाँ	यत्र धूमः तत्र अग्निः
26. यथा-तथा	जैसे-वैसे	यथा राजा तथा प्रजा।।
27 यदा-कदा	(कभी-कभी) जब-कब	अहम् यदा-कदा एवं तत्र गच्छामि
28- यावत्-तावत्	जब तक तब तक	यावत् सः आगच्छति तावत् त्वम् अत्र तिष्ठ।
29. चित् /चन	अनिश्चयवाचक शब्द	कश्चित् पुरुषः अत्र तिष्ठति । केचन अत्र धावन्ति । कथञ्चन अपि विरोधः न कुर्यात्।
30यदा-तदा	जब तब	यदा त्वम् खादसि तदा अहम् अपि खादामि।।

31. मन्दम्-मन्दम्	धीरे-धीरे	पवनः मन्दम् मन्दम वहति।
32. मुहुर्मुहुः	बार-बार	शिशुः मुहुर्मुहुः हसति।
33. यतः-ततः	जहाँ से-वहाँ से	यतः त्वम् आगच्छः ततः अहम् आगच्छम्।
34. मृषा	झूठ	मृषा मा बद।
35. दिवा	दिन में	दिवा सूर्यः भासते।
36. नक्तम्	रात को	नक्तम् दधि मा खादत।
37 इदानीम्	इस समय	इदानीम् त्वम् इतः गच्छ।
38. आम्	हाँ	आम्, अहम् तत्र अगच्छम्।
39. अन्यत्र	कहीं और	पुस्तकम् अन्यत्र रक्ष।
40- अत्र	यहाँ	अत्र हरिताः वृक्षाः सन्ति।
41. अधस्तात्	नीचे	पर्वतात् अधस्तात् आगच्छ।
42. अन्तः	अंदर	गृहस्य अन्तः उपविश।
43, इह	यहाँ	ईश्वरः इहैव अस्ति।
44.कुत्र	कहाँ	त्वम् कुन गमिष्यसि?
45. परितः	चारों तरफ	दुर्गम् परितः परिखा अस्ति।
46. सर्वत्र	सब जगह	ईश्वरः सर्वत्र विराजते।
47. झटिति	झटपट	झटिति अब आगच्छ।
48. नोचेत्	नहीं तो	यथा समयं विद्यालयं गच्छ, नौचेत् दण्डं प्राप्स्यसि।
49. च	और	रामः सीता च आसने तिष्ठतः।

पाठ-8

उपपद-विभक्तयः

विभक्ति दो प्रकार की होती है 1. कारक विभक्ति 2. उपपद विभक्ति। कारक को सूचित करने वाली विभक्ति को कारक विभक्ति कहते हैं तथा जो पद विशेष अर्थात् प्रति, विना, सह, नमः आदि पदों के योग से जो विभक्ति होती है उसे उपपद विभक्ति कहते हैं। जैसे रामः कलमेन लिखति (राम कलम से लिखता है में 'कलमेन' में करण कारक के अर्थ में तृतीया विभक्ति है। अतः यह कारक विभक्ति है। जब कि 'रामः पुत्रेण सह गच्छति' (राम पुत्र के साथ जाता है) वाक्य में 'पुत्रेण' में तृतीया सह' पद के योग के कारण है अतः यह उपपद विभक्ति है

पदानि द्वितीयाविभक्तिः

(क) (पदों के योग में) उदाहरणानि

उभयतः (दोनों ओर) राजमार्गम् उभयतः वृक्षाः सन्ति

परितः (चारों ओर) ग्राम परितः क्षेत्राणि सन्ति।

धिक् (धिक्कार) अशिक्षितम् धिक।

प्रति (ओर) माता पुत्रं प्रति वदति।

(ख) धातुओं के योग में

याच् (माँगना) निर्धनः धनिकम् धन याचते।

प्रच्छ् (पूछना) छात्रः गुरुम् प्रश्नं पृच्छति।

अधि + शी अधिशेते (सोता है।)

अधि +स्था अधितिष्ठति (बैठता है)

रविः पर्यङ्कम् अधिशेते (रवि पलंग पर सोता है।)

अधि + आस् अध्यास्ते, नृपः सिंहासनम् अधितिष्ठति/अध्यास्ते। (राजा सिंहासन पर बैठता है)

तृतीया विभक्तिः

पदानि उदाहरणानि

(1) सार्धम्/साकम् सह (साथ) त्वम् मित्रेण 'सार्धमासाकम/सह क्रीडसि।

(2) अलम् (बस) अलम् श्रमेण।

(3) तुल्यः/सदृशाः दानेन तुल्यः / सदृशः निधिः नास्ति।

(4)अ ाविकारार्थकपदयोग पादेन खञ्जः। नेत्राभ्याम् अन्धः। नेत्रेण काणः

(खञ्जः, अन्धः, काणः)

चतुर्थीविभक्तिः

(।) नमः (नमस्कार) गुरवे नमः। मातभ्यै नमः।

(2) स्वस्ति (कल्याण)   नृपाय स्वस्ति।

धातुयोगे

(1) रुच् (अच्छा लगना)   दिनेशाय रोचते फलाहारः।

(2) क्रुध् (गुस्सा करना)   त्वम् दुष्टाय क्रुध्यसि।

पञ्चमी विभक्तिः

(1) बहिः (बाहर)   ग्रामात् बहिः उद्यानम् अस्ति।

(2) अनन्तरम् (बाद)   उद्यानात् अनन्तर पाठशाला अस्ति।

(3) 'तुलना' अर्थ   अशोक श्यामात् पटुतरः।

(4) 'भय अर्थ   बालः सिंहात् बिभेति।

षष्ठी: विभक्तिः/सप्तमीविभक्तिः

(1) निर्धारण-अर्थे (अनेक में से एक का निश्चय करना)

(2) युधिष्ठिरः पाण्डवानाम्/पाण्डवेषु ज्येष्ठः आसीत् ।

(3) नदीनाम्/नदीषु वा गंगा श्रेष्ठा।

सप्तमी विभक्तिः

(1) 'स्निह्' धातुयोगे (प्यार करना)   माता पुत्रे स्निह्यति।

(2) 'विश्वस्' धातुयोगे.   अहम् त्वयि विश्वसिमि।
(विश्वास करना)

<u>**महत्वपूर्ण प्रश्न**</u> :-
रिक्तस्थानेषु उचितपदैः पूर्ति कुरुत -
1 चन्द्रकेतुः ..... सह प्रविशति । (सुमन्त्र)
उत्तर -सुमन्त्रेण
2 ...... बहिः उद्यानम् अस्ति। (गृह)
उत्तर - गृहात्
3 त्वम् ... सह क्रीडसि । (मित्र)
उत्तर मित्रेण
4 ... ... उभयतः वृक्षाः सन्ति । (विद्यालय)

उत्तर - विद्यालयम्
5 माता ...... प्रति वदति । (पुत्र)
उत्तर पुत्रम्
6 सिंहात् ..... प्रकीर्तितम् (एक)
उत्तर - एकम्
7 सर्वतः सारमादधात् ...... इव षट्पदः । (पुष्प)
उत्तर - पुष्पेभ्यः
8 सर्वप्रथमं का .... बहिः गता। (शरीर)
उत्तर - शरीरात्
9 छात्राः .... साफल्यम् प्राप्नुवन्ति । (परिश्रम)
उत्तर - परिश्रमेण
10 .... नमः । (गणेश)
उत्तर - गणेशाय
11 त्वं .... बहिः आगच्छ । (देवालय)
उत्तर -देवालयात्
12 ईशः ..... सह तिष्ठति। (तत्) .
उत्तर - तेन
13 अहे। सत्यममिहिति ....(भवत्)
उत्तर -भवता
14 एषा सा दृश्यते .... राजधानी पितुर्मय । (सीता)
उत्तर - सीते
15 सः ..... खल्वाट : अस्ति। (शिरस्)
उत्तर - शिरसा

पाठ-9

शब्द रूप

देव

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	देवः	देवौ	देवाः
द्वितीया	देवम्	देवौ	देवान्
तृतीया	देवेन	देवाभ्याम्	देवैः
चतुर्थी	देवाय	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
पञ्चमी	देवात्	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
षष्ठी	देवस्य	देवयोः	देवानाम्
सप्तमी	देवे	देवयोः	देवेषु
सम्बोधन	हे देव	हे देवौ	हे देवाः

बालक

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालकः	बालकौ	बालकाः
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
पञ्चमी	बालकात्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
षष्ठी	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
सप्तमी	बालके	बालकयोः	बालकेषु
सम्बोधन	हे बालक	हे बालकौ	हे बालकाः

राम

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामाञ्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः

चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पंचमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम!	हे रामौ!	हे रामाः

फल

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पञ्चमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	हे फल!	हे फले!	हे फलानि

लता

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पञ्चमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	हे लते!	हे लते!	हे लताः

रमा

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रमा	रमे	रमाः
द्वितीया	रमाम्	रमे	रमाः
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
चतुर्थी	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पंचमी	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
षष्ठी	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	रमयोः	रमासु
सम्बोधन	हे रमे!	हे रमे!	हे रमाः

बाला

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बाला	बाले	बालाः
द्वितीया	बालाम्	बाले	बालाः
तृतीया	बालया	बालाभ्याम्	बालाभिः
चतुर्थी	बालायै	बालाभ्याम्	बालाभ्यः
पंचमी	बालायाः	बालाभ्याम्	बालाभ्यः
षष्ठी	बालायाः	बालयोः	बालानाम्
सप्तमी	बालायाम्	बालयोः	बालासु
सम्बोधन	हे बाले!	हे बाले!	हे बालाः

हरि

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हरिः	हरी	हरयः
द्वितीया	हरिम्	हरी	हरीन्
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः

चतुर्थी	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पंचमी	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
षष्ठी	हरेः	हर्योः	हरीणां
सप्तमी	हरौ	हर्योः	हरिषु
सम्बोधन	हे हरे!	हे हरी!	हे हरयः

मति

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	हे मते!	हे मती!	हे मतय

नदी

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि!	हे नद्यौ !	हे नद्यः

साधु

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	साधुः	साधू	साधवः
द्वितीया	साधुम्	साधू	साधून्
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
चतुर्थी	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
पञ्चमी	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
षष्ठी	साधोः	साध्वोः	साधूनाम्
सप्तमी	साधौ	साध्वोः	साधुषु
सम्बोधन	हे साधो!	हे साधू !	हे साधवः

धेनु

बिभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनु:	धेनू	धेनव:
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनू:
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभि:
चतुर्थी	धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्य:
पंचमी	धेनो:	धेनुभ्याम्	धेनुभ्य:
षष्ठी	धेनो:	धेन्वो:	धेनूनाम्
सप्तमी	धेनौ	धेन्वो:	धेनुषु
संबोधन	हे धेनो	हे धेनू	हे धेनव

मातृ

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरी	मातृः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः

पञ्चमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातृणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन	हे मातः!	हे मातरौ!	हे मातर

पितृ

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितर:
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितृन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभि:
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्य:
पंचमी	पितु:	पितृभ्याम्	पितृभ्य:
षष्ठी	पितु:	पित्रो:	पितृणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रो:	पितृषु
सम्बोधन	हे पित: !	हे पितरौ !	हे पितर:

अस्मद्

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्	आवाम्	अस्मान्
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभि:
चतुर्थी	मह्यं	आवाभ्याम्	अस्मभ्य:
पंचमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मभ्य:
षष्ठी	मम	आवयो:	अस्माकम्
सप्तमी	मयि	आवयो:	अस्माषु

युष्मद्

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
तृतीया	त्वाय	युवाभ्याम्	युस्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यं	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्
पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव	युवयोः	युष्माकम्
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

किम् (तीनो लिंगो में)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पंचमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कास

तद्(तीनो लिंगो में)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चर्तुथी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पन्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेष

अभ्यास प्रश्नाः-

रेखांकित पदयोःकः मूलशब्दः का च विभक्तिः ?

1 **माता गुरुतरा भूमेः** ।

उत्तर - मातृ मूलशब्द प्रथमा विभक्ति

भूमि मूलशब्द पंचमी / षष्ठी विभक्ति

2 **कः शत्रुदुर्जयः पुंसाम्** ।

उत्तर - किम् मूलशब्द प्रथमा विभक्ति

3. राजलक्ष्मीः **शशिनः प्रभेव अधिकम् अराजत।**

उत्तर - शशि मूलशब्द द्वितिया विभक्ति

4. **वायोः शीघ्रतरं मनः** ।

उत्तर -वात् मूलशब्द षष्ठी विभक्ति

5 **साधु : सर्वभूतहित : भवति** ।

उत्तर - साधु मूलशब्द प्रथमा विभक्ति

6. कथं **यूयं मया विना अजीवत ?**

उत्तर -युष्मद् मूलशब्द प्रथमा विभक्ति

7 **मम अपि अभीष्टमेतत्** ।

उत्तर -अस्मद् मूलशब्द षष्ठी विभक्ति

8. अहो सत्ययभिहितम् **भवता**।

उत्तर -भवत् मूलशब्द तृतीया विभक्ति

9. **मित्रस्य चक्षुषा मां सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्** ।

उत्तर -मित्र मूलशब्द षष्ठी विभक्ति

सर्व मूलशब्द प्रथमा विभक्ति

10 **वायोः अधिकं गतिशीलम् किमस्ति** ।

उत्तर -वात् मूलशब्द षष्ठी विभक्ति

11 **विदुषोः अस्माकम्**

उत्तर - विद्वस् मूलशब्द सप्तमी विभक्ति

अस्मद् मूलशब्द पंचमी विभक्ति

12 वाङ् मयं **तप उच्यते** ।

उत्तर - तप मूलशब्द प्रथमा विभक्ति

13 अशक्तैः **बलिनः शत्रोः कर्त्तव्यम् प्रपलायनम्** ।

उत्तर -बलि मूलशब्द प्रथमा विभक्ति

14 अहो बहुमत्स्योड्यं **ह्रद :** ।

उत्तर - ह्रद मूलशब्द पंचमी / षष्ठी विभक्ति ।

15 जनाः **मनसा ध्यायन्ति कुर्वन्ति।**

उत्तर - मन मूलशब्द तृतीया विभक्ति ।

पाठ -10

धातु

भू (होना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवत:	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथ:	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवाव:	भवाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभव:	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

लृट लकार (भविष्यत काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यत:	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथ:	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्याव :	भविष्याम:

लोट लकार (आज्ञा के अर्थ में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयु:
मध्यम पुरुष	भवे:	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम

कृ धातु

लट् लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यम पुरुष	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उत्तम पुरुष	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लृट् लकार (सामान्य भविष्यत्काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्याम

लङ् लकार (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम पुरुष	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम पुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लोट् लकार (आदेशवाचक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यम पुरुष	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उत्तम पुरुष	करवाणि	करवाव	करवा

विधिलिङ् लकार (अनुज्ञावाचक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
मध्यम पुरुष	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तम पुरुष	कुर्याम्	कुर्या	कुर्याम

अस्

लट् लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुक्चन
प्रथम पुरुष	अस्ति	स्त:	सन्ति
मध्यम पुरुष	असि	स्थ:	स्थ
उत्तम पुरुष	अस्मि	स्व:	स्म:

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरूष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यम पुरूष	आसी:	आस्तम्	आस्त
उत्तम पुरूष	आसम्	आस्व	आस्म:

लृट् लकार (भविष्यत काल)

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरूष	भविष्यति	भविष्यत:	भविष्यन्ति
मध्यम पुरूष	भविष्यसि	भविष्यस्थ:	भविष्यथ
उत्तम पुरूष	भविष्यामि	भविष्याव:	भविष्याम

लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में)

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरूष	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
मध्यम पुरूष	एधि ,स्ताम्	स्तम्	स्त
उत्तम पुरूष	असानि	असाव	असाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में)

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्यात्	स्याताम्	स्यु:
मध्यम पुरूष	स्या:	स्यातम्	स्यात
उत्तम पुरूष	स्याम्	स्याव	स्याम

गम्

लट् लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लृट लकार (सामान्य भविष्यत्काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष।	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

लङ् लकार (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम पुरुष	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम पुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव:	अगच्छाम:

लोट् लकार (आदेशवाचक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम पुरुष	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम पुरुष	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

विधिलिङ् लकार (अनुज्ञावाचक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
मध्यम पुरुष	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तम पुरुष	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

पिब्

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबावः	पिबामः

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यत:	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथ:	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्याव:	पास्याम:

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यम पुरुष	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उत्तम पुरुष	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यम पुरुष	पिब	पिबतम्	पिबत
उत्तम पुरुष	पिबानि	पिबाव	पिबाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
मध्यम पुरुष	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उत्तम पुरुष	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

सेव्

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
मध्यम पुरुष	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उत्तम पुरुष	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
मध्यम पुरुष	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उत्तम पुरुष	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
मध्यम पुरुष	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उत्तम पुरुष	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
मध्यम पुरुष	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उत्तम पुरुष	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
मध्यम पुरुष	सेवेथाः	सेतेयाथाम्	सेवेघ्वम्
उत्तम पुरुष	सेवेय	सेवेवाहि	सेवेमहि

लभ्

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभते	लभेते	लभन्ते
मध्यम पुरुष	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उत्तम पुरुष	लभे	लभावहे	लभामहे

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्येन्ते
मध्यम पुरुष	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यम पुरुष	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उत्तम पुरुष	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
मध्यम पुरुष	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उत्तम पुरुष	लभै	लभावहै	लभामहै

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
मध्यम पुरुष	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उत्तम पुरुष	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

अभ्यासप्रश्नोत्तर:-

रेखांकित पदयोः कः धातुः कश्चलकार: ?

1. त्यज जपमाला

उत्तर - त्यज् धातु लोट लकार

2 सलीलमीश: सृजति भुवम् ।

उत्तर - सृज् धातु लट्लकार

3 बोपदेवः व्याकरणम अरचयत्।

उत्तर - रच् धातु लङ्गलकार

4. सुरक्षितं देवेहत विनश्यति।

उत्तर - नश् धातु लट्लकार

5 हन्त! प्रतिनिवर्तन्ते अस्माकं सैनिकाः ।

उत्तर - वर्त धातु लट्लकार

6 जलं रक्षित रक्षितम ।

उत्तर -रक्ष् धातु लट्लकार

7वाचं वदत भद्रया ।

उत्तर - वद् धातु लोट्लकार

8 स्वस्ति पन्थामनुचरेम ।

उत्तर - चर् धातु विधिलिङ् लकार

9 का वा क्षत्तिरिह तेन भवेत् ते।

उत्तर - भूधातु विधिलिङ् लकार

10 प्रभाते आगत्य मत्स्यसंक्षयम् करिष्यामः ।

उत्तर - कृधातु लट्लकार

11 ताः मे सन्तु सदा गृहे ।

उत्तर - अस् धातु लोट्लकार

12वृक्षः स्वयमातपे तिष्ठति।

उत्तर स्था धातु लट्लकार

13 ब्राह्मे मुहुर्ते उत्तिष्ठेत् ।

उत्तर स्था धातु विधिलिङ् लकार

14 लीलावती भास्कराचार्यस्य पुत्री आसीत्।

उत्तर - अस् धातु लङ् लकार

15 चत्वारि तस्य वर्धन्ते ।

उत्तर - वर्धधातु लट्लकार

<u>रचनाकौशल।</u>

1.संस्कृत अपठितावबोधनम् अपठित गद्यांशः

1.संस्कृतभाषायां कथासाहित्यं तु महता प्रभाषेन दृश्यते। पञ्चतन्त्रं, हितोपदेशः, बृहत्कथा, सिंहासनद्वात्रिंशिका, कथासरित्सागरः इत्यादिषु रामायण महाभारत पुराणादिषु च विस्तृतः कथाप्रवाहः दृश्यते। बौद्धधर्मे अपि जातककथादयः सुप्रसिद्धाः। लौकिकविषयम् अवलम्ब्य रचिताः जैन कथाः अपि अनेकाः सन्ति। नीतिप्रवणता, आध्यात्मिकी प्रगतिः, आत्मोन्नतिः इत्यादयः अंशाः एतासु कथासु प्राधान्यम् आवहन्ति। एतासु कथासु निबद्धाः श्लोकाः कथामाध्यमेन जीवननिर्माणस्य सन्देशं प्रयच्छन्ति। एष एव उपदेशः एतासां कथानाम् उद्देश्यम्।

प्रश्ना:

(1) विस्तृत: कथाप्रवाह: कस्मिन् महाकाव्ये दृश्यते ?

(2)जातककथाः कस्मिन् धर्मे सुप्रसिद्धाः?

(3) कथासु निबद्धा: श्लोका: कस्य सन्देशं प्रयच्छन्ति ?

(5) 'प्रभाषेन' इति पदस्य विशेषणं किम् ?

(5) 'संक्षिप्तः' इति पदस्य किं विलोमपदमत्र प्रयुक्तम्?

उत्तर

1- संस्कृतभाषायां

2- बौद्धधर्मे

3- जीवननिर्माणस्य

4- महता

5- विस्तृत:

2. हिमालय पर्वते अनेकानि दर्शनीय स्थानानि सन्ति। तत्र प्रतिवर्षं भक्ताः श्रद्धालवश्च गत्या बद्रीनाथ-केदारनाथादिषु

मंदिरेषु भगवद्दर्शनं कुर्वन्ति। अद्यापि अनेकासु गुहासुमुनयः उषित्वातपः तपन्ति। अतः हिमालयस्य महत् गौरवं वर्तते। कस्य रक्षणे एव भारतस्य रक्षास्ति। वयं प्रतिज्ञा कुर्मः यत् आवश्यकतायां सत्याम् अस्य रक्षार्थं प्राणान् अपि त्यक्ष्यामः।

प्रश्ना:

(1) अनेकानि दर्शनीयानि स्थानानिकस्मिन् पर्वते सन्ति ?

(2) भक्ताः कुत्र गत्वा भगवद्दर्शनं कुर्वन्ति

(3) मुनयः कुत्र उषित्वा तपः कुर्वन्ति?

(4) कस्य रक्षणे एव भारतस्य रक्षास्ति?

(5) 'प्राणान्' इति शब्दे का विभक्ति: ?

उत्तर

1- हिमालय

2- बद्रीनाथ-केदारनाथादिषु मंदिरेषु

3-गुहासु

4-हिमालयस्य

5- द्वितीया विभक्ति

3.दीपावलीपर्व भारतीयानाम् प्रमुखं पर्व विद्येत। अस्मिन् दिवसे श्रीरामः पितुः आज्ञा पालयन् चतुर्दशवर्षाणि वने उषित्वा रावणं हत्वा, स्वपत्नीं सीतां च विमोच्य अयोध्यानगरी परावृत्तः आसीत् । तस्मादेव कालात् भारतीयाः प्रतिवर्ष कार्तिक अमावास्यायां स्वगृहे षु दीपान् प्रज्वालयन्ति । अस्मिन्नेव दिवसे रात्रौ महालक्ष्मीपूजनं क्रियते । अस्मात् पर्वणः पूर्वं जनाः स्वगृहाणां शुद्धिं कुर्वन्ति, गृहाणि च सज्जयन्ति ।

प्रश्ना :

(1) दीपावल्यां रात्रौ किं क्रियते ?

(2) दीपावली केषां प्रमुखं पर्व अस्ति ?

(3) दीपावली कस्मिन् दिने भवति ?

(4) 'पर्वणः' इति पदे का विभक्तिः ?

(5) 'स्वपत्नी सीता' अनयोः पदयों विशेषणपदं किम् ?

उत्तर

1- महालक्ष्मीपूजनं

2- भारतीयानाम्

3- प्रतिवर्ष कार्तिक अमावास्यायां

4- पंचमी

5- 'स्वपत्नीम्

4.मिथिलायां विद्यापति नामकः महान् कविः वभूव। सः संस्कृतस्य मैथिलीभाषायाश्च महाकविः आसीत्। अवहट्ट भाषायाम् अपितेन रचनाः कृताः। सः राज्ञः शिवसिंहस्य मित्रम् आसीत्। नृपस्य राजसभायां सः राजकविः आसीत्। विद्यापतिः महान् शिवभक्तः आसीत्। कथ्यते यत् महादेवः तस्य भक्त्या प्रसन्नो भूत्वा तस्मैबदु वरान् अयच्छत्।

प्रश्ना :

(1) विद्यापतिः कस्याः भाषायाः कविः आसीत् ?

(2)सः कस्य नृपस्य मित्रम् आसीत् ?

(3) विद्यापतिः कस्य भक्तः आसीत् ?

(4) विद्यापतये कः वरान् अयच्छत् ?

(5)'रुष्टः' इति पदस्य किं विलोमपदमत्र प्रयुक्तम्?

उत्तर

1- संस्कृतस्य

2- शिवसिंहस्य

3- शिवभक्तः

4- महादेवः तस्य भक्त्या प्रसन्नो भूत्वा तस्मैबदु वरान् अयच्छत्।

5- प्रसन्नः

5.जन्मभूमिः अस्मान् जननीवत् संरक्षति । अस्याः अन्नेन, जलेन, फलादीनां रसैश्च अस्माकं परिपालनं भवति कर्पासेन निर्मितैः वस्त्रैः अस्माकं शरीरं सुरक्षितं भवति । अस्मिन्नेव धरातले गृहाणि निर्माय वयं ससुखं वसामः । इयं जन्मभूमिः मातुरप्यधिकम् उपकरोति । एषा यावज्जीवं पालयति पोषयति च । भारतवर्षम् अस्माकं मातृभूमिः जन्मभूमिश्च । इयम् अस्माभिः अहर्निशं पूजनीया, रक्षणीया, वन्दनीया च अस्याः सौन्दर्यं तु अद्भुतम् एव । नदीभिः इयं सुजला । शस्यश्यामला च । देवताः अपि अस्याः गीतानि गायन्ति ।

प्रश्नाः -

(1) अस्माकं शरीरं केन निर्मितैः वस्त्रैः सुरक्षितं भवति ?

(2) वयं कुत्र गृहाणां निर्माणं कुर्मः ?

(3) काः अस्याः गीतानि गायन्ति ?

(4) 'संरक्षति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम् ?

(5) 'इयम् अस्माभिः अहर्निशं पूजनीया' इति वाक्ये 'इयम्' सर्वनामपदं कस्यै प्रयुक्तम् ?

उत्तर

1- कर्पासेन निर्मितैः

2- अस्मिन्नेव धरातले

3- देवताः अपि

4- जन्मभूमिः

5- जन्मभूमिः

6.भारतस्य शक्तिः सामर्थ्यं च अत्रत्यं प्राचीनज्ञानम् अवलम्बते। ज्ञानस्य भण्डारं संस्कृते निहितम् । ज्ञानस्य प्रकाशः अस्ति इत्यतः अयं देशः निर्दिश्यते 'भारतम्' इति। 'भा' नाम प्रकाशः । भायां रतः इति कारणतः अयं देशः भारतम्। ज्ञानस्य आधारेण एव भारतं भारतं भवितुम् अर्हति। भारतस्य पुनरुज्जीवनपर्यन्तम् अग्रे सरणमेव अस्माकं लक्ष्यम् इति। वयं सर्वे मिलित्वा संस्कृतभाषायाः प्रचाराय प्रसाराय कार्यं कुर्याम । पाठयेम संस्कृतं जगति सर्वमानवान् इति भवेत् अस्माकं प्रमुखं लक्ष्यम्। एषः एव भवेत् अस्माकं सङ्कल्पः । तदर्थं वयं स्वकीयस्य ज्ञानमपि अहर्निशं वर्धयामः इत्येव भवेत् अस्माकं निश्चयः ।

प्रश्ना :

(1)अयं देशः 'भारतम्' इति कथम् उच्यते ?

(2) वयं सर्वे मिलित्वा किं किं कार्यं कुर्याम ?

(3) अस्माकं निश्चयः किं भवेत् ?

(4) 'अर्हति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम् ?

(5) 'प्रमुखम्' इति विशेषणस्य विशेष्यं किम् ?

उत्तर

1- ज्ञानस्य प्रकाशः अस्ति इत्यतः अयं देशः निर्दिश्यते 'भारतम्' इति।

2- वयं सर्वे मिलित्वा संस्कृतभाषायाः प्रचाराय प्रसाराय कार्यं कुर्याम।

3- पाठयेम संस्कृतं जगति सर्वमानवान् इति भवेत् अस्माकं प्रमुखं लक्ष्यम्।

4- भारत

5- अस्माकं

7 अवश्यं करणीयं कर्म कर्तव्यम् इति उच्यते। मनुष्याणां जीवने कर्तव्यपालनेनैव सर्वदा उन्नतिर्भवति। कर्तव्यपालनं जीवनस्याधारशिला विद्यते। सर्वे एव स्वकर्तव्यस्याचरणं कुर्वन्ति। सूर्यः सततं तपति। वायुः अहर्निशं वहति । धरा प्राणिनः धारयति। जीवनं सुखमयं कर्तुं मानवस्य कृते अनेकानि कर्तव्यानि निर्धारितानि सन्ति। मनुष्यैः तेषां पालनं अवश्यमेव कर्तव्यम्। विद्याध्ययनम्, चरित्र-निर्माणम, स्वदेशस्य समाजस्य च सेवा सदाचारस्य पालनम, परोपकारादयः सर्वाणि कर्तव्यानि सन्ति। यः मानवः कर्तव्यपरायणः भवति स एव समाजस्य रक्षकः आदरभूतश्च भवति। अतः सर्वैः मनुष्यैः सदा स्वकर्तव्यं पालनीयम्। स्वकर्तव्यं न कदाचिदपि त्याज्यम् ।

प्रश्नाः :

एकपदेन उत्तरत :

(i) प्राणिनः का धारयति?

(ii) किं कदाचिदपि न त्याज्यम?

पूर्णवाक्येन उत्तरत :

(क) मनुष्याणां जीवने कदा उन्नतिः भवति?

(ख) कः समाजस्य रक्षकः आदरभूतश्च भवति?

प्रदत्त विकल्पेभ्यः उचितम् उत्तरं चित्वा लिखतः

(i) 'तपति' इति क्रियापदस्य कट्टपदं किम् अस्ति :

(अ) सूर्यः

(ब) वायुः

(स) मानदः

(द) धरा

(ii) जीवन सुखमयं कर्तुं............अत्र विशेषणपदं किम् अस्ति :

(क) जीवनम्

(ब) सुखमयम्

(स) कर्तुम्

(द) सन्ति

(i1i) 'निरन्तरम् अस्य कः पर्यायः गद्यांशे प्रयुक्तम्

(अ) सततम्

(ब)सुखमयम्

(स)सेवा

(द) त्याजयम्

(iv) 'दुःखमयम्' अस्य कः विलोमः गद्यांशे प्रयुक्तम्

(क) सुखमयम्

(ख) आचरणम्

(स) कर्तुम्

(द) सततम्

(IV) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं संस्कृतेन लिखतः।

उत्तर 1.कर्तव्यपालनं

स्वकर्तव्यं

2.मनुष्याणां जीवने कर्तव्यपालनेनैव सर्वदा उन्नतिर्भवति।

यः मानवः कर्तव्यपरायणः भवति स एव समाजस्य रक्षकः आदरभूतश्च भवति।

3सूर्यः

सुखमयम्

सततम्

सुखमयम्

4 कर्तव्यपालनं

8.प्रयागे गङ्गायमुनयोः सङ्गमः भवति तत्र द्वयोः नद्योः संगमतटे माघमासे मेलापकः आयोज्यते। द्वादशवर्षेषु एकबारं महाकुम्भो भवति। महाकुम्भे देशिकाः वैदेशिकाः, संन्यासिनः, यतिनः, सन्तजनाः, वेदज्ञाः, विद्वांसः,

सर्वेषां धर्माणां प्रचारकाः सम्मिलन्ति सर्वे संगमे स्नानंकृत्वा आत्मानं धन्यम् मन्यन्ते । गङ्गायाः विस्तृतंवर्णनं कालिदासेन रघुवंशकाव्ये सम्यग् विहितम् ।

प्रश्नाः

(1) प्रयागे कयोः नद्योः सङ्गमः भवति ?

(2) संगमतटे मेलापकः कदा आयोज्यते ?

(3) द्वादशवर्षेषु एकबारं प्रयागे किं भवति ?

(4) 'वर्णनम्' इतिपदस्य विशेषणं किम् ?

(5) 'देशिकाः' इति पदस्य किं विलोम पदमत्र प्रयुक्तम् ?

उत्तर

1-गङ्गायमुनयोः

2-माघमासे

3-महाकुम्भो

4-विस्तृतं

5-देशिकाः

9.अधुना पर्यावरणस्य समस्या न केवलं अस्माकं अपितु समस्तविश्वस्य ज्वलन्त समस्या वर्तते। यज्जलं यश्च वायुः, अद्य उपलभ्यते, तत्सर्वं मलिनं दूषितश्च दृश्यते । उद्योगानां प्रदूषित जलं नालानां माध्यमेन वहति गंगासदृशी पावनी नदीमपि अद्य मलिनतां गता । असमाकं पूर्वजाः पर्यावरणस्य शुद्धतायै उपवनानां उद्यानानाम् च आरोपणम् कुर्वन्ति स्म। विगतकाले वनानां छेदनेन वृक्षाणाम् अभावो अभवत् । तेषां अभावे अपेक्षिताः वृष्टिः न भवति । अनावृष्टिः अस्माकं कृषिकार्यम् बाधते । पर्यावरणस्य रक्षायै वयं सर्वथा सचेष्टाः भवेम।

1. अधुना पर्यावरणस्य समस्या कुत्र वर्तते?

क. भारतदेशे

ख. अमेरिका देशे

ग. समस्त विश्वे

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

अस्माकं पूर्वजः पर्यावरणस्य शुद्धतायै किम् कुर्वन्ति स्म ?

3. भाषिक कार्यम्

क. अस्मिन् अनुच्छेदे भवेम क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

अ. उद्योगपतिः

ब. वयं

स. पूर्वजाः

द. वृक्षाणि

4. 'पावनी नदी' पदयोः विशेषणपदं किम्?

उत्तर

1- ग

2- असमाकं पूर्वजाः पर्यावरणस्य शुद्धतायै उपवनानां उद्यानानाम् च आरोपणम् कुर्वन्ति स्म।

3-ब

4- पावनी

10.वीराणां कदापि मृत्युः न भवति । समाजाय राष्ट्राय वा स्वजीवनं अर्पयित्वा ते अमराः भवन्ति। तेषु वीरेषुं आसीत् एकः महावीरः क्रांतिकारी चन्द्रशेखरः आजादः । स्वतन्त्रता आन्दोलने एकतः महात्मागान्धि-सदृशाः अंहिसायाः अनुयायियः आसन् । अपरतः क्रान्तिकारिणः आसन, ये मातृभूम्यै स्वरक्तं अर्पितवान् । यदा चन्द्रशेखरः चतुर्दशवर्षीयः एव आसीत् तदा एव सः स्वतन्त्रता आन्दोलने अकूर्दत् । कारागारे बन्दीभूतः स 'महात्मा गांधी जयतु भारतमाता जयतु इति उदघोषं कृतवान् । एतेन रूष्टाः आंग्लाधिकारिणः तम् भृशम् अताऽयन सः मूच्छिछतः अभवत्। न्यायालये न्यायाधीशः तम् अपृच्छत्- तव किं नाम? स गर्वेण उत्तरत- "आजादः"

प्रश्नाः-

1. एकपदेन उत्तरत-

(i) केषां मृत्युः न भवति?

(ii). स्वतंत्रता आन्दोलनस्य महान् वीरः कः आसीत् ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

यदा कारागारे बन्दीभूतः आजादः भारतमाता जयतु इति उद्घोषं कृतवान् तदा आंग्लाधिकारिणः कीदृशं व्यवहारं अकरोत्?

3. निर्देशानुसारम् उत्तरत-

(1) "रूष्टाः आंग्लाधिकारिणः " अनयोः पदयोः विशेषणपदं चित्वा लिखत।

अ. रूष्टाम्

ब. प्रसन्नः

स. रूष्टाः

द. रूष्टायाः

(2)" कृतवान् " इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम् ?

अ. आजादः

ब. महात्मा गांधी

स. सः

द. त्वम्

4. अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत।

उत्तर

1-(1) वीराणां

(2)चन्द्रशेखरः आजादः

2-आंग्लाधिकारिणः तम् भृशम् अताऽयन सः मूच्छिछतः अभवत्।

3-(1) स

(2) आजादः

4-चन्द्रशेखरः आजादः

11.भारतवर्षः अस्माकं प्रियः राष्ट्रः । एतस्य उत्तरस्यां दिशि हिमालयः, दक्षिण दिशि च हिन्द महासागरः अस्य चरणौ प्रक्षालयति। प्राचीनकाले अस्याभिधानं :आर्यावर्तः" आसीत् । अत्रपुरा भरतः' नामकः एकः प्रतापी नृपः अभवत् तस्यैव नाम्ना 'भारतवर्षम्' इति प्रसिद्धम्। अत्र सर्वत्र प्रकृतेः स्वाभाविकी शोभा दृश्यते । अस्माकं देशे विविधाः भाषाः, विभिन्नाः संप्रदायाश्च सन्ति। 'अनेकतायां एकता' इति भारतीय संस्कृतेः प्रमुखा विशेषता। अस्य धर्मः, दर्शनम्, ज्ञानम् साहित्यं च सर्वम् अप्रतिमम् अद्यापि समीचौनम् उपयोगिनश्च सन्ति।

1. एकपदेन उत्तरत-

(i) भारतस्य उत्तरस्यां दिशि कः वर्तते?
क. विंध्याचलः
ख. हिमालयः
ग. कैलाश:
घ. अरबसागरः
2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-
दक्षिण दिशि कः अस्य चरणौ प्रक्षालयति?
3. निर्देशानुसारम् उत्तरत-
(1) 'अस्यभिधानं' अस्मिन् पदे 'अस्य' सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्
क. हिमालयस्य
ख. हिन्द महासागरस्य
ग. भारतस्य
घ. मानवस्य
(ii) 'युष्माकं' इत्यस्य विलोमपदं चित्वा लिखत
क. अस्माकं
ख. तव
ग. मम
घ. मध्यम्
उत्तर
1-ख
2-दक्षिण दिशि च हिन्द महासागरः अस्य चरणौ प्रक्षालयति।
3-1(ग)
2(क)

12.सदाचारिपुरुषाणां व्यक्तित्वमनुपमं भवति । ते समुद्रवत् गम्भीराः, हिमालयवत् उच्चा, धरणीव सहनशीलाः सूर्यवत् तीव्राः, चन्द्रवत् शीतलाश्च भवन्ति । ते यत् कथयन्ति तस्य पालनमपि कुर्वन्ति । "मनस्येकं, वचस्येकं, कर्मण्येकम्" इति तेषां व्यवहार: भवति अतएव अस्माकं महर्षिभि: कथितम्-आचार: परमो धर्मः । अस्माकं पूर्वजा: सदाचारिण: आसन् । (महर्षिणा मनुना अपि कथितम् - आचारात् लभुते ह्यायुः)। आचार: सर्वधर्माणां मूर्धानमधिरोहति । सदाचारी जन: देवैरपि पूज्यते सदाचरणेन एव राम: कृष्ण: महात्मा बुद्धः, महावीरस्वामी च अद्यापि यश:शरीरेण जीवन्ति अतः चरित्रमेव सर्वदैव संरक्षणीयम् ।
प्रश्ना:
(1)सदाचारिणां व्यवहार: मनसि वचसि कर्मणि च कथं भवति ?
(2)आचारात् किं किं लभ्यते ?
(3) किं सर्वदैव संरक्षणीयम् ?
(4) 'आसन्' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम् ?
(5) 'अनुपमम्' इति विशेषणस्य विशेष्यं किम् ?
उत्तर 1. मनस्येकं, वचस्येकं , कर्मण्येकम् ।
2 आचारः सर्वधर्माणां मूर्धानमधि रोहति ।
3 चरित्रमेव सर्वदैव संरक्षणीय ।

4 सदाचारिणः।
5 व्यक्तित्वम्।

13.यदा अर्जुनः महाभारतस्य युद्धे आत्मनः सम्मुखे स्वभातृन् गुरूजनान् सम्बन्धिनश्च दृष्टवा खिन्नः निराशश्चाभवत् सः दुःखितमनसा स्वास्त्रशस्त्राणि व्यक्त्या युद्धात् पलायनायम् तत्परोऽभवत्। तदा ते - युद्ध-विमुखं दृष्ट्वा श्रीकृष्णेन तस्मै गीतायाः उपदेशं दत्तवान्। श्री कृष्णस्य अर्नुनाय दत्तं उपदेशं गीतायां महर्षिः वेदव्यासेन निबद्वम्। गीतायां अष्टादश अध्यायाः सन्ति। गीता मनुष्यमात्र निष्कामकर्मणः संदेशं ददाति। गीतायां उक्तम् - कर्मण्ये वाधिकारास्ते मा फलेषु कदाचनं · निष्काम कर्मव्यवहारः एव अस्माकं जीवनोद्वारस्य उपायः। गीता अखिल विश्वस्य हितार्थ एकम् अद्वितीयग्रन्थमस्ति।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत-

1. कः महाभारतस्य युद्धे खिन्नः अभवत्?
2. अर्जुनः कानि व्यक्त्वा युद्धात् पलायनाय तत्परोऽभवत्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

गीतायां महर्षिः वेदव्यासेन किम् निबद्वम् कृतम्।

3. 'तत्परोऽभवत्' इति क्रियापदस्य किं कर्तृपदम्?

अ. श्रीकृष्णः
स. अर्जुनः
ब. कर्णः
द. महर्षिः वेदव्यासः

4. 'युद्ध विमुखं' दृष्ट्वा श्रीकृष्णेन तस्मै गीतायाः उपदेशं दत्तवान्' इत्यत्र तस्मै' इति सर्वनाम पदं कस्मै प्रयुक्तम ?

अ. छात्राय
स. अर्जुनाय
ब. मानवाय
द. भीमाय

5. अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत।

उत्तर

1- अर्जुनः
स्वास्त्रशस्त्राणि
2- श्री कृष्णस्य अर्नुनाय दत्तं उपदेशं गीतायां महर्षिः वेदव्यासेन निबद्वम्।
3- अर्जुनः
4- अर्जुनाय
5- गीता

14.एकदा द्वौ धनिकौ आस्ताम्। तयोः धनिकयोः मध्ये विवादः जातः। उभौ अपि न्यायालयं गतवन्तौ। एकः धनिकः अचिन्तयत् - अहं लक्षं रूप्यकाणि न्यायाधीशाय उत्कोचरूपेण ददामि इति। सः स्यूते लक्षं रूप्यकाणि स्थापयित्वा न्यायाधीशस्य गृहं गतवान्। न्यायाधीशः तस्य मन्तव्यं ज्ञात्वा क्रुद्धः अभवत्। धनिकः न्यायाधीशम् अवदत्- भोः ! मत्सदृशाः लक्षरूप्यकाणां दातारः दुर्लभाः एव। न्यायाधीशः धनिकम् अवदत्- लक्ष-लक्षरूप्यकाणां

दातारः कदाचित् अन्ये अपि भवेयुः परन्तु लक्षरूप्यकाणां निराकर्त्तारः मत्सदृशाः अन्ये विरलाः एव। अतः कृपया गच्छतु। न्यायस्थानं मलिनं मा करोतु। लज्जितः धनिकः धनस्यूतं गृहीत्वा ततः निर्गतः।

अ एकपदेन उत्तरत - (केवलं प्रश्नचतुष्टयम्)

(i) कयोः मध्ये विवादः जातः?

(ii) कः लज्जितः भूत्वा निर्गतः?

(iii) उभौ कुत्र गतवन्तौ?

(iv) धनिकः कति रूप्यकाणि न्यायाधीशाय दातुम् इच्छति स्म?

(v) लज्जितः धनिकः किं गृहीत्वा निर्गतः?

2- पूर्णवाक्येन लिखत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)

(i) धनिकः न्यायाधीशं किम् अवदत्?

(ii) न्यायाधीशः किम् अवदत्?

(iii) एकः धनिकः किम् अचिन्तयत् ?

यथानिर्देशम् उत्तरत - (केवलं प्रश्नचतुष्टयम)

(i) 'एकदा द्वौ धनिकौ आस्ताम्' अत्र किं क्रियापदम्?

(क) एकदा

(ख) धनिको

(ग) आस्ताम्

(ii) लज्जितः' इति विशेषणपदस्य विशेष्यपदं किम् ?

(क) न्यायाधीशः

(ख) धनिकः

(ग) दातारः

(1i) 'निर्धनः' इति पदस्य किं विलोमपदं गद्यांशे प्रयुक्तम्?

(क) न्यायाधीशः

(ख) धनिकः

(ग) विवादः

(iv) 'अहं लक्ष रूप्यकाणि.....ददामि' अस्मिन् वाक्ये 'अहम्' इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(क) धनिकाय

(ख) न्यायाधीशाय

(ग) न्यायालयाय

उत्तर

1-एकपदेन उत्तरत-

(i) धनिकयोः

(ii) धनिक

(iii) न्यायालयम्

(iv) लक्ष रूप्यकाणि / लक्षरूप्यकाणि

2- पूर्णवाक्येन लिखत

(1) धनिकः न्यायाधीशम् अवदत्- भोः ! मत्सदृशाः लक्षरूप्यकाणां दातारः दुर्लभाः एव।

(ii) न्यायाधीशः धनिकम अवदत- लक्षा-लक्षरूप्यकाणां दातारः कदाचित् अन्ये अपि भवेयुः परन्तु लक्षरूप्यकाणां निराकर्त्तारः मत्सदृशाः अन्ये विरला; एव। अतः कृपया गच्छतु। न्यायस्थानं मलिन मा करोतु।

(iii) एकः धनिकः अचिन्तयत् -अहं लक्ष रूप्यकाणि न्यायाधीशाय उत्कोचरूपेण ददामि इति

(स) यथानिर्देशम् उत्तरत

(ग) आस्ताम

(ख) धनिकः

(ख) धनिकः

(क) धनिकाय

15.रामायणम् अस्माकं धर्मग्रन्थः अस्ति। रामायणस्य रचयिता वाल्मीकि: अस्ति। अस्मिन् ग्रन्थे मर्यादा पुरुषोत्तमस्य श्रीरामस्य जीवनस्य वृत्तान्तः अस्ति। भगवान् श्रीरामः स्वपितुः वचनं रक्षितुं, चतुर्दश वर्षाणि वने अवसत्। श्रीरामेण सह तस्य पत्नी सीता, लक्ष्मणः च अपि वनम् अगच्छताम्। वने लंकायाः राजा रावणः सीताम् अहरत्। तत्र श्रीरामः वानराणां सहायतया रावणं हत्वा सीताम् अलभत। रामायणम् अस्माकं राष्ट्रस्य अमूल्यः निधिः अस्ति। रामायणं पठित्वा जनाः शान्तिप्रियाः सदाचारिणः च भवन्ति।

1. एकपदेन उत्तरत-

(i) रामायणस्य रचयिता कः अस्ति?

(ii) श्रीरामः कति वर्षाणि वने अवसत्?

(iii) श्रीरामः केषां सहायतया सीताम् अलभत ?

(iv) रामायणे कस्य जीवनस्य वृत्तान्तः अस्ति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत -

(i) श्रीरामेण सह कौ वनम् अगच्छताम्?

(ii) रामायणं पठित्वा जनाः कीदृशाः भवन्ति?

3. निर्देशानुसारम् उचितम् उत्तरं चित्वा लिखत

(क) 'जनाः' इति कर्तृपदस्य क्रियापदं किम् ?

(i) अस्ति (ii) भवन्ति

(iii) रामायणम् (iv) पठित्वा

(ख) 'श्रीरामः' इति विशेष्यपदस्य विशेषणपदं किम् ?

(i) भगवान् (ii) स्वपितुः

(i1i) वने (iv) आज्ञाम्

(ग) 'अशान्तिप्रियाः' इति पदस्य विलोमपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत - (1) शान्तिप्रियाः

(2) जनाः

(3) सदाचारिणः

(4) अमूल्याः

(घ) 'तस्य पत्नी' अत्र तस्य इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(i) रामाय (ii) रावणाय

(iii) लक्ष्मणाय (iv) सीताय

IV. गद्यांशस्य उचितं शीर्षकं लिखत।

उत्तर 1.रचयिता वाल्मीकिः

चतुर्दश वर्षाणि

वानराणां

श्रीरामः

2.श्रीरामेण सह तस्य पत्नी सीता, लक्ष्मणः च अपि वनम् अगच्छताम्।

रामायणं पठित्वा जनाः शान्तिप्रियाः सदाचारिणः च भवन्ति।

3.भवन्ति

भगवान्

शान्तिप्रियाः

रामाय

4.रामायणम्

2.पत्र

1. भवान् सुरेशः, छात्रावासे निवसति। आगरास्थं ताजभवनं द्रष्टुं शैक्षिकभ्रमणाय गन्तुं भवान् इच्छति । तदर्थं धन प्रेषणाय पितरं प्रति लिखितं पत्रं मंजूषायां प्रदत्तैः शब्दैः रिक्तस्थानानि पूरयत

विद्यालय छात्रावास:
प्रयागनगरम्
परमादरणीयाः पितृमहोदयाः,
सादरं प्रणामामि ।

सविनयं (i)..................यत् मम अर्द्धवार्षिकी परीक्षा समाप्ताजाता। मम परीक्षा (ii)..........................अग्रिमे अवकाशे अहं गृहं न (iii).................... । तत्र कारणम् अस्ति यत् विद्यालयेन एकस्य (iv).................... आयोजनं कृतम् । एषा यात्रा आगरास्थ ताजभवनं द्रष्टुम् आयोजिता वर्तते । अतः तत्र व्ययार्थपंचशतं (v).................... भवन्त: प्रेषयन्तु । सर्वेभ्यः मम प्रणामाः।

भवतां प्रिय पुत्रः
सुरेशः

मञ्जूषा
शोभना, निवेदनम्, आगमिष्यामि, शैक्षिक भ्रमणस्य, सूप्यकाणि, प्रणामाः

उत्तर
1निवेदनम्, 2शोभना, 3आगमिष्यसि, 4शैक्षिक भ्रमणस्य , 5 रुप्यकाणि

2.मित्रं प्रति, परीक्षायां सफलतायै लिखितं पत्रं, मञ्जूषायां प्रदत्तैः शब्दैः पूरयत

नवदेहली
25.6.2020

(i)..................
(ii).................

भवतः परीक्षासफलतापत्रम् अद्यैव (1ii)....................। भवतः उत्तीर्णतां ज्ञात्वा मयि अति (iv).................... अस्ति। अहोरात्रं प्रयास विधाय 95 प्रतिशत (v).................... लब्धवान्। भवान् मम साधुवादान् अर्हति।
भवते पुनः वर्धापनं,

भवतः मित्रम्
सुरेन्द्र

मञ्जूषा

सन्तोषः, प्राप्तम्, अंकान्, प्रियमित्र, नमोनमः, पितृभ्याम्
उत्तर
1 पितृभ्याम् 2 नमोनमः 3 प्राप्तम् 4 सन्तोषः 5 अंकान् ।

3.भवान् सौम्यः । भवतां मित्रं राकेशः दूरदर्शनात् प्रसारित नाटके भागं गृहीतवान् सर्वोत्तम-अभिनयकृते पुरस्कारं च प्राप्तवान् । तं प्रति अभिनन्दनपत्रं मञ्जूषायां प्रदत्तैः शब्दैः रिक्तस्थानानि पूरयित्वा लिखतु ।

जयपुरतः
तिथि :

प्रिय वयस्य राकेश
नमस्ते ।

'हृत्परिवर्तनम्' नाम नाटके त्वम् (i)................ कृतवान्, (ii).............. च प्राप्तवान् इति मया ज्ञातम् । विगत शनिवासरे (iii).................. नववादनकाले मया दूरदर्शनतः तस्य (iv)................. प्रसारणम् अपि दृष्टम् । अतीव (v).................. जाता । अभिनन्दयामि त्वाम्।

तव मित्रम्
साम्य :

मञ्जूषा
पुरस्कारम्, संध्यायाम, नाटकस्य, अभिनयम्, शोभनम्, प्रसन्नता
उत्तर
1 अभिनयम् 2 पुरस्कारम् 3 संध्यायाम् 4 नाटकस्य 5 प्रसन्नता ।

4.भवान् सौरभः । भवतां मित्रं सुरेशः संस्कृत श्लोक -वाचनप्रतियोगितायां प्रथमपुरस्कारं लब्धवान् । तम् प्रति अभिनन्दनपत्रं मंजूषायां प्रदत्तैः शब्दैः रिक्तस्थानानि पूरयित्वा लिखतु ।

मालवीय नगरम्
तिथिः.............

प्रिय मित्र सुरेश
नमस्ते
भवान संस्कृत श्लोक वाचने प्रथमं (i)................. प्राप्तवान् इति ज्ञात्वा अतीव (ii).............. जाता। त्वं तु सत्यमेव(iii)................. इति मन्ये। लिखतु (iv)................. त्वं गृहम् आगमिष्यसि। सर्वे त्वां स्मरन्ति (v).............. च।

तव सुहृत्

सौरभः

मञ्जूषा
प्रतिभाशाली, सम्मानम्, प्रसन्नता, अभिनन्दन्ति, कदा, विद्यालये

उत्तर
1 सम्मानम् 2 प्रसन्नता 3 प्रतिभाशाली 4 कदा 5 अभिनन्दन्ति

5.भ्रातुः विवाह-अवसरे स्वमित्रस्य निमन्त्रणार्थम् अधोलिखितम् पत्र मञ्जूषायाः सहायतया पूरयत।

गांधीनगरम्
दिल्ली।
दिनाङ्कः

प्रिय मित्र सक्षम!
सप्रेम नमो नमः।

अत्र कुशलं तत्र अस्तु। एतद् 1 .... भवान् अतीव प्रसन्नो 2................. यत् मम ज्येष्ठ-भ्रातुः विवाहः अग्रिम-मासस्य पञ्चम्यां तिथौ निश्चितः। भवतः परिवारेण सह 3 .... अनिवार्या। गृहे माता-पित्रोः 4............... मम प्रणामः। भवतः 5...................प्रतीक्षायाम्।

भवदीयं मित्रम्
सूर्यः

मञ्जूषा
भविष्यति, आगमनस्य, चरणयोः, उपस्थितिः, ज्ञात्वा

उत्तर
1 ज्ञात्वा 2 भविष्यति 3 उपस्थिति 4 चरणयोः 5 आगमनस्य।

6.(मित्रं प्रति)
उचितशब्दैः रिक्तस्थानानि पूरयित्वा पत्रं पुनः लिखन्तु-

परीक्षा भवनात्
तिथिः.............
प्रिय मित्र,

प्रिय मित्र,
सस्नेहं नमो नमः

अत्र कुशलं तवास्तु। अहम् पाठ्यपुस्तके एका (1) ....
अपठम्। तस्याम् एकः बालः आसीत्। सः पठने अकुशलः आसीत्। एकदा सः (2) .... एकम् कूपम् अपश्यत्। कूपस्य उपरि पाषाणशिलायाम् एकं गर्तम् दृष्ट्वा बालः तस्य विषये मातरम् अपृच्छत्। माता अवदत् पाषाणशिलायां पुनः घटस्थापनेन एषः गर्तः निर्मितः। बालः अचिन्तयत्-यदि (3) .... पुनः पुनः घटस्थापनेन (4) .... अभवत् तर्हि मम मतिः अपि पुनः पुनः पठनेन तीव्रा भविष्यति। एवं सः (5) .... कृत्वा बुद्धिमान् अभवत्।
आशां करोमि यत् कथां पठित्वा त्वमपि पठनाय प्रेरितः भविष्यासि (6) .... नमो नमः।
भवतः मित्रम्
सुबोधः

मञ्जूषा- पितृभ्याम, कथाम्, परिश्रम, मार्गे, पाषाणशिलायाम्, गर्तः
उत्तर
1 कथाम् 2 मार्गे 3 पाषाणशिलायाम् 4 गर्तः 5 परिश्रम 6 पितृभ्याम्।

7.विद्यालयात् अवकाशार्थं प्रधानाचार्यं प्रति अधोलिखितं पत्रं मञ्जूषातः उचितपदानि गृहीत्वा पूरयत-

सेवायाम्.

मान्याः प्रधानाचार्याः.
कुलाची-हंसराज-मॉडल-विद्यालयः
अशोक-विहारः, दिल्ली।

महोदयाः

सविनयं (1) .... इदम् अस्ति यत् (2) .... अहं ज्वरेण (3) .... अस्मि। ज्वर-कारणात् अहं (4) .... आगन्तुम् असमर्थः अस्मि। कृपया माम् (5) .... अवकाशं प्रदाय अनुग्रहणन्तु।

भवदीयः शिष्यः,
अनुजः

मञ्जूषा- दिनद्वयस्य, निवेदनम्, गतरात्रौ, पीडितः, विद्यालयम्
उत्तर
1 निवेदनम् 2 गतरात्रौ 3 पीडितः 4 दिनद्वयस्य 5 विद्यालयम्।

8.भवान् दीपकः। भवतां मित्रं रमेशः अन्यस्मिन् नगरे वसति। तं प्रति नववर्षस्यागमेशुभकामनाः मंजूषायां प्रदत्तैः शब्दैः रिक्तस्थानानि पूरयित्वा प्रेषयतु।

द्वारकानगरम्
तिथि :-

प्रिय मित्र रमेश,
सप्रेम नमस्ते।

नववत्सरोऽयं तव (1) .... प्रतिदिनं सौख्यं (2) ....
समृद्धि (3) ....च पूरयेत्। गृहे (4) .... परिवारजनानां कृतेऽपि नववर्षस्य (5) ....
स्युः।

तव सुहृत्,
दीपक:

मञ्जूषा
सफलतां, पूरयेत्, जीवने, नवतां, सर्वेषां शुभकामनाः

9.भवान् विजयः, भवतां मित्रं दिनेशः चेन्नई नगरस्थः। तं प्रति जन्मदिनस्य शुभकामना-पत्रं मञ्जूषायां प्रदत्तैः शब्दैः रिक्तस्थानानि पूरयित्वा लिखतु।

स्थानम्-लक्ष्मणपुरम्
तिथिः

प्रिय मित्र दिनेश,
नमो नमः,

तव (1).............. अस्मिन् मासे एव (2) .... । अहं तदर्थं (3) .... प्रेषयामि। तव जीवनं (4) .... समृद्धं तथा च (5) .... स्यादिति अहं कामये। आत्मनः शुभकामना प्रेषयामि। इति;

तव सुहृत्
विजयः

मञ्जूषा
भविष्यति, शुभकामनाः, जन्मदिनम्, सुखपूर्णम्, स्वास्थ्यकरम्
उत्तर

1 जन्मदिनम् 2 भविष्यति 3 शुभकामना 4 स्वास्थ्याकरम् 5 सुखपूर्णम्।

10.भवान् राकेशः छात्रावासे जयपुरविद्यापीठे वसति । भवतः विद्यालये संस्कृतदिवसे मालविका-अग्निमित्रम् इति संस्कृतनाटकस्य मञ्चनं भविष्यति । तत्र भवान् अपि अभिनयं करिष्यति स्वपितृमहोदयान् प्रति तं प्रेक्षितुं निमन्त्रणपत्रं, मंजूषायाम् प्रदत्तैः शब्दैः रिक्तस्थानानि पूरयित्वा लिखतु।

जयपुर विद्यापीठ छात्रावासः
तिथिः

परमादरणीयाः पितृमहोदयाः
सादरं नमामि ।

अद्य अहं सादरं (1) .... यत् विद्यालये आगामि (2) ....
संस्कृत दिवसस्य आयोजनं भविष्यति । तत्र (3) .... नाम नाटकं प्रस्तूयते । एतस्मिन् (4) .... अहमपि अभिनयं (5)................ भवान् मात्रा सह आगत्य अवश्यमेव पश्यन्तु ।

भवतां प्रियः पुत्रः
राकेशः

मञ्जूषा
मालविकाग्निमित्रम्, निवेदयामि, अवसरे, मासे, करिष्यामि, दिवसस्य

उत्तर
1 निवेदयामि 2 मासे 3 मालाविकाग्निमित्रम् 4 अवसरे 5 करिष्यामि ।

3.चित्र

अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मंजूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया पञ्चवाक्यानि लिखत

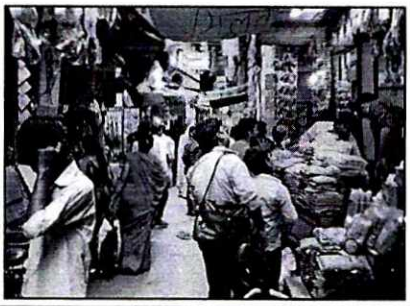

मंजूषा

न गृहस्य, मम, समीपे, एव, हट्टम, अस्ति। तत्र विविधानि, आपणानि सन्ति, जनाः तत्र , गत्वा प्रतिदिनं, दैनिकोपयोगाय वस्तूनि, क्रीणन्ति, तत्र, शाकादीनाम्, विक्रय्, अपि, जनाना, महान्, अत्र, सम्मर्दः, दृश्यते

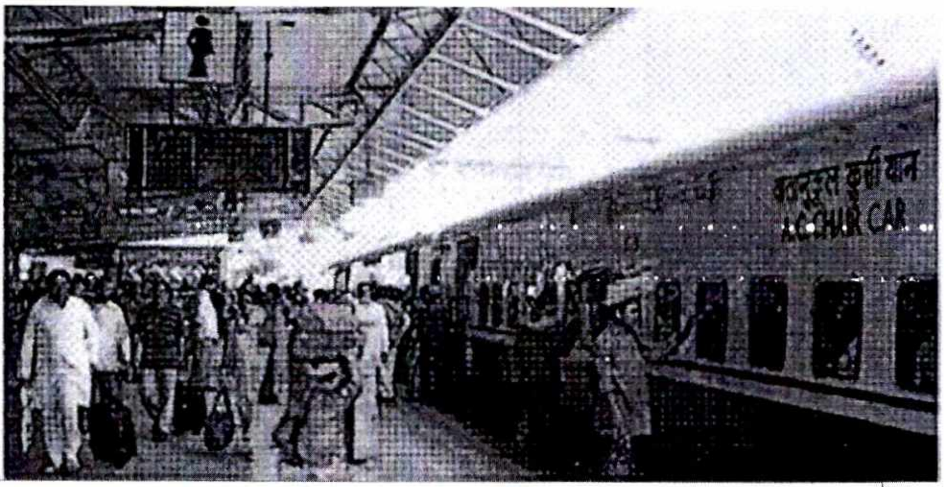

मञ्जूषा

रेलयानम्, रेलस्थानकम्, यात्रिणः, आरोहन्ति, अवरोहन्ति, भारवाहका, नयन्ति, भारम्।

मञ्जूषा
षष्ठी पूजनस्य, अवसरः, वृक्षस्य अधः, जनाः, बालकाः, महिलाः, स्नानं, जलमध्ये, स्थिताः, केचन, पूजां, कुर्वन्ति, जले जनानां, छाया, पवित्रं जलं, स्वच्छम्

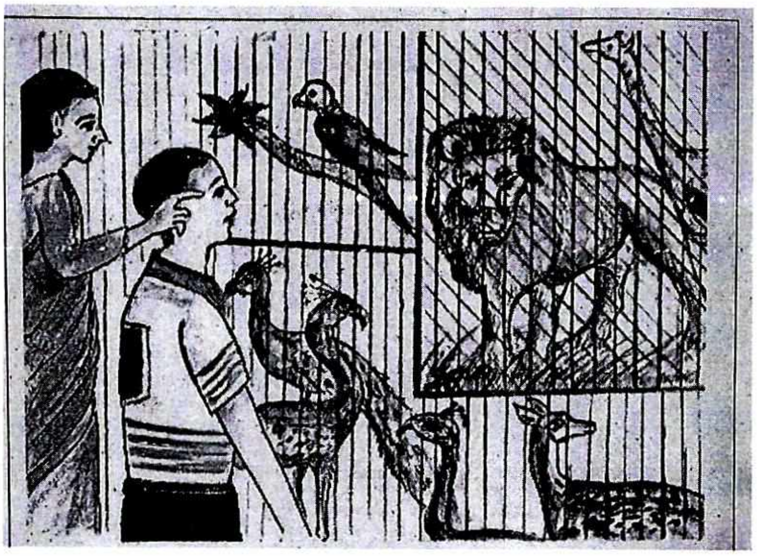

मंजूषा
जंत्वागारः, सिंहदम्पती, सिंहशावकौ, बालकः बालिका, मात्रा सह, पित्रा सह, अवलोकयन्ति,
जलपात्रम्, भोजनपात्रम्

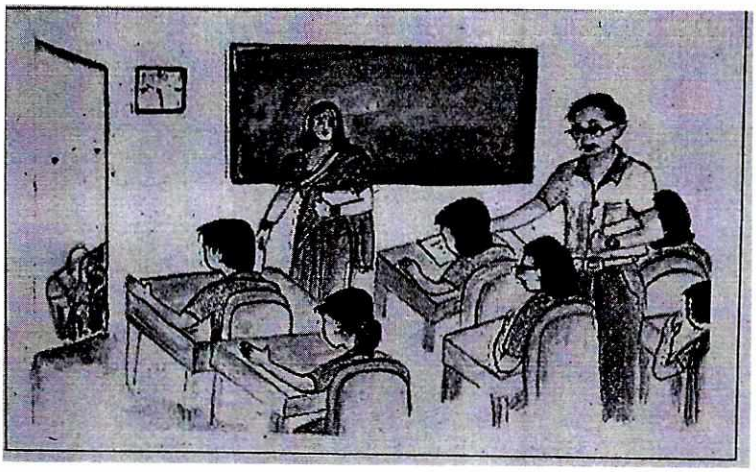

मंजूषा
परीक्षाभवनम्, दत्तचित्तछात्रा, निरीक्षकद्वयम्, उत्तरपुस्तिकावितरणम्, प्रश्नपत्राणां वितरणम्, भित्तौ घटिका, सार्धनववादनम्, बालकानां स्यूतादयः, कोष्ठात् बहिः

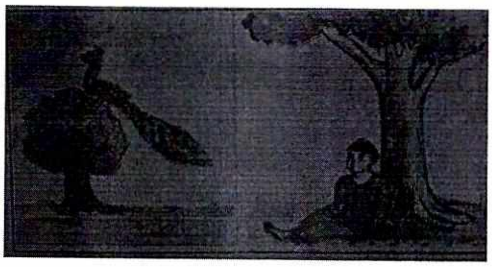

मंजूषा
सर्षपक्षेत्रम्, परितः, वृक्षाः, वृक्षस्य उपरि मयूरः, बालकः ।

मञ्जूषा -
बालिकाः, शिक्षिका, व्यजनानि, वातानुकूलनयन्त्रम्, आसन्दाः, उत्पीठिका तिष्ठन्ति, ध्यानेन शृण्वन्ति , विद्युत्-फलकम् (स्मार्टबोर्ड), महापुरुषाणां चित्राणि, अग्निशमनयन्त्रम् , भित्तौ , कक्षा ।

मञ्जूषा
पंचवट्यां कुटी, रामः सीता मयूरः, लक्ष्मणः, पुष्पाणि, पत्राणि, नद्याः तटे, हंसः, उपविष्टौ, हस्ते धनुः, तिष्ठति, कमलपुष्पम्, खादति, पार्श्वे हरिणः, पश्यति

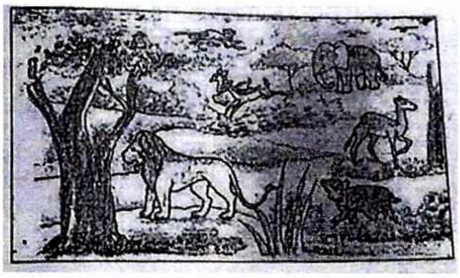

मञ्जूषा
वने, धावति, सिंहः, बानराः, वृक्षाः, कूर्दन्ति, वृक्षेषु, पुष्पाणि. पत्राणि गजः, भल्लूकाः, उष्टः मृगाः, च

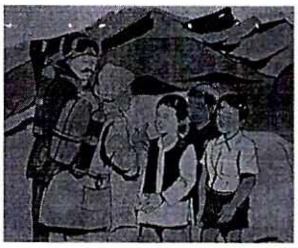

मज्जूषा
बालकाः पृच्छन्ति, पृष्ठे वर्तुलाकारे पात्रे, पर्वतारोहिणौ पर्वतेषु वृक्षाणाम् अभावः, वायौ ओषजनः न्यूनः, श्वासे काठिन्यम्। अतः वृक्षान् विना, मानवजीवनम्, अरक्षितम्, वृक्षाणाम् कर्तनम् अनुचितम्।

4.अनुच्छेद

अधोलिखितं विषयमधिकृत्य मञ्जूषापदसहायतया पञ्चवाक्येषु एकमनुच्छेदं लिखत

1.सत्सङ्गतिः

मञ्जूषा
सज्जनानां, सङ्गतेः महान् प्रभावः, कीटः, देवतानां शिरसि, पुष्पाणां, आरोहति, क्रूरः सहृदयः, बुद्धेः जडतां, दुर्जनः, सज्जनः, सतां दर्शनं, कुसङ्गतिः, सर्व, नाशयति, यशः, प्रसरति

2.शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्

मञ्जूषा
स्वास्थ्यं, शरीरस्य, आवश्यकम्, कार्यसम्पादनम्, जीवने सफलतायै, वरदानम्, दीर्घजीवनस्य कामना, स्वस्थं मनः, बुद्धिः, स्वस्थः आत्मा जीवनम् आनन्दमयम्।

3.'वसुधैव कुटुम्बकम्

मञ्जूषा
उदारचरितानां, सम्पूर्णजगत्, परिवारः, लघुचेतसां, मम, तव इति गणना, आत्मवत्, सर्वान् मनुष्यान्, परहिते निरताः, धारयन्ति, जीवनम्, वयं सर्वे, पुत्रः, एकस्य, परमात्मनः, देवाः, दानवाः ।

4.'शिक्षकदिवसः

मञ्जूषा
अनेकत्र, सितंबरमासस्य, पञ्चमे दिवसे, महत्त्वं, शिक्षकाणां प्रगीयते, पूर्वराष्ट्रपति राधाकृष्णन् महोदयस्य, जन्मदिवसे, आयोज्यते, शिक्षकाणां स्तुतिः

5. विज्ञानस्य आविष्काराः

मञ्जूषा
अस्माकं सुखमयम् आनन्दमयम, विज्ञानस्य, जीवनं, कृतम्, आविष्कारैः, रेलयानम्, विमानम् अन्यैः यातायातसाधनैः सुकरम्, निखिलम् कार्यम्, शीघ्रतया, विना परिश्रमेण, सुष्ठु भवति, रोगनिवारणाय, यन्त्राणि, समयस्य, परिश्रमस्य।

6.उद्यमेनैव सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः

मञ्जूषा
उद्यमेन, छात्रः, उत्तीर्णः, आलस्यं, महारिपुः,
भोजनं, मुखे, नैव, जनाः, महापुरुषाः, परिश्रमेण, सुव्यवस्थितं, जीवनं, समीपस्य, ईश्वरः, सहायकः अनुसन्धानानि, वैज्ञानिकानि, प्रगतिः, संसारे

7.संस्कृतभाषायाः महत्वम्

मञ्जूषा
स्वास्थ्याय, आवश्यकं, भवेत्, स्वच्छता, वातावरणं शरीरस्य, परिसरस्य, अभियानं. सर्वे. मिलिता, स्वस्थंमनः, आत्मा, सुखमयं, आनंददायकं रोगनिवारकम्

8"स्वच्छता अभियानम्"

मञ्जूषा
स्वास्थ्याय, आवश्यकं, भवेत्, स्वच्छता, वातावरणं शरीरस्य, परिसरस्य, अभियानं. सर्वे. मिलिता, स्वस्थंमनः, आत्मा, सुखमयं, आनंददायकं रोगनिवारकम्

9.किसान/कृषक

मञ्जूषा
कृषिप्रधान, भारतदेशः, कृषकाणां संख्या, राष्ट्रस्य पोषणं, कठिनं परिश्रमंकुर्वन्ति, अन्नदाता, सुखिनः न सन्ति, श्रमपूर्णं

10.अनुशासन

मञ्जूषा
जीवनस्य विकासाय, समाजस्य, अस्माकं विद्यालयस्य, व्यवहारेषु, देशस्य, परिवारस्य, आत्मिक उन्नति, लोक कल्याणम्

SANSKRIT PAPER 1

संस्कृतम्

(209)

समय : होरात्रयम्] **[पूर्णाङ्का: - 100**

निर्देशा : (1) अस्मिन् प्रश्नपत्रे द्विचत्वारिंशत् प्रश्नाः ।

(2) प्रत्येकं प्रश्नस्य समक्षम् अङ्काः सूचिताः ।

(3) सर्वे प्रश्ना: अनिवार्याः ।

खण्ड – क

1x10=10

1 गुरुगतां विद्यां क: अधिगच्छति ?

(A) ब्रह्मचारी (B) शुश्रूषुः

(C) परिश्रमी (D) मेधावी

2 मस्तिष्क: केन सबलं भवति ?

(A) दुग्धपानेन (B) मनोयोगेन

(C) भाग्येन (D) परिश्रमेण

3 'त्याज्यं न धैर्यम्" इति पाठे मकरी किम् खादितुमिच्छति ?

(A) वानरम् (B) वानरहृदयम्

(C) जम्बुफलानि (D) न किमपि

4 केन किम् न भवति ?

(A) वाचा भाषणम् (B) मनसा ध्यानम्

(C) श्रोत्राभ्यां श्रवणम् (D) नेत्राभ्यां श्वसनम्

5 कस्याः तीरे शबरी दृष्टा?

(A) गंगातीरे (B) यमुनातीरे

(C) सरयूतीरे (D) पम्पातीरे

6 शूलपाणि : इति कः कथ्यते?

(A) विष्णुः (B) शिवः

(C) इन्द्रः (D) सूर्यः

7 यक्षयुधिष्ठिरसंवादानुसारं किम् हित्वा प्रियः भवति ?

(A) क्रोधम् (B) मानम्

(C) कामम् (D) लोभम्

8 एतत् अव्ययं नास्ति?

(A) यद्यपि (B) प्रभूतम्

(C) सह (D) सर्वतः\

9 वयं कस्याः पुत्राः ?

(A) पृथिव्याः (B) आकाशः

(C) पातालः (D) सर्वः

10 'वृक्षः स्वयमातपे तिष्ठति' इति वाक्ये रेखांकितं पदं बहुवचने किं भविष्यति ?

(A) तिष्ठन्ति (B) तिष्ठतु

(C) तिष्ठतः (D) तिष्ठेत

11 मित्रस्य किमपि लक्षणद्वयं लिखत | 1+1= 2

12 (i) तपः किम् भवति ?

(ii) दमः कः प्रकीर्तितः? 1+1= 2

13 (i) चित्रकूटे कैकयीपुत्रः भरतः कम् प्रसादयितुम् आगतः?

(ii) प्रसन्नसलिला का आसीत्? 1+1= 2

14 अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत – 1x3=3

कण्वः - वत्से! अलं रुदितेन । स्थिरा भव। इतः पन्थानम् आलोकय । अस्मिन् नतोन्नते मार्गे ते

पदानि विषमीभवन्ति ।

शाङ्गरवः- भगवन्! ओदकान्तं स्निग्धो जनोनुगन्तव्यः इति श्रूयते। तदिदं सरस्तीरम् अत्र सन्दिश्यप्रति गन्तुमर्हति भवान्।

कण्वः - शकुन्तले ! त्वं गुरुन् शुश्रूषस्व, परिजनेषु उदारा भव। समृद्धिषु अगर्विताभव ।।

प्रश्नाः

(क) कण्वः कुत्र स्थित्वा शकुन्तलाम् उपदिशति ?

(ख) कण्वः शकुन्तलां किमुपदिशति ?

(ग) 'मार्गे' इति विशेष्यस्य किम् विशेषणम् अत्र प्रयुक्तम्?

15 कस्यचिदेकस्य चरित्रचित्रणं पञ्चवाक्येषु संस्कृतेन कुरुत - 1x5=5

लवः **अथवा** कण्वः ।

16 प्रश्नान् उत्तरत - 1+1=2

(क) विषदग्धेभ्यः शस्त्रेभ्यः भीता कस्य सेना पलायिता?

(ख) 'अपसरणम्' एव इतः उचितम् इति कः अकथयत्?

17 (क) पाषाणशिलाया गर्ताः कथं जाताः? 1+1=2

(ख) 'अहं मनोयोगेन पठिष्यामि ' इति कः कथयति ?

18 अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रशनान् उत्तरत – 1+1=2

वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमेति च याति च ।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः ॥

(i) यत्नेन किम् संरक्षेत् ?

(ii) कस्मात् क्षीणः अक्षीणः भवति ?

19 अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत – 1+1=2

अविश्रमं वहेद् भारं शीतोष्णं च न विन्दति ।
ससन्तोषस्तथा नित्यं त्रीणि शिक्षेत् गर्दभात् ।।

(i) अस्मिन् पद्ये गर्दभस्य कति गुणाः कथिताः ?

(ii) गर्दभः विश्रामं विना किम् करोति ?

20 अधोलिखितं पद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उतरत- 1x3=3

अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः ।
अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डितः ।।

(i) दूरं गच्छति इति कृते किम् पदमत्र प्रयुक्तम् ?

(ii) निरक्षरः इत्यस्य किम् विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम् ?

(iii) अस्मिन् श्लोके किम् क्रियापदम् ?

21 अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत- 1x3=3

ताभिः सहोत्थितं शीघ्रं, विमानं प्रेक्ष्य राघवः।
ऋष्यमूकसमीपे तु वैदेहीं पुनरब्रवीत्।।

अन्वयः -

राघवः <u>1</u> सह शीघ्रम् उ त्थि तम् <u>2</u> प्रेक्ष्य ऋष्यमूकसमीपे तु <u>3</u> अब्रवीत्|

22 रेखाङ्कितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत – 1+1=2

(क) <u>लीलावती</u> भास्कराचार्यस्य पुत्री आसीत्।

(ख) सः <u>गणितस्य</u> जटिलप्रश्नान् स्पष्टीकृतवान्।

23 कः कं प्रति कथयति? 1+1=2

(क) आर्य! त्वर्यताम्। अस्मद्रथं तत्रैव नयतु।

(ख) सम्राजं सुतम् आप्नुहि ।

24 महात्मनः गांधिनः आश्रमस्य किं नाम ? आश्रमात् जनै का प्रेरणा प्राप्यते ? 1+1=2

25 अधोलिखित गद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत – 1x3=3

आसीत् समुद्रसमीपे विशालः फलैः पूरितः जम्बुवृक्षः। तस्मिन् वृक्षे बलिष्ठो रक्तमुखनामकः वानरः वसति स्म। एकदा करालमुखः नामको मकरः वानरम् अपश्यत् अचिन्तयत् च यत् अयं वृक्षवासी स्वस्थः चञ्चलः निर्भीकः : इव प्रतिभाति । अयं मम सहचरो भवतु इति मत्वा प्रतिदिनं सस्नेहं वा र्ता करो ति । वानरः अपि कथयति यत् भवान् मम अतिथि :। भक्षयतु मधुराणि जम्बुफलानि ।

प्रश्नाः

(क) समुद्रतीरे फलैः पूरितः कः वृक्षः आसीत्?

(ख) भवान् मम अतिथि : इति कः कथयति ?

(ग) रक्तमुखनामकः वानरः वसति स्म इत्यत्र रेखांकित पदे कः लकारः?

26 अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत- 1x3=3

लीलावती भास्कराचार्यस्य पुत्री आसीत् । पुत्री शिक्षमाणः सः तस्याः कृते मनोविनोदंयुक्तं गणितं काव्यरूपेण अरचयत् । सः पशुपक्षिभ्रमरहंसादिमाध्यमेन गणितस्य जटिलप्रश्नान् अरचयत् तेषां समाधानं चापि अकरोत् । अतोऽयं ग्रन्थः लीलावती इति नाम्ना प्रसिद्धः|

प्रश्नाः

(1) भास्कराचार्यः कं ग्रन्थमरचयत् ?

(2) 'लीलावती' कस्य पुत्री आसीत् ?

(3) भास्कराचार्यः गणितस्य प्रश्नान् केषां माध्यमेन रचितवान् ?

27 कस्यचिदेकस्य पाठस्य सारांशं पञ्चवाक्येषु लिखत : 1x5=5

(i) त्याज्यं न धैर्यम्

(ii) यद्भविष्यो विनश्यति

(iii) कर्त्तव्यनिष्ठा

खण्ड : - ख

अनुप्रयुक्त व्याकरणम्

28 अधोलिखितानां वर्णानाम् उच्चारणस्थानानि लिखत – 1/2x4=2

ऋ, म, ष, झ |

29 रेखाङ्कितपदेषु सन्धिच्छेदं कृत्वा नाम लिखत- 1x3=3

सत्यमेवेश्वरो लोके, सत्ये धर्मः सदाश्रितः

सत्यमूलानि सर्वाणि, सत्यान्नास्ति परं पदम्

30 संधि कुरुत- 1+1=2

तत् + नूने प्रभातसमये मत्स्यजीविनः + अत्र समागत्य मत्स्यसंक्षयं करिष्यन्ति ।

31 रेखाङ्कितपदेषु कः मूलशब्दः का च विभक्तिः? 1+1=2

(क) लोभः महान् व्याधिः। ।

(ख) अथ त्वं मां कं मन्यसे?

32 रिक्तस्थानेषु अङ्कानां स्थाने संख्यावाचकपदानि लिखत- 1x3=3

(i) __5__ इन्द्रियाणि |

(ii) __2__ हस्तौ |

(iii) __4__ विद्वांसः |

33 (i) गुणैः परवशीभूताः व्यवर्धन्त सहस्रशः ।		1+1=2

(ii) हन्त ! प्रतिनिवर्तन्ते अस्माकं सैनिकाः । रेखाङ्कितपदयोः कः धातुः, कश्च लकारः ?

34 रेखाङ्कितपदयोः कः मूलशब्दः काच विभक्तिः ?		1+1=2

कः शत्रुर्दुर्जयः पुंसाम् ।

35 अधोलिखितयोः समस्तपदयोः विग्रहं लिखत -		1+1=2

(i) सुकलत्रः

(ii) बोधिद्रुमतले

36 रेखाङ्कितशब्दयोः उपसर्ग-प्रत्ययौ चित्वा पृथक् कुरुत-		1+1=2

(क) तपः किं लक्षणं प्रोक्तम्।

(ख) मातापित्रोः सेवा कर्त्तव्या ।

37 रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत-		1x3=3

(i) सिंहात्________ प्रकीर्तितम् । (एक)

(ii) सर्वतः सारमादघात्_______ इव षट्पदः । (पुष्प)

(iii) सर्वप्रथमं का_______ बहिः गता । (शरीर)

38 रिक्तस्थाने किं पदं भविष्यति ?		1+1=2

(i) अस्य योगदानं_____ वैज्ञानिकाः उपग्रह निर्मितवन्तः। (प्र + शंस् + शत्)

(ii) अनसूये! अलं _______ (रुद् + कत्वा)

खण्ड – ग

रचनाकौशलम्

39 अधोलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत -		1x5=5

संस्कृतभाषायां कथासाहित्यं तु महता प्रभाषेन दृश्यते । पञ्चतन्त्रं, हितोपदेशः, बृहत्कथा, सिंहासनद्वात्रिंशिका, कथासरित्सागरः इत्यादिषु रामायण महाभारत

पुराणादिषु च विस्तृत: कथाप्रवाह: दृश्यते। बौद्धधर्मे अपि जातककथादयः सुप्रसिद्धाः। लौकिक विषयम् अवलम्ब्य रचिता: जैन कथा: अपि अनेकाः सन्ति। नीति प्रवणता, आध्यात्मिकी प्रगति :, आत्मोन्नतिः इत्यादयः अंशाः एतासु कथासु प्राधान्यम् आवहन्ति। एतासु कथासु निबद्धा: श्लोकाः कथामाध्यमेन जीवन निर्माणस्य सन्देशं प्रयच्छन्ति। एष एव उपदेश: एतासां कथानाम् उद्देश्यम्।

प्रश्ना:

(1) विस्तृत: कथाप्रवाह: कस्मिन् महाकाव्ये दृश्यते ?

(2) जातककथाः कस्मिन् धर्मे सुप्रसिद्धाः?

(3) कथासु निबद्धा: श्लोका: कस्य सन्देशं प्रयच्छन्ति ?

(5) 'प्रभाषेन' इति पदस्य विशेषणं किम् ?

(5) 'संक्षिप्तः' इति पदस्य किम् विलोमपदमत्र प्रयुक्तम्?

40 अधोलिखितं विषयमधिकृत्य मञ्जूषापदसहायतया पञ्चवाक्येषु 5 एकमनुच्छेदं लिखत-

शरीरमाद्यं खलु ध र्मसाधनम्

मञ्जूषा

स्वास्थ्यं, शरीरस्य, आवश्यकम्, कार्यसम्पादनम्, जीवने सफलतायै, वरदानम्, दीर्घजीवनस्य कामना, स्वस्थं मनः, बु द्धिः, स्वस्थ: आत्मा जीवनम् आनन्दमयम्।

41 विद्यालयात् अवकाशार्थं प्रधानाचार्यप्रति अधोलिखितं पत्रं मञ्जूषातः उचितपदानि गृहीत्वा पूरयत- 1x5=5

सेवायाम्.
मान्याः प्रधानाचार्याः.
कुलाची-हंसराज-मॉडल- विद्यालयः
अशोक- विहारः, दिल्ली।

महोदयाः

सविनयं (1) .... इदम् अस्ति यत् (2) .... अहं ज्वरेण (3) ....अस्मि| ज्वर- कारणात् अहं (4) .... आगन्तुम् असमर्थः अस्मि । कृपया माम् (5) .... अवकाशं प्रदाय अनुग्रहणन्तु।

भवदीय: शिष्यः,

अनुज:

मञ्जूषा

दिनद्वयस्य, निवेदनम्, गतरात्रौ, पीडितः, विद्यालयम्

42 अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा पञ्च वाक्येषु वर्णनं कुरुत – 1X 5=5

मञ्जूषा

बालिकाः, शिक्षिका, व्यजनानि , वातानुकूलनयन्त्रम्, आसन्दाः, उत्पीठिका तिष्ठन्ति , ध्यानेन श्रृण्वन्ति , विद्युत्-फलकम् (स्मार्टबोर्ड), महापुरुषाणां चित्राणि , अग्निशमनयन्त्रम् , भित्तौ , कक्षा

SANSKRIT PAPER 2

संस्कृतम्

(209)

समय : होरात्रयम्]　　　　　　　　　　　　[पूर्णाङ्का: - 100

निर्देशा : (1) अस्मिन् प्रश्नपत्रे द्विचत्वारिंशत् प्रश्नाः ।

(2) प्रत्येकं प्रश्नस्य समक्षम् अङ्काः सूचिताः ।

(3) सर्वे प्रश्ना: अनिवार्याः ।

खण्ड – क

1 प्रेरणापाठानुसारं शिलाखण्डे के आसन् ?　　　　1x10=10

(A) महिलाः　　(B) बालकाः

(C) गर्ताः　　(D) तृणानि

2 प्राणादिषु कः श्रेष्ठः सिद्धः ?

(A)चक्षुः　　(B)मनः

(C) प्राणाः　　(D) श्रोत्रम्

3 एषः शुनः गुणः अस्ति ?

(A) अल्पभोजी　　(B) स्वल्पसन्तुष्टः

(C) सुन्द्रि :　　(D) स्वामिभक्तः

4 भूमेः गुरुतरा का अस्ति?

(A) माता　　(B) पिता

(C) गुरु　　(D) ईश्वरः

5 सुरक्षितं देवहतं ... .

(A) तिष्ठति (B) जीवति

(C) विनश्यति (D) प्रसीदति

6 जानासि ' इति क्रियापदस्य उत्तमपुरुषे किं रुपं भविष्यति ?

(A) जानामि (B) ज्ञातम्

(C) जानीमः (D) जानाति ।

7 एतत् पदम् अव्ययम् नास्ति?

(A) च (B) न

(C) वा (D) सः

8 वाचा' इति पदे का विभक्ति ?

(A) प्रथमा (B) द्वितीया

(C) तृतीया (D) चतुर्थी

9 आनन्दयति इति पदस्य बहुवचने किं भवति ?

(A) आनन्दयति (B) आनन्दयेते

(C) आनन्दयतः (D) आनन्दयन्ति

10 एषा सा दृश्यते सीता? इति सा शब्दे का विभक्ति?

(A) पंचमी (B) षष्ठी

(C) प्रथमा (D) सप्तमी

11 धर्मस्य किमपि लक्षणद्वयं लिखत ? 2

12 (i) क्षितेः किम् अन्वशिक्षम्?

(ii) षट्पदः पुष्पेभ्यः किम् गृह्णाति ? 1+1= 2

13 (i) तक्रं कस्य अन्ते पेयम्?

(ii) घटः किम् धारयति ? 1+1= 2

14 अधोलिखितं नाट्यांशं पठि त्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत – 1x3=3

(ततः प्रविशति सुमन्त्रेण सह रथारूढः चन्द्रके तुः)

चन्द्रकेतुः- आर्य! एका कि नं लवम् उद्दिश्य बहूनां युद्धारम्भः इति लज्जते मे हृदयम्।

सुमन्त्रः - वत्स! समस्तसैन्यदलम् अपि लवसमक्षं योद्धम् नालम्।

चन्द्रकेतुः- (सविस्मयम्) हन्त! प्रति निवर्तन्ते अस्माकं सैनिकाः। आर्य। त्वर्यताम्, त्वर्यताम्! अस्मद्रथं तत्रैव नयतु।

(i) चन्द्रकेतु: किमर्थं लज्जितः इव अनुभवति ?

(ii) चन्द्रकेतु : कं रथं युद्धस्थले नेतुम् आदिशीत ?

(iii) चन्द्रकेतोः सैनिकैः सह कस्य युद्धम् भवति ?

15 कस्यचिदेकस्य चरित्रचित्रणं पञ्चवाक्येषु संस्कृतेन कुरुत - 1x5=5

दौवारिकः अथवा चन्द्रकेतुः

16 प्रश्नान् उत्तरत - 1+1=2

(क) अभिवादिनशीलस्य कानि चत्वारि वर्धन्ते ?

(ख) मकरी किम् खादितुम् इच्छति ?

17 आकाशात् कः उच्चतरः ? वातात् च किं शीघ्रतरमम् ? 1+1=2

18 अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रशनान् उत्तरत – 1+1=2

क्रोधः सुदर्जयः शत्रुः लोभो व्याधिरनन्तकः

(i) लोभः कीदृशः शत्रुः वर्णितः ?

(ii) लोभः कीदृशः व्याधि ?

19 अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत – 1+1=2

असौ सुतनु! शैलेन्द्रः चित्रकूटः प्रकाशते।
अत्र मां कैकयीपुत्रः प्रसादयितुमागतः

(i) कैकयीपुत्रः कम् प्रसादयितुमागत?
(ii) 'शैलेन्द्रः चित्रकूट:' इत्यत्र किम् विशेषणपदम्?

20 अधोलिखितं पद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उतरत- 1x3=3

स्वस्ति पन्थानमनुचरेम सूर्या चन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददताऽदध्ना ज्यनता संगमेमहि ॥

(i) वयं कीदृशं पन्थानम् अनुचरेम ?
(ii) कौ सर्वदा सर्वेषां हितं कुरुतः ?
(iii) वयः कैः सहसंगति कुर्याम् ?

21 अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत- 1x3=3

आत्मवत् सर्वभूतानि पश्यतोऽस्य पदागुना : ।
गुणैः परवशीभूता व्यवर्धन्त सहत्रश ।।

अन्वय :

आत्मवत् ....1...... पश्यतः अस्य गुणै : ....2...... पदानुगाः सहत्रंश ..3... I

22 रेखाङ्कितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत – 1+1=2

(क) <u>चिन्ता</u> बहुतरी तृणात् ।
(ख) <u>रामस्य</u> पितुं ! राजधानी अयोध्या अस्ति ।

23 क: कं प्रति कथयति? 1+1=2

(क) को नु खल्वेष में वस्त्रे सज्जते|
(ख) परिरक्ष सम्यक् गरुडनीडानि|

24 मृजया रक्ष्यते रुपं , कुल वृत्तेन रक्ष्यते । 1+1=2

(i) रुपस्य रक्षा कया ?
(ii) कुलस्य रक्षा कथं भवति ?

25 अधोलिखित गद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत – 1x3=3

एकदा बोधिसत्त्व: स्वपुण्यप्रभावात् दानसंयमकरुणादिभि: गुणैरलङ्कृतः देवानामधिपः शक्र: अभवत्। तस्य प्रासादे राजलक्ष्मी: शशिन: प्रभेव अधिकम् अराजत। नानासुखभोगसमन्वि ताऽपि लक्ष्मीः तस्य हृदयं दर्पमलिनं नाकरोत्।

(क) लक्ष्मीः कस्य हृदयं दर्पमलिनं नाकरोत्?
(ख) कस्य प्रासादे राजलक्ष्मी: शशिन: प्रभेव अधिकम् अराजत?
(ग) देवानामधिपः क: अभवत्?

26 अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत- 1x3=3

आसीद् बंगदेशे बोपदेवः नाम कश्चिद बालकः। सः विद्यालये पाठ्य विषयाणाम् अवबोधने स्मरणे च नितांन्तम् आसीत्। असौ प्रायः चिन्तयति स्म यत् अन्ये छात्राः सर्वान् विषयान् शीघ्रं अवगच्छन्ति , लिखन्ति स्मरन्ति च किन्तु मन्दबुद्धिः अहं तान् न अवगच्छामि । किमर्थम् अहम् अत्र समयं वृथा नाशयामि ।

(i) बोपदेवः कस्मिन् देशे आसीत्?

(ii) के सर्वान् विषयान् शीघ्रं अवगच्छन्ति स्म?

(iii) मन्दबुद्धिः कः आसीत्?

27 कस्यचिदेकस्य पाठस्य सारांशं पञ्चवाक्येषु लिखत : 1x5=5

(i) प्रेरणा

(ii) प्राणस्य श्रेष्ठत्वम्

(iii) कर्त्तव्यनिष्ठा

खण्ड : - ख

व्याकरणम् अनुप्रयुक्त

28 अधोलिखितानां वर्णानाम् उच्चारणस्थानानि लिखत – 1/2x4=2

र, ब, श, क

29 रेखाङ्किकतपदेषु सन्धिच्छेदं कृत्वा नाम लिखत- 1+1=2

(i) पितेव आश्रमवासिनाम्

(ii) विराजते मुनिर्बुद्धो।

30 संधि कुरुत- 1x3=3

(i) यत्ते मध्यं पृथिवि ! यत् + च नभ्यम्।

(ii) माता भूमि: पुत्रः + अहं पृथिव्याः

(iii) किम् + नु हित्वा प्रियः भवति ।

31 रेखांकितपदयोः कौ मूलधातू क: च लकार: ? 1+1=2

(i) त्रीणि शिक्षेत गर्दभात्।

(ii) चत्वारि तस्य वर्धन्ते।

32 रिक्तस्थानेषु अङ्कानां स्थाने संख्यावाचकपदानि लिखत- 1x3=3

(i) <u>10</u> पुत्रसमो द्रुमः |

(ii) वृते <u>4</u> चटकाः उपविष्टाः |

(iii) सः <u>1</u> नेत्रेण पश्यति|

33 <u>माता</u> भूमिः पुत्रोऽहं <u>पृथिव्याः</u> इति रेखाङ्कितपदयोः कः मूलशब्दः का च विभक्तिः ? 1+1=2

34 रेखाङ्कितपदयोः कः धातुः कश्चलकारः ? 1+1=2

(i) <u>त्यज</u>जपमालां ।

(ii) सलीलमीशः <u>सृजति</u> भुवम् ।

35 अधोलिखितयोः समस्तपदयोः विग्रहं लिखत - 1+1=2

(i) सुकलत्रः

(ii) बोधिद्रुमतले

36 रेखाङ्कितशब्दयोः उपसर्ग-प्रत्ययौ चित्वा पृथक् कुरुत- 1+1=2

(i) आगच्छ <u>दुर्गाध्यक्ष</u> समीपे।

(ii) वयं <u>गिरिकन्दरेषु</u> विचरामः ।

37 रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत- 1x3=3

(क) माता ______ प्रति वदति। (पुत्र)
(ख) ______उभयतः वृक्षाः सन्ति। (विद्यालय)
(ग) त्वं______ सह क्रीडसि। (मित्र)

38 रिक्तस्थाने किं पदं भविष्यति ? 1+1=2

(i) नीडानि _____एव स करुणापरः तानि रक्षितुम् आदिशति। (दृश् + क्त्वा)

(ii) _______आपदां सघृण एव तु मध्यबुद्धिः । (प्र + आप् + ल्यप्)

खण्ड – ग

रचनाकौशलम्

39 अधोलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत –

हिमालय पर्वते अनेकानि दर्शनीय स्थानानि सन्ति । तत्र प्रतिवर्ष भक्ताः श्रद्धालवश्च गत्या बद्रीनाथ-केदारनाथादिषु मंदिरेषु भगवद्दर्शनं कुर्वन्ति । अद्यापि अनेकासु गुहासुमुनयः उषित्वातपः तपन्ति । अतः हिमालयस्य महत् गौरवं वर्तते। कस्य रक्षणे एव भारतस्य रक्षास्ति वयं प्रतिज्ञा कुर्मः यत् आवश्यकतायां सत्याम् अस्य रक्षा रं्थ प्राणान् अपि त्यक्ष्यामः।
प्रश्नाः

(1) अनेकानि दर्शनीयानि स्थानानि कस्मिन् पर्वते सन्ति ?
(2) भक्ताः कुत्र गत्वा भगवद्दर्शनं कुर्वन्ति?
(3) मुनयः कु त्र उषित्वा तपः कुर्वन्ति ?
(4) कस्य रक्षणे एव भारतस्य रक्षास्ति ?
(5) 'प्राणान्' इति शब्दे का विभक्ति : ?

40 अधोलिखितं विषयमधिकृत्य मञ्जूषापदसहायतया पञ्चवाक्येषु एकमनुच्छेदं लिखत- 5

उद्यमेनैव सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः

मञ्जूषा

उद्यमेन, छात्रः, उत्तीर्णः, आलस्यं, महारिपुः, भोजनं, मुखे, नैव, जनाः, महापुरुषाः, परिश्रमेण, सुव्यवस्थितं, जीवनं, समीपस्य, ईश्वरः, सहायकः अनुसन्धानानि , वैज्ञानिकानि , प्रगति :, संसार

41 भवान् दीपकः। भवतां मित्रं रमेश: अन्यस्मिन् नगरे वसति । तं प्रति नव वर्षस्यागमेशुभकामनाः मंजूषायां प्रदत्तैः शव्दैः रिक्तस्थाना नि पूरयित्वा प्रेषयतु।

द्वारकानगरम्
तिथि :-
प्रिय मित्र रमेश,
सप्रेम नमस्ते।
नववत्सरोऽयं तव (1) .... प्रतिदिनं सौख्यं (2) ....
समृद्धि (3) ....च पूरयेत्। गृहे (4) .... परिवारजनानां कृतेऽपि नववर्षस्य
(5) .... स्युः।

तव सुहृत्,
दीपकः

मञ्जूषा
सफलतां, पूरयेत्, जीवने, नवतां, सवेर्षां शुभकामनाः

42 अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा पञ्च वाक्येषु वर्णनं कुरुत – 1x5=5

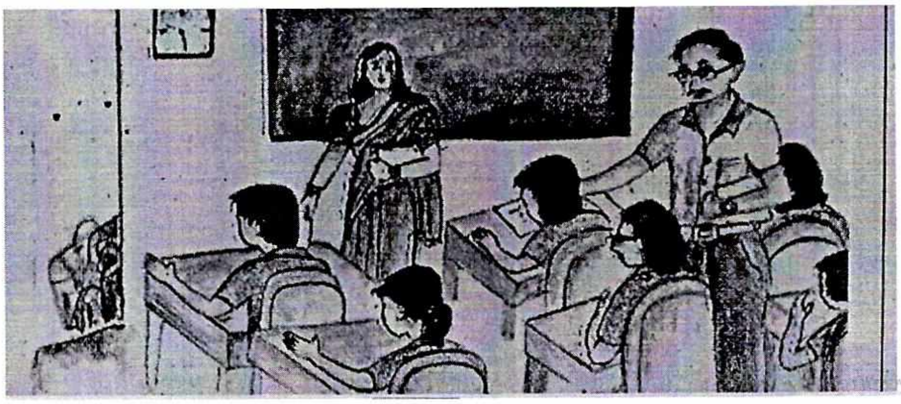

मञ्जूषा

परीक्षाभवनम्, दत्तचित्तछात्रा, निरीक्षकद्वयम्, उत्तरपुस्तिका वितरणम्, प्रश्नपत्राणां वितरणम्, भित्तौ घटिका, सार्धनववादनम्, बालकानां स्यूतादयः, कोष्ठात् बहि :

SANSKRIT PAPER 3

संस्कृतम्

(209)

समय :होरात्रयम्] [पूर्णाङ्का: -100

निर्देशा : (1) अस्मिन् प्रश्नपत्रे द्विचत्वारिंशत् प्रश्नाः ।

(2) प्रत्येकं प्रश्नस्य समक्षम् अङ्काः सूचिताः ।

(3) सर्वे प्रश्ना: अनिवार्याः ।

खण्ड – क

1x10=10

1.वायोः अधिकं गतिशीलम् किमस्ति ?

(A) मित्रम् (B) मुखम्

(C) मनः (D) सहिष्णुत्वम्

2.' स्नानेन बहवः रोगाः नश्यन्ति ' इत्यत्र ' बहवः ' इति पदे का विभक्तिः ?

(A) प्रथमा (B) द्वितीया

(C) पंचमी (D) षष्ठी

3.' विविधायुधैः सुसज्जितः महासत्त्वः ' इत्यत्र किं विशेषणपदम् ?

(A) विविधायुधैः (B) महासत्त्व

(C) सुसज्जितः (D) सज्जितः

4.' दौवारिकः प्रभुवर्यस्य आदेशं पालयति ' इत्यत्र रेखांकितपदे कः लकारः ?

(A) लङ् (B) लोट

(C) विधिलिङ् (D) लट्

5' वैदिकमन्त्रेपु सर्वमानवकल्याणभावना विद्यते ' इत्यत्र रेखांकितस्य बहुवचनं भविष्यति

(A) विद्येते (B) विद्यन्ते

(C) विद्यथे (D) विद्यध्वे

6.यक्षयुधिष्ठिरसंवादानुसारं किं हित्वा प्रियः भवति ?

(A) क्रोधम्. (B) कामम्

(C) मानम् (D) लोभम्

7.अस्मिन् पदे एव ' ल्यप् ' प्रत्ययः नास्ति

(A) संयम्य. (B) आगत्य

(C) शब्दापय (D) प्रविश्य

8.एतत् पदम् अव्ययम् नास्ति

(A) च (B) न

(C) सः (D) वा

9.' सदाचारः ' इति पाठे पण्डितबुद्धयः नराः कथं न व्यवहरन्ति ?

(A) नष्टं न शोचन्ति (B) आपत्सु न मुह्यन्ति

(C) वृत्तं यत्नेन रक्षन्ति (D) अप्राप्यं वाञ्छन्ति

10.गर्दभे एषः गुणः नास्ति

(A) सन्तोषः.   (B) भारवहनम्

(C) इन्द्रियसंयमः   (D) शीतोष्णसहनम्

11. तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते इति पाठः कस्मात् ग्रन्थात् संकलित : ? कश्च तस्य लेखकः ?   2

12 ततस्तीरे सबर्मत्या नाम्ना सत्याग्रहाश्रमः   1+1=2

महात्मा स्थापयामास सदनं सानुयात्रिकः ॥

i) सत्याग्रहाश्रमः कस्या नद्याः तीरे अस्ति ?

ii) सत्याग्रहाश्रम : . कः स्थापयासाम?

13 के शकुन्तलायाः सख्यौ ?   2

14 अधोलिखितम् नाट्यांश पठित्वा प्रदत्त प्रश्नान् उत्तरत -   1x3=3

दौवारिकः - (संन्यासिनो हस्तं धृत्वा) इतस्तावत् सत्यं कथय कस्त्वम् ? कुतः आयातः केन वा प्रेषितः ?

संन्यासी - (स्मित्वेव) अथ त्वं मां मन्यसे ?

दौवारिकः - कस्याप्यन्यस्य ना गूढचरं मन्ये ।

तदादेशं पालयिष्यामि प्रभुवर्धस्य ॥

संन्यासी - त्यज ! नाहं पुनरायास्यामि । दयस्व , दयस्व ।

प्रश्नाः –

i) दौवारिकः संन्यासिनम् कं मन्यते?

ii) संन्यासी दयायै कं प्रार्थयति ?

iii) मन्यसे इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम् ?

15 अधोलिखितयोः एकस्य . चरित्र चित्रण पंचवाक्येषु संस्कृतेन लिखत - 1x5=5

शकुन्तला **अथवा** कुशः

16 तस्मात्सखा त्वमसि यन्मम तत्त्वेव । 1+1=2

i) किं क्रियापदम् ?

ii) त्वम् इति सर्वनामपदम् कस्मै प्रयुक्तम् ?

17 आकाशात् कः उच्चतरः ? वातात् च किं शीघ्रतरम् ? 1+1=2

18 स्नानात् के लाभाः ? स्नानं कदा च करणीयम्? 1+1=2

19 तत्रास्तीशः कठिनां भूमिं यत्र हि कर्षति लांगलिकः इत्यत्र ईशः कुत्र तिष्ठति ? 1+1=2

20 जीवनम् सर्वप्राणिनाम् जलाशयसुनिर्भरम् । 1+1=2

संरक्ष्यं वर्धनीयं च जलम् रक्षति रक्षितम् ॥

(1) किमर्थ जलं रक्षणीयम् ?

(2)केषां जीवनं जलाशय सुनिर्भरम् ?

21 अधोलिखित शलोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत - 1x3=3

नाप्सु मूत्रं पुरीषं वा, ष्ठीवनम् वा समत्सृजेत् ।

अमेध्यालिप्तमन्यदा लोहितं वा विषाणि वा ॥

अन्वय –

मूत्रम् ____1______ वा ष्ठीवनम् लोहितम् _____2______ अमेध्यालिप्तम् अन्यत् वा ___3____ न समृत्सृजेत् ।

22 रेखांकित पदयोः प्रश्न निर्माण कुरुत - 1+1=2

(i). इयं स दृश्यते <u>गंगा</u> ।

(ii) <u>रामस्य</u> पितुः नामः दशरथः अस्ति ?

23 (i)प्राणानां श्रेष्ठता कथं सिध्यति ? 1+1=2

(ii)न वयं शिवगणास्तादृशां : ? इति अत्र " वयम् " सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम् ।

23 . अहो सत्यमभिहितं भवता । ममाप्यभीष्टमेतत् । तदन्यत्र गम्यताम् ' इति प्रत्युत्पन्नमतिः कं मत्स्यम् कथयति ? तौ मत्स्यौ केषां भयात् सरः त्यक्तुत्यक्तुमुद्यतौ? 1+1=2

24. तदहं न यास्यामि । भवद्भ्यां च यत्प्रतिभाति तत्कर्तव्यम् इति ' यद्भविष्यो विनश्यति ' पाठे यदभविष्य : किमर्थ सरः त्यक्तुं न इच्छति ? तस्य कः अन्तः भवति ? 1+1=2

25. अधोलिखितगद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत- 1x3=3

लीलावती भास्कराचार्यस्य पुत्री आसीत् । पुत्री शिक्षमाणः सः तस्याः कृते मनोविनोदयुक्त गणितं काव्यरूपेण अरचयत् । सः पशुपक्षिभ्रमरहंसादिमाध्यमेन गणितस्य जटिलप्रश्नान् अरचयत् तेषां समाधान चापि अकरोत् । अतोऽयं ग्रन्थः ' लीलावती ' इति नाम्ना प्रसिद्धः ।

प्रश्नाः (i) ' लीलावती ' इति पुस्तकं गद्ये अस्ति पद्ये वा ?

(ii) ' लीलावती ग्रन्थे ' इति कस्य विषयस्य प्रश्नाः सन्ति ?

(iii) गणितस्य प्रश्नाः कान् आधारीकृत्य निर्मिताः ?

26. भो मूर्ख ! न कोऽपि जीवः हृदयं विना जीवति । न वा तत् पृथक् कर्तुं शक्यते । अतः त्वं गच्छ पत्नी च प्रीणय- समाप्ता आवयोः मैत्री|

इति अंशः कस्मात् पाठात् संगृहीतः ?

अत्र कयोः मैत्री समाप्ता किञ्च तत्र कारणम्
आसीत्?

27. कस्यचित् एकस्य पाठस्य सारं पञ्चवाक्येषु लिखत- 1x5= 5

(i) कर्त्तव्यनिष्ठा

(ii) प्रेरणा

(iii) प्राणस्य श्रेष्ठत्वम्

खण्ड : - ख

अनुप्रयुक्त व्याकरणम्

28. अधोलिखितेषु मूर्धन्य वर्णौ चित्वा लिखतः - 1+1=2

क्, ऱ्, ह्, ड्, ट्, द्

29 रेखांकित पदेषु सन्धि कुरुत नामानि च लिखत - 1+1=2

कः शत्रुर्दुर्जय पुंसाम् कश्च व्याधिरनन्तकः ।

30 . सन्धि कुरुत - 1x3=3

i) प्र + उक्तम्

(ii) साधुः + असाधुः

(iii) दमः +च

31 मानं हित्वा प्रियो भवति, क्रोधम् हित्वा न शोचति इति । 1+1=2

रेखांकित पदयोः कः मूलशब्दः का च विभक्तिः ?

32 रिक्तस्थानेषु अंकानां स्थाने संख्यावाचक पदानि लिखत - 1x3=3

1) __2__ नेत्रे

2) __5__ गजाः

3) __9__ फलानि

33 कामं हित्वार्थवान् भवति , लोभं हित्वा सुखी भवेत् 1+1=2

रेखांकित पदयोः कः धातुः कश्च लकारः ?

34 मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । रेखांकित पदयोः कः मूलशब्द: का च विभक्ति ? 1+1=2

35 अधोलिखितेषु समस्तपदयोः विग्रहं लिखत - 1+1=2

1) अनन्तकः

2) निर्दयः

36 अधोलिखितेषु विग्रहाणां समस्तपदयोः लिखत - 1+1=2

i) शान्ति: प्रिया यस्य सः।

ii) दर्पात् मलिनम् ।

37 रिक्तस्थाने किं पदं भविष्यति ? 1+1=2

i) सर्वै सह (मिल् + क्त्वा) .... ।

ii) सर्वेषु प्राणिषु मैत्रीभावः धृ + तव्यत् .... ।

38 रिक्तस्थान पूर्ति कुरुत - 1+1=2

i) मा गृधः .... धनम् । (किं)

ii) इदं सर्वे .... ईशावास्यम् । (जगतः)

खण्ड – ग

रचनाकौशलम्

39 अधोलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत्. 1x5=5

जन्मभूमि: अस्मान् जननीवत् संरक्षति । अस्याः अन्नेन, जलेन, फलादीनां रसैश्च अस्माकं परिपालनं भवति कर्पासेन निर्मितैः वस्त्रैः अस्माकं शरीरं सुरक्षितं भवति । अस्मिन्नेव धरातले गृहाणि निर्माय वयं ससुखं वसामः । इयं जन्मभूमि: मातुरप्य धिकम् उपकरोति । एषा यावज्जीवं पालयति पोषयति च । भारतवर्षम् अस्माकं मातृभूमि: जन्मभूमिश्च । इयम् अस्माभि: अहर्निशं पूजनीया, रक्षणीया, वन्दनीया च अस्याः सौन्दर्यं तु अद्भुतम् एव । नदीभि: इयं सुजला । शस्यश्यामला च । देवताः अपि अस्याः गीतानि गायन्ति |

प्रश्नाः -

(1) अस्माकं शरीरं केन निर्मितैः वस्त्रैः सुरक्षितं भवति ?

(2) वयं कुत्र गृहाणां निर्माणं कुर्मः ?

(3) काः अस्याः गीतानि गायन्ति ?

(4) 'संरक्षति ' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम् ?

(5) 'इयम् अस्माभि: अहर्निशं पूजनीया' इति वाक्ये 'इयम्' सर्वनामपदं कस्यै प्रयुक्तम् ?

40. अधोलिखितविषयम् अधिकृत्य मञ्जूषापदसहायतया पञ्चवाक्येषु एकम् अनुच्छेदं लिखत्- 5

अनुशासन

मञ्जूषा
जीवनस्य विकासाय, समाजस्य, अस्माकं विद्यालयस्य, व्यवहारेषु, देशस्य, परिवारस्य, आत्मिक उन्नति , लोक कल्याणम्

41. भ्रातुः विवाह-अवसरे स्वमित्रस्य निमन्त्रणार्थम् अधोलिखितम् पत्र मञ्जूषायाः सहायतया पूरयत ।

1X5=5

गांधीनगरम्

दिल्ली।

दिनांकः

प्रि य मि त्र सक्षम!

सप्रेम नमो नमः।

अत्र कु शलं तत्र अस्तु। एतद् 1 .... भवान् अतीव प्रसन्नो 2.................. यत् मम ज्येष्ठ-भ्रातुः विवाहः अग्रिम-मासस्य पञ्चम्यां तिथौ निश्चितः। भवतः परिवारेण सह 3 .... अनिवार्या। गृहे माता-पित्रोः 4................ मम प्रणामः। भवतः 5....................प्रतीक्षायाम्।

भवदीयं मि त्रम्

सूर्यः

मञ्जूषा

भविष्यति , आगमनस्य, चरणयोः, उपस्थितिः , ज्ञात्वा

42.अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषापदसहायतया पञ्च वाक्यानि लिखत

1x5=5

मंजूषा
जंत्वागारः, सिंहदम्पती, सिंहशावकौ, बालकः बालिका, मात्रा सह, पित्रा सह, अवलोकयन्ति,
जलपात्रम्, भोजनपात्रम्

SANSKRIT PAPER 4

संस्कृतम्

(209)

समय : होरात्रयम्] **[पूर्णाङ्का: - 100**

निर्देशा : (1) अस्मिन् प्रश्नपत्रे द्विचत्वारिंशत् प्रश्नाः ।

(2) प्रत्येकं प्रश्नस्य समक्षम् अङ्काः सूचिताः ।

(3) सर्वे प्रश्ना: अनिवार्याः ।

खण्ड – क 1x10=10

1. एतत् धर्मस्य लक्षणं नास्ति?
   (A) धृतिः (B) मनः
   (C) धीः (D) शौचम्

2. रक्तमुखः वानरः___वसति स्म ।
   (A) कूपसमीपे (B) स्थले
   (C) जम्बुवृक्षे (D) तडागे

3. कुक्कुटे एषः गुणः नास्ति?
   (A) आपद्गतां स्त्रियं त्यजेत् (B) प्रातः उत्थानम्
   (C) बन्धुभिः सह भोजनम् (D)युद्धम्

4 शरीरायासजननं कर्म क: उच्यते?
   (A) व्यायाम: (B) स्वप्न:
   (C) अभ्यंग: (D) क्षय:

5 बोपदेवः किम ग्रन्थम् अरचयत् ?

(A) व्याकरणम् (B) मुग्धबोधव्याकरणम्

(D) बोधव्याकरणम् (D) बालबोधव्याकरणम्

6 खगालयाः कीदृशैः पक्षिशावकै: युक्ताः ?

(A) जातपक्षै: (B) चलनोन्मुखैः

(C) अजातपक्षैः (D) पक्षहीनैः

7 शूलपाणि : इति कः कथ्यते?

(A) विष्णुः (B) शिवः

(C) इन्द्रः (D) सूर्य:

8 क: पुरुष: जीवने सम्मानं प्राप्नो ति ?

(A) शत्रु: (B) दुश्चिरत्र

(C) लालसायुक्त जन: (D) कर्तव्यनिष्ट:

9 सर्वप्रथमं का शरीरात् ब हि : गता?

(A) चक्षु: (B) वाक्

(C) मन: (D) श्रोत्र:

10 दिनस्य अन्ते रात्रौ किम् पिबेत्?

(A) जलम् (B) दुग्धम्

(C) नारिकेलजलम् (D) तक्रम

11 अभिवादनशीलस्य कानि चत्वारि वर्धन्ते? 1+1= 2

12 वानरस्य चत्वारि विशेषणपदानि लिखत। 1+1= 2

13 (i) कौ मत्स्यौ सुखम् एधेते?

(ii) कस्य नाश: भवति ? 1+1= 2

14 अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत – 1x3=3

कण्व: कोकिलास्वरेण वृक्षैः अनुमति : प्रदत्ता |

शकुन्तला : आश्रमपदं प रि त्यजन्त्याः मे चरणौ दुःखेन पुरतः प्रवर्तते।

प्रियवंदा : न केवलं तपोवन विरहकातरा सखी एव। त्वया उपस्थित वियोगस्य

तपोवनस्य अपितावत् समवस्था दृश्यते।

प्रश्नाः

(क) कोकिल स्वरेण कैः अनुमतिः प्रदत्ता ?

(ख) शकुन्तला प्रस्थान समये तपोवन वनस्पतयः कीदृशाः अभवन्?

(ग) 'प्रवर्तते' इति शब्दे कः लकारः ?

15 कस्यचिदेकस्य चरित्रचित्रणं पञ्चवाक्येषु संस्कृतेन कुरुत - 1x5=5

चन्द्रकेतुः **अथवा** शकुन्तला

16 प्रश्नान् उत्तरत - 1+1=2

(क) अस्माकम् समानाः एव के जिघ्रन्ति ?

(ख) दशकूपसमा का अस्ति ?

17 (क) बोधिसत्त्वः कीदृशैः गुणैः विभूषितः शक्रः अभवत् ? 1+1=2

(ख) शान्तिप्रियः शक्रः किमर्थ युद्धाय तत्परः अभवत्?

18 अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रशनान् उत्तरत – 1+1=2

निर्ममो नित्यसत्त्वस्थो मिताशी सुस्मिताननः।
सुकलत्रः शिशुप्रेमीभि तेवाश्रमवासिनाम्।।

(1) सुकलत्र कः आसीत् ?

(2) आश्रमवासिनाम् कः पिता इव आसीत्?

19 अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत – 1+1=2

ईशस्तिष्ठति वर्षातपयोस्ताभ्यां सार्ध मलिनवपुः
दूरे क्षिप तव शुद्धां शाटीमे हि स इव पांसुरभू मिम् ।।

(क) ईशः कीदृश वपुः अस्ति ?

(ख) सः काभ्यां सार्ध तिष्ठति ?

20 अधोलिखितं पद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उतरत- 1X3=3

दशकूपसमा वापी दशवापीसमो ह्रदः।
दशह्रदसमः पुत्रः दशपुत्रसमो द्रुमः।।

xxx

(i) कः दशकूपः समः अस्ति ?

(ii) द्रुमः कति पुत्रसमः अस्ति ?

(iii) दशह्रद समो कः अस्ति ?

21 अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत- 1x3=3

सार्थ: प्रवसतो मित्रं भार्या मित्रं गृहे सतः।।

आतुरस्य भिषङ् मित्रं दानं मित्रं मरिष्यतः ॥

अन्वयः-

प्रवसतः __1__ मित्रम्, गृहे सतः मित्रम् __2__, आतुरस्य मित्रम् भिषक्, मरिष्यतः च मित्रम् __3__ ।

22 रेखाङ्किकतपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत – 1+1=2

(क) ते श्वः प्रभाते <u>मत्स्यसंक्षयं</u> करिष्यन्ति ।

(ख) <u>भवता</u> सत्यम् अभिहितम्।

23 क: कं प्रति कथयति? 1+1=2

(क) सत्यमैक्ष्वाक: खल्वसि ।

(ख) एकस्तावदयं: वीरपुरुष: पूजितो भवति|

24 सत्यमेवेश्वरो लोके सत्ये धर्मः सदाश्रितः । 1+1=2

सत्यमूलानि सर्वाणि सत्यान्नास्ति परं पदम् ||

(i) धर्म: सदा कुत्र आश्रित: ?

(ii) सत्यात् परं किम् नास्ति ?

25 अधोलिखित गद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत – 1x3=3

ततः बालक: बोपदेवः प्रसन्नेन मनसा विद्यालयम् आगच्छति अवहितेन मनसा पाठं पठति , लिखति स्मरति च। छात्रैः सह चर्चामपि करोति । क्रमश तस्य बुद्धिः विकासं प्राप्नोति | अध्यापकाः तस्मिन् स्नेहम् अकुर्वन् छात्राः च तस्य सम्मानम् अकुर्वन्। कालान्तरे सः महान् विद्वान् अभवत् बालानां सुखबोधाय च मुग्ध-बोधव्याकरणम् अरचयत् ।

(i) क: प्रसन्नेन मनसा विद्यालयम् आगच्छति ?

(ii) कस्य बुद्धि: विकासं प्राप्नोति ?
(iii) मुग्ध-बोधव्याकरणम् क: अरचयत्?

26 अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत- 1x3=3

दौवारिकः- हहो! कपटसन्यासिन्! कथं विश्वासघात स्वामिवञ्चनं च शिक्षामा हे के चनान्ये भवन्ति ये उत्कोचलोभेन स्वामिनं वञ्चयित्वा तमसि पातयन्ति । न वयं शिवगणास्तादृशा:।
(संन्यासिनो हस्त धृत्वा) इतस्तावत् सत्य कथव आयात:? केन वा प्रेषित:?
संन्यासीः (स्मित्वेव) अथ त्वं क मन्यसे?
दौवारिकः कस्याप्यन्यस्य वा गूढचरं मन्ये। तदादेशं पालयिष्यामि प्रभुत्र्यस्या आगच दुगाध्यक्षसमोपेर् , स एवा भिज्ञाय त्वया सह यथो चि त व्यवहारष्यात।
संन्यासीः त्यज! नाहं पुनरायास्यामि । दयस्व, दयस्व!
प्रश्ना: (i) संन्यासी कम् उत्कोचं दातुम् इच्छति ?
(ii) दौवारिकः कस्य आदेश पालयति ?
(iii) दौवारिकः कम् दुगाध्यक्षसमीपे नेतुम् इच्छति ?

27 कस्यचिदेकस्य पाठस्य सारांशं पञ्चवाक्येषु लिखत : 1x5=5

(i) प्रेरणा
(ii) त्याज्यं न धैर्यम्
(iii) कर्त्तव्यनिष्ठा

खण्ड :- ख

अनुप्रयुक्त व्याकरणम्

28 अधोलिखितानां वर्णानाम् उच्चारणस्थानानि लिखत – 1/2x4=2

ष्, ह्, स्, म्

29 रेखाङ्कितपदेषु सन्धिच्छेदं कृत्वा नाम लिखत- 1+1=2

(i) अत्रागत्य
(ii) अस्माभिरन्वेषितः

30 संधि कुरुत- 1x3=3

(i) ससंतोषः + तथा
(ii) प्रात: + उत्थानम
(iii) सर्व + इन्द्रियाणि

31 रेखांकितपदयोः कौ मूलधातू क: च लकार: ? 1+1=2

(i) अरक्षितं तिष्ठति ।
(ii) मत्स्य संक्षयं करिष्याम:।

32 रिक्तस्थानेषु अङ्कानां स्थाने संख्यावाचकपदानि लिखत- 1x3=3

(i) _10_ बालिका: ।
(ii) _2_ चटके ।
(iii) _3_ पचिका: ।

33 आतुरस्य च किम् मित्रं इति रेखाङ्कितपदयोः कः मूलशब्दः का च विभक्तिः ?
1+1=2

34 रेखाङ्कितपदयोः कः धातुः कश्चलकारः ? 1+1=2

(i) सः विद्यालयम् आगच्छति|
(ii) सन्तापम् हरति |

35 अधोलिखितयोः समस्तपदयोः विग्रहं लिखत - 1+1=2

(i) अहिंसा
(ii) दैत्यराजेन

36 रेखाङ्कितशब्दयोः उपसर्ग-प्रत्ययौ चित्वा पृथक् कुरुत- 1+1=2

(i) प्रेषितः
(ii) प्रसादयितुम ।

37 रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत- 1x3=3

(क) ______गंगा प्रभवति। (हिमालय)
(ख) सः_______खल्वाटः । (शिरम्)
(ग) हरिः_______ अधिवसति। (वैकुण्ठ)

38 रिक्तस्थाने किं पदं भविष्यति ? 1+1=2

(i) शुद्धानि वस्त्राणि ______पांसुरभूमिम् । (त्यज् + क्त्वा)
(ii)अहम् भोजनं ________विद्यालयं गच्छामि। (कृ + कत्वा)

खण्ड – ग

रचनाकौशलम्

39 अधोलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत – 1X5=5

दीपावलीपर्व भारतीयानाम् प्रमुखं पर्व विद्येत। अस्मिन् दिवसे श्रीरामः पितुः आज्ञा पालयन् चतुर्दशवर्षाणि वने उषित्वा रावणं हत्वा, स्वपत्नीं सीतां च विमोच्य अयोध्यानगरी परावृत्तः आसीत् । तस्मादेव कालात् भारतीयाः प्रति वर्ष कार्तिक अमावास्यायां स्वगृहेषु दीपान् प्रज्वालयन्ति । अस्मिन्नेव दिवसे रात्रौ महालक्ष्मीपूजनं क्रियते । अस्मात् पर्वणः पूर्वं जनाः स्वगृहाणां शुद्धिं कुर्वन्ति , गृहाणि च सज्जयन्ति ।

प्रश्ना :

(1) दीपावल्यां रात्रौ किम् क्रियते ?

(2) दीपावली केषां प्रमुखं पर्व अस्ति ?

(3) दीपावली कस्मिन् दिने भवति ?

(4) 'पर्वणः' इति पदे कवि भक्तिः ?

(5) 'स्वपत्नी सीता' अनयोः पदयों विशेषणपदं किम् ?

40 अधोलिखितं विषयमधिकृत्य मञ्जूषापदसहायतया पञ्चवाक्येषु एकमनुच्छेदं लिखत-
5

"स्वच्छता अभियानम्"

मञ्जूषा

स्वास्थ्याय, आवश्यकं , भवेत्, स्वच्छता, वातावरणं शरीरस्य, परिसरस्य, अभियानं. सर्वे मिलिता, स्वस्थंमनः, आत्मा, सुखमयं, आनंददायकं रोग निवारकम

41 भवान् सुरेशः, छात्रावासे निवसति । आगरास्थं ताजभवनं द्रष्टुं 1X5=5
शैक्षिकभ्रमणाय गन्तुं भवान् इच्छति । तदर्थं धन प्रेषणाय पितरं प्रति लिखितं पत्रं मंजूषायां प्रदत्तैः शब्दैः रिक्तस्थानानि पूरयत-

विद्यालय छात्रावास:
प्रयागनगरम्
परमादरणीयाः पितृमहोदयाः,
सादरं प्रणामा मि ।
सविनयं (i).................यत् मम अ र्द्धवार्षिकी परीक्षा समाप्ताजाता। मम परीक्षा
(ii)........................अग्रिमे अवकाशे अहं गृहं न (iii)................... । तत्र कारणम् अ स्ति
यत् वि द्यालयेन एकस्य (iv)....................आयोजनं कृ तम् । एषा यात्रा आगरास्थ
ताजभवनं द्रष्टुम् आयो जि ता व र्तते । अतः तत्र व्यया र्थपंचशतं (v).................. भवन्तः
प्रेषयन्तु । सवेभ्र्यः मम प्रणामाः।
भवतां प्रि य पुत्रः
सुरेशः

मञ्जूषा
शोभना, निवेदनम्, आगमिष्यामि , शैक्षिकभ्रमणस्य, रुप्यकाणि , प्रणामाः

42 अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा पञ्च वाक्येषु वर्णनं कुरुत – 1x5=5

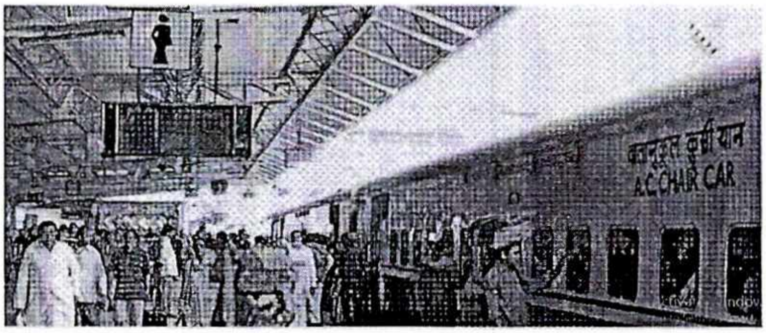

मञ्जूषा

रेलयानम्, रेलस्थानकम्, यात्रिणः, आरोहन्ति , अवरोहन्ति , भारवाहका, नयन्ति , भारम्।

SANSKRIT PAPER 5

संस्कृतम्

(209)

समय : होरात्रयम्] **[पूर्णाङ्का: - 100**

निर्देशा : (1) अस्मिन् प्रश्नपत्रे द्विचत्वारिंशत् प्रश्नाः।

(2) प्रत्येकं प्रश्नस्य समक्षम् अङ्काः सूचिताः।

(3) सर्वे प्रश्ना: अनिवार्याः।

खण्ड – क

1. वयं कस्याः पुत्राः ? 1x10=10

(A) पृथिव्या: (B) आकाशः
(C) पाताल : D) सर्वः

2. कीर्तिः केन प्राप्यते ?

(A) भूमिदानेन (B) यज्ञदानेन
(C) धन दानेन (D) सर्वस्व दानेन

3. जीवनं ..... जलाशय सुनिर्भरम् ।

(A) अल्पजनानां (B) सर्व प्राणिनां
(C) मादकानां (D) पादपानां

4 दया कः याचते ?

(A) संन्यासी (B) दौवारिकः
(C) शिववीर : (D) सर्वे

5 कः पुरुषः जीवने सम्मानं प्राप्नोति ?

(A) शत्रुः (B) दुश्चरित्रः

(C) कर्तव्यनिष्ठ (D) लालसा युक्त जन :

6 वयं रसायन तत्वं विद्धः ?

(A) कार्य कुर्मः (B) जानीमः

(C) वन्दनं कुर्मः (D) लेखनं कुर्मः

7 तुभ्यम् इति शब्दः कः विभक्ति ?

(A) द्वितीया विभक्ति (B) चतुर्थी विभक्ति

(C) चतुर्थी विभक्ति (D) सप्तमी विभक्ति

8 ईशम् कथं भुवं सृजति ?

(A) स्व लीलया (B) मलिनवपुः

(C) कठिनाम् (D) धूसरितं

9 जीवनः कः महत्वपूर्णः अस्ति ?

(A) श्रमः (B) धनः

(C) तृष्णा (D) दर्पः

10 भोजन मध्ये .... वारि।

(A) अमृतं (B) विषं

(C) तक्रं (D) पयः

11 सात्विकेभ्यः पुरुषेभ्यः कीदृशः आहारः रोचते ? 1+1= 2

12 अस्माभिः कीदृशं भोजनं कर्त्तव्यम् ? 1+1= 2

13 (i) चन्द्रकेतुः कस्य कृते दर्पनिकषः अस्ति ? 1+1= 2

(ii) लोहितं छीवनं वा कुत्र न समुत्सृजेत्?

14 अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत – 1x3=3

चन्द्रकेतुः- भो भो राजानः! असंख्यातैः द्विरद-तुरग-स्यन्दनस्थैः भवद्भिः कवचावृत्तैः एक स्मि न् पदातौ युगपत् यत् युद्धं प्रारब्धं तद्वः धिग् अस्मान् च धिक् ।

लवः- (सोन्माथम्) आः कथम् अनुकम्पते नाम? (ससम्भ्रमं वि चि न्त्य) भवतु जृम्भकास्त्रेण तावत् सैन्यानिसंस्तम्भयामि । (इति नाट्येन मुञ्चति)

सुमन्त्रः- अये! किमिदानीम् सैन्यघोषाः प्रशान्ताः! वत्स! मन्ये कु मारेण जृम्भकास्त्रं प्रयुक्तमिति ।

चन्द्रकेतुः- अत्र कः सन्देहः! पश्यतु सैन्यम् चित्र लिखितमि व अस्पन्दम् आस्ते। अतोऽजितवी र्य जृम्भकास्त्रमेवेदम्॥।

सुमन्त्रः- कुतः पुनरस्य जृम्भकस्य प्राप्तिः?

चन्द्रकेतुः- भगवतः प्राचेतसादिति मन्यामहे।

(i) जृम्भकास्त्र केन प्रयुक्तम् ?

(ii) सैन्यम् किम् इव अस्पन्दम् आसीत् ?

(iii) कुत्र सन्देहः नास्ति ?

15 कस्यचिदेकस्य चरित्रचित्रणं पञ्चवाक्येषु संस्कृतेन कुरुत - 1x5=5

लवः **अथवा** दौवारिकः

16 जम्बुवृक्षस्य द्वे विशेषणे लिखत। 2

17 (क) दशरथस्य राजधानी का आसीत्? 1+1=2

(ख) कस्मिन् पर्वते रामः सुग्रीवेण सह अमिलत्?

18 अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रशनान् उत्तरत – 1+1=2

एषा गोदावरी रम्या , प्रसन्नसलिला शुभा।
अगस्त्यस्याश्रमश्चैव, दृश्यते कदलीवृतः ।।

(i) प्रसन्नसलिला का आसीत्?

(ii) अगस्त्यस्य आश्रमः कीदृशैः वृक्षैः वृतः आसीत्?

19 अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत – 1+1=2

किमिच्छन्ति नराः काश्यां भूपानां को रणे हितः।
को वन्द्यः सर्वदेवानां दीयतामेकमुत्तरम्।॥

(i) जना: काश्यां किमिच्छन्ति ?

(ii) युद्धे राज्ञां हितकरं किम् ?

20 अधोलिखितं पद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उतरत- 1X3=3

क्रोधः सुदुर्जयः शत्रुर्लोभो व्याधिरनन्तकः।
सर्वभूतहितः साधुरसाधु निर्दयः स्मृतः। ॥

(i) अनन्तक: व्याधि : क: अस्ति ?

(ii) साधु: कीदृश: भवति ?

(iii) 'स्मृतः' इति शब्दे क: प्रत्यय: ?

21 अधोलिखित श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानि पूरयत- 1x3=3

किंस्वद् गुरुतरं भूमेः किंस्वदुच्चतरं च खात्।
किस्विच्छीघ्रतरं वायोः किंस्वद् बहुतरं तृणात्।।

अन्वयः-

भूमेः गुरुतरम् किंस्वद्, <u>1</u> च उच्चतरम् किंस्वद्, <u>2</u> शीघ्रतरम् किस्वित्, किंस्वद् (च) <u>3</u> बहुतरम् (अ स्ति) ।

22 रेखाङ्कितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत – 1+1=2

(क) **<u>ग्रहाणां</u>** स्वप्रकाशता नास्ति |

(ख) सः **<u>गणितस्य</u>** जटिलप्रश्नान् स्पष्टीकृतवान्।

23 क: कं प्रति कथयति? 1+1=2

(क) परिरक्ष सम्यक् गरुडनीडानि।

(ख) निवर्तस्व तावत् ।

24 किमिच्छन्ति नराः काश्यां भूपानां को रणे हितः। 1+1=2
को वन्द्यः सर्वदेवानां दीयतामेकमुत्तरम्।॥

(i) जना: काश्यां किमिच्छन्ति ?

(ii) युद्धे राज्ञां हितकरं किम् ?

25 अधोलिखित गद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत – 1x3=3

आसीत् समुद्रसमीपे वि शाल: फलैः पूरितः जम्बुवृक्षः। तस्मिन् वृक्षे बलिष्ठो रक्तमुखनामकः वानरः वसति स्म। एकदा करालमुखः नामको मकर: वानरम् अपश्यत् अचिन्तयत् च यत् अयं वृक्षवासी स्वस्थ: चञ्चल: निर्भीक : इव प्रतिभाति । अयं मम सहचरो भवतु इति मत्वा प्रतिदिनं सस्नेहं वार्ता करोति । वानरः अपि कथयति यत् भवान् मम अतिथि :। भक्षयतु मधुराणि जम्बुफलानि|

प्रश्नाः

(क) समुद्रतीरे फलै: पूरित: क: वृक्ष: आसीत्?

(ख) भवान् मम अतिथि : इति क: कथयति ?

(ग) रक्तमुखनामक: वानरः <u>वसति</u> स्म इत्यत्र रेखांकितपदे क: लकार:?

26 अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत- 1x3=3

एतत् श्रुत्वा प्रथमं वाक् शरीरात् निर्गता। सा वर्ष यावत् प्रोष्य प्रत्यागता अपृच्छत् - कथं भवखि : मया विना जीवितम्?' प्राणादयः अवदन् यथा मूकाः वाचा अवदतः अपि , प्राणेन श्वसन्तः, चक्षुषा पश्यन्तः, श्रोत्रेण शृण्वन्तः, मनसा ध्यायन्तः जीवन्ति , एवं वयम् अपि अजीवाम।' प्राविशत् हे वाक् ।

प्रश्नाः- 1) सर्वप्रथमं का शरीरात् बहि : गता?

2) प्राणादयः किम् अवदन्?

27 कस्यचिदेकस्य पाठस्य सारांशं पञ्चवाक्येषु लिखत : 1x5=5

(i) प्रेरणा
(ii) त्याज्यं न धैर्यम्
(iii) कर्त्तव्यनिष्ठा

खण्ड : - ख
अनुप्रयुक्त व्याकरणम्

28 अधोलिखितानां वर्णानाम् ओष्ठवर्णौ चिनुत- 1+1=2

क्, प्, द्, ब्

29 रेखाङ्कितपदेषु सन्धिच्छेदं कृत्वा नाम लिखत- 1+1=2

(i) तदाकर्ण्य

(ii) अशक्तैर्बलिनः

30 संधि कुरुत- 1x3=3

(i) शीत + उष्णम

(ii) संन्यासिन: + अपि

(iii) अद्य + अवधि

31 रेखांकितपदयोः कौ मूलधातू क: च लकार: ? 1+1=2

(i) पादपा: जिघ्रन्ति|

(ii) सर्वभूतहित: साधु: कथ्यते|

32 रिक्तस्थानेषु अङ्कानां स्थाने संख्यावाचकपदानि लिखत- 1x3=3

(i) 4 बालका: |

(ii) 5 घटा: |

(iii) 9 कूपा: |

33 दानं मरिष्यत: मित्रं इति रेखाङ्कितपदयोः क: मूलशब्दः का च विभक्तिः ? 1+1=2

34 रेखाङ्कितपदयोः कः धातुः कश्चलकारः ? 1+1=2

(i) देवानांधिप: शक्र: अभवत् |

(ii) शरीरं निर्मलं <u>भवति</u> |

35 अधोलिखितयोः समस्तपदयोः विग्रहं लिखत - 1+1=2

(i) प्रजारक्षणाय

(ii) शिवगणा:

36 रेखाङ्कितशब्दयोः उपसर्ग-प्रत्ययौ चित्वा पृथक् कुरुत- 1+1=2

(i) <u>करणीय</u>

(ii) <u>मधुरा</u>

37 रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत- 1x3=3

(क) _______ तापस:। (जटा)

(ख) _______उभयतः वृक्षाः सन्ति। (सरोवर)

(ग) कृष्ण:_______ सह नृत्यं करोति। (राधा)

38 रिक्तस्थाने किं पदं भविष्यति ? 1+1=2

(i) अहम् विद्यालयं ______ (आगच्छति+ क्तवतु)

(ii) राम: भोजनं _______ इच्छति। (कृ + तुमुन्)

खण्ड – ग

रचनाकौशलम्

39 अधोलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत – 1X5=5

मिथिलायां विद्यापति नामकः महान् कवि: बभूव। स: संस्कृतस्य मैथिलीभाषायाश्च महाकवि: आसीत्। अवहट्ठ भाषायाम् अपितेन रचनाः कृताः। स: राज्ञः शिविसंहस्य मित्रम् आसीत्। नृपस्य राजसभायां सः राजकवि : आसीत्। विद्यापति : महान् शिवभक्त: आसीत्। कथ्यते यत् महादेव: तस्य भक्त्या प्रसन्नो भूत्वा तस्मैबदु वरान् अयच्छत्।

प्रश्ना :

(1) विद्यापति : कस्याः भाषायाः कवि: आसीत् ?

(2) स: कस्य नृपस्य मित्रम् आसीत् ?

(3) विद्यापति : कस्य भक्तः आसीत् ?

(4) विद्यापतये क: वरान् अयच्छत् ?

(5)'रुष्ट:' इ ति पदस्य िकं वि लोमपदमत्र प्रयुक्तम्?

40 अधोलिखितं विषयमधिकृत्य मञ्जूषापदसहायतया पञ्चवाक्येषु एकमनुच्छेदं लिखत- 5

'वसुधैव कुटुम्बकम'

मञ्जूषा

उदारचरितानां, सम्पूर्णजगत्, परिवार:, लघुचेतसां, मम, तव इति गणना, आत्मवत्, सर्वान् मनुष्यान्, परहिते निरता:, धारयन्ति , जीवनम्, वयं सवेर्, पुत्र:, एकस्य, परमात्मन:, देवा:, दानवा: ।

41 भवान् राके शः छात्रावासे जयपुर विद्यापीठे वसति । भवतः विद्यालये संस्कृत दिवसे मालविका-अग्निमित्रम् इति संस्कृतनाटकस्य मञ्चनं भविष्यति । तत्र भवान् अपि अभिनयं करिष्यति स्वपितृमहोदयान् प्रति तं प्रेक्षितुं निमन्त्रणपत्रं, मंजूषायाम् प्रदत्तैः शब्दैः रिक्तस्थानानि पूरयित्वा लिखतु। 1X5=5

जयपुर विद्यापीठ छात्रावासः
तिथि :
परमादरणीयाः पितृमहोदया

सादरं नमामि ।
अद्य अहं सादरं (1) .... यत् विद्यालये आगामि (2) ....संस्कृत दिवसस्य आयोजनं भविष्यति । तत्र (3) .... नाम नाटकं प्रस्तूयते । एतास्मिन् (4) .... अहमपि अभिनयं (5)............... भवान् मात्रा सह आगत्य अवश्यमेव पश्यन्तु ।
भवतां प्रियः पुत्रः
राके शः

मञ्जूषा
मालविकाग्निमित्रम्, निवेदयामि ,अवसरे, मासे, करिष्यामि , दिवसस्य

42 अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा पञ्च वाक्येषु वर्णनं कुरुत – 1x5=5

मञ्जूषा

षष्ठी पूजनस्य, अवसरः, वृक्षस्य अधः, जनाः, बालकाः, महिलाः, स्नानं, जलमध्ये, स्थिताः, केचन, पूजां ,कुर्वन्ति , जले जनानां, छाया, पवित्रं जलं, स्वच्छम्